**Uncorrected – Not for Publication** **LSS-D-II**

सत्यमेव जयते

# LOK SABHA DEBATES

## (Part II - Proceedings other than Question and Answers)

***The House met at Eleven of the Clock***

**Saturday, February 10, 2024 / Magha 21, 1945 (Saka)**

## HON'BLE SPEAKER

**Shri Om Birla**

## PANEL OF CHAIRPERSONS

Shrimati Rama Devi

Dr. Kirit P. Solanki

Shri Rajendra Agrawal

Shri Kodikunnil Suresh

Shri A. Raja

Shri P.V. Midhun Reddy

Shri Bhartruhari Mahtab

Shri N.K. Premachandran

Dr. Kakoli Ghosh Dastidar

Shri Shrirang Appa Barne

# LOK SABHA DEBATES

**(NO QUESTION HOURS: PART – I NOT ISSUED)**

**PART II – PROCEEDINGS OTHER THAN QUESTION AND ANSWERS**

***Saturday, February 10, 2024 / Magha 21, 1945 (Saka)***

**C ON T E N T S** **P A G E S**


| | |
|---|---|
| **PAPERS LAID ON THE TABLE** | **1** |
| **MESSAGES FROM RAJYA SABHA** | **2** |
| **…** | **3** |
| **DISCUSSION RE: CONSTRUCTION OF HISTORIC SHRI RAM TEMPLE AND PRAN PRATISHTHA OF SHRI RAMLALA** | **4 - 90** |
| **Dr. Satya Pal Singh** | **4 - 9** |
| **Shri Gaurav Gogoi** | **10 - 15** |
| **Sadhvi Niranjan Jyoti** | **16 - 21** |
| **Shri Maddila Gurumoorthy** | **22 - 23** |
| **Shri Ramprit Mandal** | **24 - 25** |
| **Shri Pratap Chandra Sarangi** | **26 - 33** |
| **Dr. Shrikant Eknath Shinde** | **34 - 38** |
| **Shri Malook Nagar** | **39 - 40** |
| **Shri Hans Raj Hans** | **41 - 42** |
| **Shri Arvind Sawant** | **43 - 44** |
| **Dr. Amol Ramsing Kolhe** | **45 - 47** |
| **Shri Sunil Kumar Pintu** | **48** |
| **Shri Rahul Ramesh Shewale** | **49 - 50** |

| | |
|---|---|
| **Dr. Umesh G. Jadav** | **51 - 54** |
| **Shri Ram Mohan Mohan Naidu Kinjarapu** | **55 - 57** |
| **Shri Asaduddin Owaisi** | **58 - 64** |
| **Shri Amit Shah** | **65 - 73** |
| **Shri B.B. Patil** | **74** |
| **Shri Naba Kumar Sarania** | **75** |
| **Shri Dhairyasheel Sambhajirao Mane** | **76 - 77** |
| **Shri Girish Chandra** | **78** |
| **Shri Anubhav Mohanty** | **79 - 80** |
| **Shrimati Navneet Ravi Rana** | **81 - 82** |
| **Shrimati Sangeeta Azad** | **83** |
| **Shrimati Anupriya Patel** | **84 - 85** |
| **Shri Mohan Mandavi** | **86 - 88** |
| **ADDRESS BY THE HON. SPEAKER ON CONSTRUCTION OF SHRI RAM TEMPLE IN AYODHYA** | **89 - 90** |
| **VALEDICTORY REFERENCES** | **91 - 125** |


**xxxx**

(1100/SK/SM)

1100 बजे

(माननीय अध्यक्ष पीठासीन हुए)

… (व्यवधान)

**सभा पटल पर रखे गए पत्र**

1101 बजे

**माननीय अध्यक्ष :** अब पत्र सभा पटल पर रखे जाएंगे।

आइटम नम्बर 1, श्री राव इंद्रजीत सिंह जी

THE MINISTER OF STATE OF THE MINISTRY OF STATISTICS AND PROGRAMME IMPLEMENTATION, MINISTER OF STATE OF THE MINISTRY OF PLANNING AND MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF CORPORATE AFFAIRS (RAO INDERJIT SINGH): Sir, I beg to lay on the Table:-

(1) (i) A copy of the Annual Report (Hindi and English versions) of the Investor Education and Protection Fund Authority, New Delhi, for the year 2022-2023.

(ii) A copy of the Annual Accounts (Hindi and English versions) of the Investor Education and Protection Fund Authority, New Delhi, for the year 2022-2023, together with Audit Report thereon.

(iii) Statement regarding Review (Hindi and English versions) by the Government of the working of the Investor Education and Protection Fund Authority, New Delhi, for the year 2022-2023.

(2) Statement (Hindi and English versions) showing reasons for delay in laying the papers mentioned at (1) above.

(3) (i) A copy of the Annual Report (Hindi and English versions) of the Indian Institute of Corporate Affairs, Gurugram, for the year 2022-2023, along with audited accounts.

(ii) Statement regarding Review (Hindi and English versions) by the Government of the working of the Indian Institute of Corporate Affairs, Gurugram, for the year 2022-2023.

(4) Statement (Hindi and English versions) showing reasons for delay in laying the papers mentioned at (3) above.

---

… (*Interruptions*)

**माननीय अध्यक्ष:** आपको महासचिव जी के बाद बोलने का मौका मिलेगा।

… (व्यवधान)

**माननीय अध्यक्ष:** आइटम नंबर 2, महासचिव।

… (व्यवधान)

## MESSAGES FROM RAJYA SABHA

1101 hours

SECRETARY GENERAL: Sir, I have to report the following messages received from the Secretary General of Rajya Sabha:-

(i) "In accordance with the provisions of rule 127 of the Rules of Procedure and Conduct of Business in the Rajya Sabha, I am directed to inform the Lok Sabha that the Rajya Sabha at its sitting held on the 9th February, 2024 agreed without any amendment to the Jammu and Kashmir Local Bodies Laws (Amendment) Bill, 2024 which was passed by the Lok Sabha at its sitting held on the 6th February, 2024."

(ii) "In accordance with the provisions of rule 127 of the Rules of Procedure and Conduct of Business in the Rajya Sabha, I am directed to inform the Lok Sabha that the Rajya Sabha at its sitting held on the 9th February, 2024 agreed without any amendment to the Constitution (Jammu and Kashmir) Scheduled Castes Order (Amendment) Bill, 2024 which was passed by the Lok Sabha at its sitting held on the 6th February, 2024."

(iii) "In accordance with the provisions of rule 127 of the Rules of Procedure and Conduct of Business in the Rajya Sabha, I am directed to inform the Lok Sabha that the Rajya Sabha at its sitting held on the 9th February, 2024 agreed without any amendment to the Constitution (Jammu and Kashmir) Scheduled Tribes Order (Amendment) Bill, 2024 which was passed by the Lok Sabha at its sitting held on the 6th February. 2024."

(iv) "In accordance with the provisions of rule 127 of the Rules of Procedure and Conduct of Business in the Rajya Sabha, I am directed to inform the Lok Sabha that the Rajya Sabha at its sitting held on the 9th February, 2024 agreed without any amendment to the Public Examinations (Prevention of Unfair Means) Bill, 2024 which was passed by the Lok Sabha at its sitting held on the 6th February, 2024."

---

… (*Interruptions*)

**माननीय अध्यक्ष:** आप क्या बोलना चाहते हैं?

… (व्यवधान)

**माननीय अध्यक्ष:** आप जो बोलना चाहते हैं, बोलिए।

… (व्यवधान)

**माननीय अध्यक्ष:** आप बोलना चाहते हैं या जाना चाहते हैं? आप यह तो तय करें।

… (व्यवधान)

SHRI T. R. BAALU (SRIPERUMBUDUR): Sir, Chief Minister of Tamil Nadu has sent a letter to the Prime Minister of India on the issue of Tamil Nadu fishermen. But the Prime Minister of India has not replied positively… (*Interruptions*)

**माननीय अध्यक्ष:** बालू जी, आज महत्वपूर्ण विषय पर चर्चा हो रही है। सदन में इस सत्र का अंतिम दिन है।

… (व्यवधान)

SHRI T. R. BAALU (SRIPERUMBUDUR): Sir, we have given a notice of Adjournment Motion … (*Interruptions*)

**माननीय अध्यक्ष:** बालू जी, आज एडजर्नमेंट मोशन किसी का अलाऊ नहीं किया है। आप सीनियर व्यक्ति हैं।

… (व्यवधान)

**माननीय अध्यक्ष:** आज न शून्य काल है और न ही एडजर्नमेंट मोशन है।

… (व्यवधान)

**माननीय अध्यक्ष:** आपकी बात रिकॉर्ड में आ चुकी है।

… (व्यवधान)

**माननीय अध्यक्ष:** आपने बात बोल दी है।

… (व्यवधान)

**माननीय अध्यक्ष:** आज कोई विषय नहीं है।

… (व्यवधान)

**माननीय अध्यक्ष:** आइटम नंबर 3, नियम 193 के अंतर्गत ऐतिहासिक श्री राम मंदिर के निर्माण और श्री राम लला की प्राण प्रतिष्ठा के बारे में चर्चा।

डॉ. सत्यपाल सिंह जी।

(1105/MK/RP)

## ऐतिहासिक श्री राम मंदिर के निर्माण और श्री रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के बारे में चर्चा

1105 बजे

**डॉ. सत्यपाल सिंह (बागपत):** आदरणीय अध्यक्ष महादेय, भगवान राम, अयोध्या में राम मन्दिर का निर्माण और 22 जनवरी को रामलला की प्राण प्रतिष्ठा का ऐतिहासिक काम अयोध्या के अंदर हुआ है। … (व्यवधान) कम से कम भगवान राम के नाम पर तो शांत हो जाइए।

1105 बजे

(इस समय डॉ. टी.आर. पारिवेन्धर और कुछ अन्य माननीय सदस्य सभा से बाहर चले गए।)

**माननीय अध्यक्ष:** माननीय सदस्य, आप बोलिए।

**डॉ. सत्यपाल सिंह (बागपत):** आदरणीय अध्यक्ष महादेय, भगवान राम, अयोध्या में राम मंदिर का निर्माण और वहां पर 22 जनवरी, 2024 को रामलला की जो प्राण प्रतिष्ठा हुई, उसके बारे में आज इस महान भारत के महान सदन में, आजाद भारत के इस महान सदन में, जो सदन हम सब सांसद लोगों को गौरवान्वित करता है, उस सदन में भगवान राम के बारे में बोलना, उनके मंदिर के बारे में अपना प्रस्ताव रखना, आज मेरा बहुत बड़ा अहोभाग्य है। इसके लिए मैं आदरणीय अध्यक्ष जी आपका और अपनी पार्टी के वरिष्ठ नेतृत्व का बहुत-बहुत आभार व्यक्त करता हूं। हम जिस कालखंड में, जिसमें आज हम साक्षी हैं, इस कालखंड में भगवान राम का मंदिर बनते देखना, श्री रामलला की प्राण प्रतिष्ठा होते देखना और वहां जाकर दर्शन करना, यह अपने-आप में एक बहुत बड़ी ऐतिहासिक बात है। आजाद भारत के इस कालखंड में जिस प्रकार से भगवान राम का मंदिर बना, भगवान राम, जिसके बारे में कुछ लोग सोचते हैं, वह कोई साम्प्रदायिक विषय नहीं है, श्रीराम केवल हिन्दुओं के नहीं हैं, वे सबके हैं। भगवान राम हम सबके पूर्वज भी हैं और हम सबके लिए प्रेरणा भी हैं। उनके जमाने में, आजकल जो मत, संप्रदाय और पंथ चलते हैं, हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, ऐसा उनके जमाने में कुछ भी नहीं था। वे तो मर्यादा पुरुषोत्तम थे। इसलिए, भगवान राम को याद करना, उनका बखान करना और जैसे हमारे पूर्वजों ने कहा था –

रामेति रामभद्रेति रामचंद्रेति वा स्मरन्,
नरो न लिप्यते पापैर्भुक्तिं मुक्तिं च विन्दति ॥

जो लोग राम का, रामभद्र का, रामचंद्र का स्मरण करते हैं, वे मनुष्य पाप में लिप्त नहीं होते हैं और समृद्धि तथा मुक्ति को प्राप्त करते हैं। इसलिए, हम सब लोग, इस सदन के हम सभी सांसद आज भगवान राम पर चर्चा कर रहे हैं तो मुझे लगता है जैसे कहीं राम कथा होती है, कहीं वेदों की कथा होती है तो उसमें सबको पुण्य का अर्जन होता है, आज राम कथा की चर्चा करके हम सब लोग निश्चित रूप से पुण्य का अर्जन करने वाले हैं। अयोध्या में राम मंदिर की बात करने से पूर्व मैं इतना जरूर कहना चाहता हूं कि राम हमारे लिए एक भावना हैं, राम हमारा भाग्य है, राम हमारी इच्छा हैं, भारत की सभ्यता की राम एक तर्क हैं, सर्वोच्च राज शासन का राम एक मूर्त रूप हैं, राम

एक चेतना हैं, राम एक विरासत हैं, राम एक सभ्यता हैं, राम एक संस्कृति हैं, राम एक शास्त्र हैं और राम एक मोक्ष भी हैं। इसलिए, भारतीय भाग आकाश में राम सर्वत्र हैं। राम सभी जगह हैं। उत्तर भारत में भगवान राम के नाम पर कई राम सिंह हैं, कई रामचंद्र हैं, वे दक्षिण भारत में जाकर कहीं रमन्ना बन जाते हैं, कहीं रमैया बन जाते हैं और कहीं रामचंद्रन बन जाते हैं। उनके नाम पर कहीं रामपुर स्थापित होता है, कहीं रामागुंडम स्थापित होता है तो कहीं रामेश्वरम बन जाता है। इसलिए, राम घट-घट में वासी हैं, रोम-रोम में वासी हैं। इसलिए, भगवान राम के बारे में जब हम लोग बात करते हैं तो मुझे लगता है कि भगवान राम का व्यक्तित्व इतना विशाल और विराट है कि वे केवल भारत की भौगोलिक सीमाओं में ही नहीं हैं, भारत की भौगोलिक सीमाएं तोड़कर चाहे इंडोनेशिया हो, जावा हो, मलेशिया हो, पता नहीं दुनिया के कितने देशों मे जाकर राम स्थापित हो गए हैं।
(1110/SJN/NKL)

इसीलिए हम भगवान राम को सत्य, सनातन और शाश्वत मानते हैं। भगवान राम का मंदिर बनने से पहले मैं कुछ बातें बताना चाहता हूं। हमारे पूर्वजों के हिसाब से अगर भगवान राम को सबसे ज्यादा जानने का कोई प्रामाणिक सोर्स है, तो हम उसको 'वाल्मीकि रामायण' कहते हैं। 'वाल्मीकी रामायण' के हिसाब से, हमारे पूर्वजों ने जितनी भी किताबें और पुस्तकें लिखी हैं, उनके अनुसार भगवान 24वें त्रेता युग में पैदा हुए थे।

मैं इस सम्मानित सदन के सामने एक बात रखना चाहता हूं। वर्ष 2007 में जब रामेश्वरम् और श्रीलंका के बीच रामसेतु के निर्माण का प्रोजेक्ट तैयार हुआ था, उस समय कांग्रेस पार्टी की जो सरकार थी, उनके संस्कृति मंत्रालय ने उच्चतम न्यायालय में जाकर एक शपथ पत्र दिया था, वह यह था कि इस धरती पर भगवान राम नाम का कोई भी व्यक्ति पैदा नहीं हुआ है। राम जो है, वह एक काल्पनिक विषय है।

'वाल्मीकि रामायण' ने कहा है कि – "यतो धर्म: ततो राम: यतो राम: ततो धर्मे:" जहां राम है, वहां धर्म है। इसके साथ ही भगवान व्यास जी ने यह भी कहा था कि – "धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः" जो धर्म की हत्या करता है, उनकी हत्या हो जाती है और जो धर्म की रक्षा करते हैं, उनकी रक्षा होती है। जिस प्रकार से कांग्रेस पार्टी ने उस समय भगवान राम को नकारा था, इसलिए आज उनकी ये स्थिति हो गई है। इसलिए इस देश के अंदर...(व्यवधान)

**श्री गौरव गोगोई (कलियाबोर) :** महोदय, अप्रामाणिक आरोप रिकॉर्ड में नहीं जाना चाहिए।...(व्यवधान)

**माननीय अध्यक्ष :** मैं चेक कर लूंगा।

... (<u>व्यवधान</u>)

**डॉ. सत्यपाल सिंह (बागपत) :** महोदय, भगवान राम के अस्तित्व को नकारना, अपनी संस्कृति को नकारना था, अपनी सभ्यता को नकारना था और अपनी विरासत को नकारना था। इसीलिए मैं इस बात को कई बार कहता हूं, क्योंकि मैंने वर्ष 2008 में एक लेख लिखा था। जो लोग यह कहते हैं कि भगवान राम कभी भी इस धरती पर पैदा नहीं हुए, उस समय मैंने 20 सवाल लिखे थे। पूरी दुनिया के जो इतिहासकार हैं, जो अपने आपको आर्कियोलॉजिस्ट कहते हैं, जो पुरातत्ववादी कहते

हैं, जो यह कहते हैं कि भगवान राम कभी पैदा नहीं हुए, मैंने उनको चैलेंज किया था कि इन सवालों का जवाब दो, एक भी सवाल का जवाब दो और बताओ कि क्या भगवान राम इस धरती पर पैदा नहीं हुए, लेकिन सौभाग्य की बात यह है कि लगभग 15 वर्षों में दुनिया के किसी भी इतिहासकार ने आज तक मेरे उस लेख का जवाब नहीं दिया है। जिनको पढ़ना है, वह पढ़ सकते हैं - 'प्रूविंग द हिस्टोरीसिटी ऑफ लॉर्ड राम'। उस समय 'रैडिफ डॉट कॉम' ने उसको पब्लिश किया था।

इसलिए भगवान राम त्रेता युग में पैदा हुए थे। भगवान राम ने हमारे सामने जो आदर्श उपस्थित किए हैं, भगवान राम ने जिस प्रकार से राम राज्य की स्थापना की थी, आजादी के आंदोलन के समय महात्मा गांधी जी राम राज्य के बारे में कहते थे कि आजाद भारत में जो राज्य होगा, आजाद भारत में राम राज्य होगा। उस राम राज्य की विशेषता क्या थी?

गोस्वामी तुलसीदास जी रामचरितमानस में लिखते हैं कि – "दैहिक दैविक भौतिक तापा, राम राज नहिं काहुहि ब्यापा"। उस राम राज्य में किसी भी प्रकार की कोई बीमारी नहीं थी, किसी भी प्रकार का कोई रोग नहीं था। "सब नर करहि परस्पर प्रीति" - सब लोग आपस में प्रेम से रहते थे। "चलहि स्वधर्म निरत श्रुति नीती" - लोग वेद की आज्ञा के आधार और आदर्शों पर चलते थे, ताकि राम राज्य की स्थापना हो सके। जिस प्रकार से राम मंदिर की बात हुई है, मैं सब लोगों को उसके इतिहास के बारे में बताना चाहता हूं। अयोध्या में सभी लोग यह मानते हैं कि भगवान राम अयोध्या में पैदा हुए थे।...(व्यवधान)

आदरणीय अध्यक्ष महोदय, मैं राम मंदिर की बात कर रहा हूं। हमारे मित्र अधीर रंजन चौधरी जी हैं, वह अपने नाम के हिसाब से कभी-कभी अधीर हो जाते हैं, लेकिन उनको राम के नाम पर अधीर नहीं होना चाहिए। उनको बहुत ही धैर्य के साथ सुनना चाहिए, क्योंकि भगवान राम धैर्य की प्रतिमूर्ति थे। वह धैर्य की साकार मूर्ति थे। मैं जिस राम मंदिर की बात कर रहा हूं, राम मंदिर केवल कंक्रीट और पत्थरों का मंदिर नहीं है, वह इस देश के करोड़ों लोगों की आस्था का मूर्त रूप है।

(1115/SPS/VR)

यह हमारे करोड़ों लोगों का साकार रूप है। जब मैं राम मंदिर के कालखण्ड की बात करता हूं तो अयोध्या के अंदर भगवान राम का मंदिर था, वह भगवान राम का मंदिर तोड़ा गया। लोग कहते हैं कि पानीपत की पहली लड़ाई के अंदर वर्ष 1526 में दिल्ली के सिंहासन पर दिल्ली के बादशाह बाबर बन गए। अयोध्या की तरफ उनके एक सेनापति थे, जिनका नाम मीर बाकी थे। वर्ष 1528 के अंदर वहां जाकर उस राम मंदिर को तोड़ा गया। वहां पर एक शेख बायाज़िद नाम का व्यक्ति था, जिसको लोकल गवर्नर कहते थे। उसने दिल्ली की बादशाहत के खिलाफ वहां विद्रोह किया था, इसलिए उसको दबाने के लिए मीर बाकी को वहां पर भेजा गया था।

महोदय, इतिहास इस बात का गवाह है कि वहां पर मंदिर था। आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया ने कोर्ट के आदेश के अनुसार वहां पर वर्ष 2003 में सर्वे किया था, लेकिन मैं उससे पहले कहना चाहता हूं कि वर्ष 1528 से लेकर जब तक राम मंदिर पुन: बना, जब उस राम मंदिर की एक ईंट तोड़ी गई, उसी दिन से इस देश के लाखों- करोड़ों लोगों ने यह भी निर्णय किया था कि हम पुन:

वहीं पर राम मंदिर बनाएंगे। वहां का लगभग 500 वर्षों का इतिहास रहा है, 500 वर्षों का इतना लंबा संघर्ष का इतिहास है, वह बलिदानों का इतिहास है। किसी ने हिसाब लगाया है कि राम मंदिर के लिए वहां पर जो संघर्ष चला, जो दंगे चले, उसके अंदर लगभग 1 लाख 74 हजार लोग मारे गए। वहां बड़े-बड़े दंगे हुए, लेकिन कभी हम लोग रुके नहीं, हम लोग कभी थमे नहीं, देश की जनता कभी झुकी नहीं, क्योंकि राम मंदिर को तोड़ना, केवल राम मंदिर को तोड़ना नहीं था, इस देश की चेतना के ऊपर, सामूहिक चेतना के ऊपर, इस देश की विरासत के ऊपर आक्रमण और हल्ला था।

महोदय, जैसा मैंने कहा कि संघर्ष चलता रहा और जब वर्ष 1855 से हमें कागजात मिलते हैं, तो वर्ष 1855 में वहां पर एक चबूतरे का निर्माण हुआ। वहां पर वर्ष 1934 में फिर से दंगे हुए। मैं ज्यादा गहराई में नहीं जाना चाहता हूं। वर्ष 1949 के अंदर 22 और 23 दिसंबर के एक मध्य भाग में वहां पर रामलला की जो मूर्ति मस्जिद में एक साइड में रखी थी, वह मध्य भाग में रखी गई। वर्ष 1950 के अंदर वहां एक सिविल केस किया गया। निर्मोही अखाड़ा और दिगंबर अखाड़ा से मिलकर हमारा संघर्ष चलता था। मैं इस चीज के साथ-साथ कुछ बातें बताना चाहता हूं कि जहां एक तरफ कोर्ट की लड़ाई चल रही थी, वहीं दूसरी तरफ जन आंदोलन इस देश के अंदर चल रहा था। हमारे कांग्रेस के मित्र यहां पर बैठे हैं, मैं उनको बताना चाहता हूं कि वर्ष 1983 के अंदर सबसे पहले जन आंदोलन चलाने की बात हुई तो मुजफ्फरनगर के अंदर एक बहुत बड़ी रैली हुई। उस रैली के अंदर श्री गुलजारी लाल नंदा थे, जो इस देश के दो बार अंतरिम प्रधान मंत्री रह चुके हैं और कांग्रेस पार्टी के एक बहुत बड़े नेता थे। श्री रज्जो भैया जी, दाऊ दयाल खन्ना जी, महंत रामचन्द्र दास जी इन लोगों की अध्यक्षता में एक बहुत बड़ी रैली मुजफ्फरनगर के अंदर हुई। उसके बाद वर्ष 1984 में विश्व हिंदू परिषद ने प्रथम धर्म संसद को बुलाया। उसकी अध्यक्षता अशोक सिंहल जी ने की थी।

महोदय, अगर किसी को उस जमाने की डिटेल पढ़नी हो तो हमारे बहुत ही वरिष्ठतम नेता आदरणीय श्री लाल कृष्ण आडवाणी जी ने जो अपनी आत्म कथा माई कंट्री, माई लाइफ लिखी है, उसके अंदर इस बात की पूरी डिटेल दी है। सितंबर, 1984 के अंदर धर्म यात्रा शुरू हुई। एक प्रकार से एक जन आंदोलन शुरू हुआ। बिहार के सीतामढ़ी से लेकर अयोध्या तक यह यात्रा निकाली गई। वहां पर 1950 के बाद कोर्ट ने ताले लगा दिए थे, वर्ष 1986 में महाशिवरात्रि के दिन कहा गया कि उसके ताले खोले जाएं या ताले तोड़े जाएं। उत्तर प्रदेश की सरकार ने यह कोर्ट में जाकर कहा, लेकिन कोर्ट ने उनको परमिशन नहीं दी। जब हाई कोर्ट ने उनको पूजा के लिए परमिशन दी तो इलाहाबाद के कुम्भ में वर्ष 1989 के अंदर लगभग एक लाख साधु और संत इकट्ठे हुए।

(1120/MM/SAN)

उन लोगों ने तब राम शिला का पूजन किया और कहा कि इसे अयोध्या में ले जाया जाएगा। यह निर्णय किया गया कि राम मंदिर का शिलान्यास होना चाहिए। वर्ष 1989 में भारतीय जनता पार्टी की नेशनल एग्जिक्यूटिव ने भी तय किया कि इस देश की अस्मिता के ऊपर खतरा है। इस देश की अस्मिता का प्रश्न है, हम लोगों के सम्मान का प्रश्न है। वर्ष 1989 में विश्व हिन्दू परिषद ने अपनी यात्रा शुरू की थी। हमारे श्री लाल कृष्ण आडवाणी जी ने 25 सितम्बर को सोमनाथ से लेकर 30

अक्टूबर तक अयोध्या की यात्रा शुरू की। आप सब लोगों को मालूम है कि उस समय लाखों-करोड़ों लोग नारा लगाते थे- सौगंध राम की खाते हैं, मंदिर वहीं बनाएंगे। आप सब लोगों को मालूम है कि आडवाणी जी को समस्तीपुर बिहार में श्री लालू यादव ने गिरफ्तार किया था। उस समय उत्तर प्रदेश के अंदर आदरणीय श्री मुलायम सिंह यादव की सरकार थी। यह तय हुआ कि 30 अक्टूबर, 1992 में वहां जाकर के शिलांयास करेंगे। उस समय मुलायम सिंह यादव जी ने कहा था कि आदमियों की बात तो क्या है, कारसेवकों की बात तो क्या है, एक चिड़िया भी अयोध्या में प्रवेश नहीं कर पाएगी। उस समय हमारे 50 कारसेवक मारे गए, गोलियों का निशाना बने। आज इस सदन में मैं उन कारसेवकों को भी श्रद्धांजलि देता हूं। इसके साथ-साथ जो 1 लाख 74 हजार लोग मारे गए, उन सभी को भी मैं श्रद्धांजलि देता हूं। जैसा मैंने कहा था कि एक तरफ विश्व हिंदू परिषद का आंदोलन चल रहा था और दूसरी तरफ अयोध्या में लड़ाई चल रही थी। हाई कोर्ट से सुप्रीम कोर्ट तक यह लड़ाई चलती रही। सुप्रीम कोर्ट ने हाई कोर्ट से कहा था कि 6 दिसम्बर से पहले उनको अपना निर्णय देना चाहिए। लेकिन उन्होंने अपना निर्णय नहीं दिया। उनका निर्णय 11 दिसंबर को आया। 6 दिसंबर को वह घटना कारसेवकों द्वारा घटित की गयी। जो हुआ, वह सब लोगों के सामने है, मैं उसकी डिटेल में नहीं जाना चाहता हूं। लेकिन उसके बाद कोर्ट में जिस प्रकार से लड़ाई चलती रही और जिस प्रकार से हाई कोर्ट के तीन जजों ने, उसमें हमारे मुस्लिम जस्टिस भी थे, उन्होंने यह आदेश दिया। यह मामला बाद में सुप्रीम कोर्ट में गया और सबसे बड़े सौभाग्य की बात यह है कि जब श्री नरेन्द्र मोदी जी इस देश के प्रधानमंत्री बने तो इसका श्रेय भी उनको जाता है और जिस प्रकार से 41 दिनों तक डेली उसकी सुनवाई होती रही और नवंबर, 2019 को उसका निर्णय आया। मैं यहां दो लोगों का जिक्र जरूर करना चाहूंगा। 92 साल के एडवोकेट श्री के. परासरण और जस्टिस देवकीनंदन अग्रवाल का जिक्र मैं जरूर करना चाहता हूं। श्री देवकीनंदन अग्रवाल जी ने यह कहा था और यह पहली बार न्यायिक इतिहास में, ज्यूडिशियल हिस्ट्री में भगवान राम को, एक डियटी को, आदमी के रूप में, हमारी जो धार्मिक संहिता है, उसके तहत उनको डिसेबल्ड पर्सन या दिव्यांग पर्सन के रूप में परिभाषा दी गयी और राम लला विराजमान को वादी बनाया गया। वादी के आधार पर के. परासरण जी ने 92 वर्ष की उम्र में नंगे पैर सुप्रीम कोर्ट में खड़े होकर, वे कभी कुर्सी पर नहीं बैठे। उसके बाद सुप्रीम कोर्ट में केस चला और 9 नवंबर, 2019 में सुप्रीम कोर्ट का निर्णय हुआ। सर्वसम्मति से निर्णय हुआ कि वहां भगवान राम का मंदिर बने। वहां भगवान राम का मंदिर बनना शुरू हुआ और सब लोगों को मालूम है कि 22 जनवरी को भगवान राम की प्राण प्रतिष्ठा हुई। इतिहास में कभी-कभी इस प्रकार के काल खंड आते हैं, कुछ लोग समाज में ऐसे पैदा हो जाते हैं, समा

ज में ऐसे युग पुरुष पैदा होते हैं, जिनको हमेशा आने वाला युग, आने वाला समय याद रखेगा। किसी शायर ने कहा है –

हज़ारों साल नर्गिस अपनी बे-नूरी पे रोती है
बड़ी मुश्किल से होता है चमन में दीदा-वर पैदा।

(1125/YSH/SNT)

इस देश में नरेन्द्र मोदी जी आए और जिस प्रकार से उन्होंने न केवल भगवान राम जी का मंदिर बनवाया, बल्कि उन्होंने रामराज लाने का काम भी किया। एक ऐसा राम राज, जहां 'सर्वेषां अविरोधेन सर्वेषां मंगला", सबके मंगल के लिए उन्होंने कहा था। मैं इस बात को कहना चाहता हूँ, मैं अपने सभी साथियों को यह बात बताना चाहता हूँ कि राम जी के जमाने में महर्षि वशिष्ठ जी यह कहते थे, उन्होंने केकई को समझाते हुए कहा था कि जहां राम नहीं है, वह राष्ट्र नहीं हो सकता है और जहां पर राम है, वहीं पर राष्ट्र है।

न ही तद् भविता राष्ट्रं, यत्र रामो न भूपति।

तद्वनं भविता राष्ट्रं यत्र रामो निवत्स्यति।

अर्थात, जहां पर राम है, वहीं पर राष्ट्र है और जहां पर राम नहीं है, वह राष्ट्र नहीं हो सकता है। हम हमेशा यह कहते हैं कि "वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिता:" अर्थात हम राष्ट्र के जागरुक प्रहरी हैं तो हमें भगवान राम जी को याद रखना पड़ेगा। हमें इस राष्ट्र का निर्माण करना है। मैं एक बात जरूर कहना चाहता हूँ कि 15 अगस्त, 1947 को उस समय हमारे पहले प्रधान मंत्री पंडित जवाहर लाल नहेरू जी ने एक बात कही थी। मैं उनको कोट करता हूँ।

"A moment comes, which comes but rarely in history, when we step out from the old to new, when an age ends, and when the soul of a nation, long suppressed, finds utterance."

इतिहास के कालखंड में एकाध बार निराली घड़ी आती है। जब हम अतीत से अद्यतन की ओर कदम बढ़ाते हैं तो एक युग का अस्त होता है और चिर निरवद्य राष्ट्र की आत्मा मुखरित हो जाती है। आज इस राम मंदिर के बनने के बाद इस देश की चिर मुखरित आत्मा, चेतना जागृत हो गई है। मैं सूर्यकांत निराला की कुछ पक्तिंयों से अपनी बात को विराम की तरफ लेकर चलता हूँ।

इस अमृतकाल के लिए सूर्यकांत निराला जी ने लिखा था कि "प्रिय स्वतंत्र रव अमृत मंत्र नव, भारत में भर दे। नव गति, नव लय, ताल छंद नव, नवल कंठ, नवल जलद, मंद्र रव, नव नभ के नव विहग वृंद को, नव पर नव स्वर दे, वर दे वीणावादिनी वर दे।" आज इस देश के अंदर ये पंक्तियां सार्थक हो रही हैं। मेरे सांसद मित्रो, स्वामी विवेकानंद जी के शब्दों में मैं यह कहता हूँ कि इस अमृतकाल में अगले 25 वर्ष हमारा ईष्ट देवता केवल भारत है। अन्य देवताओं को भूल जाओ, केवल भारत के इस ईष्ट देवता को याद रखना है। इस भारत की प्रगति, इसका वैभव यही हमारा मोक्ष है और यही हमारा धर्म है।

मित्रो, "चंदन बने इस देश की माटी, चंदन बने इस देश की माटी, तपोभूमि हर ग्राम हो, हर बाला देवी की प्रतिमा, बच्चा-बच्चा राम हो।" इन्हीं शब्दों के साथ सभी सम्मानित मित्रों को धन्यवाद देते हुए मैं अपनी वाणी को विराम देता हूँ। जय श्री राम, जय श्री राम।

(इति)

1129 बजे

**श्री गौरव गोगोई (कलियाबोर):** आदरणीय अध्यक्ष महोदय, मैं आज रूल 193 के अंतर्गत श्री राम मंदिर के निर्माण और श्री रामलला की प्राण प्रतिष्ठा की इस महत्वपूर्ण चर्चा पर भाग लेते हुए अपनी पार्टी की तरफ से आपके सामने अपना वक्तव्य रखने जा रहा हूँ।

अध्यक्ष महोदय, यह देश भक्ति का देश है। यह देश आस्था का देश है। इस देश में हम सद्भावना से अपनी विविधता को बांधते हैं। सेवा भाव से समाज को संजोते हैं। ज्ञान हमारी सबसे बड़ी ताकत है और इंसानियत हमारी सबसे बड़ी पहचान है। भारतवासी धार्मिक है, लेकिन धर्म का अर्थ क्या है?

(1130/RAJ/AK)

'धर्म' संस्कृत के 'धृ' धातु से बना है, जिसका अर्थ धारण करना है। आग का धर्म जलना, पानी का धर्म बहना है। मनुष्य का धर्म सत्य के मार्ग पर चलना है, स्वभाव में करुणा धारण करना, न्याय में विश्वास रखना और समाज में समानता स्थापित करना। जीवन के माया जाल को पार करने में भगवान या देवी मां का दर्शन, हमें सत्य और इंसानियत का मार्ग दिखाता है। इसलिए हमारे देश के नागरिक भगवान श्री राम के दर्शन के द्वारा आशीर्वाद प्राप्त करना चाहते हैं। भगवान राम सब के हैं और वे हर समय हमारे साथ हैं। चाहे हमे सुख हो, दु:ख हो, हम अंधकार में हों, क्रोधित हों, सफल हों या असफल हों, वे हर क्षण हमारे कण-कण में हैं। चाहे दिन की शुरुआत हो, जब हम एक-दूसरे से मिलते हैं, तो उत्तर भारत या पश्चिमी भारत में 'राम-राम' कह कर या राजस्थान में राम-राम सा कह कर एक-दूसरे का स्वागत करते हैं। महात्मा गांधी जी की तरह जीवन के अंतिम पल तक 'हे राम' लफ्ज हमारी जुबां पर रहते हैं। सर, मैं कवि हरिओम पंवार की कविता की कुछ पंक्तियां कहना चाहता हूं :

राम दवा है रोग नहीं सुन लेना
राम त्याग है भोग नहीं सुन लेना
राम दया है क्रोध नहीं जगवालों
राम सत्य है शोध नहीं जगवालों
राम हुआ है नाम लोकहितकारी का
रावण से लड़ने वाली खुद्दारी का।

सर, ये ही बातें सत्य, सेवा, न्याय, करुणा, इस ख्वाब को डा. भीमराव अम्बेडकर जी ने बहुत खुबी से भारत के इस संविधान में बांधा है। जहां पर भीमराव अम्बेडकर जी ने शासन का मार्ग संविधान के द्वारा सिखाया है, तो वहीं महात्मा गांधी जी ने इस मार्ग का अंतिम लक्ष्य भी दिखाया है। वह अंतिम लक्ष्य क्या है, उनके ही शब्दों में राम राज है। राम राज की परिभाषा क्या है, उनके शब्दों में जहां सभी खुश हैं और कोई दु:खी नहीं है। यह उनकी परिभाषा है। इस परिभाषा का उन्होंने अनेक बार विवरण भी दिया है। गांधी जी ने यह भी कहा है कि मेरा हिन्दू धर्म मुझे सभी धर्मों का सम्मान करना सिखाता है, इसी में राम राज का रहस्य छिपा है। जब भगवान राम ने रावण का वध किया, तो उन्होंने सभी को लोगों को लेकर एक सेना बनाई है, लेकिन उनकी सेना में राजा-

महाराजा की सेना नहीं थी। उनकी सेना में पिछड़े, वंचित और शोषित लोग थे। भगवान राम ने इस सेना में सभी पिछड़े, शोषित एवं वंचित लोगों को ताकत दी, आत्मविश्वास दिया, तब रावण के अहंकार को हराया गया। इसीलिए हमें मंथन करना चाहिए कि क्या सभी पिछड़े, वंचित और अल्पसंख्यक खुश हैं, यही महात्मा गांधी जी के राम राज की परिभाषा थी। लेकिन आज हम क्या देख रहे हैं, आज हम देख रहे हैं कि अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के विरोध में, के खिलाफ आज अपराध बढ़ रहा है। अगर हम एक साल पहले कि तुलना करें तो वर्ष 2023 में लगभग 50 प्रतिशत अपराध बढ़ा है।

(1135/KN/UB)

क्या यह राम राज्य है? आज पिछड़ा वर्ग जातिगत जनगणना की मांग कर रहा है, क्योंकि वे यह देख रहे हैं कि उनके साथ अन्याय हो रहा है। वे देख रहे हैं कि विश्वविद्यालयों में उनके साथ जातिगत भेदभाव हो रहा है। विश्वविद्यालयों में जो स्थान हैं, केन्द्र सरकार में जो स्थान हैं, उन स्थानों से वे वंचित हैं।

रामायण में मां सीता का भी उल्लेख है। मां सीता ने कभी भी अपने संयम और शक्ति को कम नहीं होने दिया, लेकिन क्या यही अनुभूति उस उन्नाव की दलित बेटी को प्राप्त हुई, जब वह बेसहारा थी, जब वह अकेली थी? क्या यह अनुभूति हमारी महिला खिलाड़ियों को हुई, जब वे अपने हक की लड़ाई के लिए लड़ रही थीं? आज हमारी ही संसदीय समिति की रिपोर्ट में उल्लेख है कि अनुसूचित तबकों की स्त्रियों को दोहरा बोझ झेलना पड़ता है। वे जाति और जेंडर के आधार पर शोषित होती हैं तथा यौन शोषण के सामने बेबस होती है। आज चारों तरफ हम बेबसी देखते हैं। लोक सभा की इस चर्चा के बाद जब सारे सांसद अपने-अपने क्षेत्रों में जाएंगे, तो युवाओं के बीच उनको बेबसी दिखाई देगी। आप सभी के पास आपके क्षेत्र के युवा आएंगे, नौकरी की गुहार लगाएंगे, रोजगार की गुहार लगाएंगे। आपके पास वे इंटरव्यू की ऐप्लिकेशन लेकर आएंगे, आपके पास वे 'टेट' की परीक्षा की मार्क्सशीट को लेकर आएंगे और वे आपसे कहेंगे कि आदरणीय सांसद महोदय मैंने परीक्षा पार कर ली। आदरणीय सांसद महोदय मैं बीस पास हूं, आदरणीय सांसद महोदय मैं बेरोजगार हूं। आज इस बेरोजगारी के कारण बेबस भारतीय युवा नशे के रास्ते पर चल पड़ा है। आज अपराध के रास्ते पर चल पड़ा है। आज वह जहां भी जाता है, भेदभाव महसूस करता है। आज वह बेबसी में कुछ चंद पैसे इकट्ठा करके विदेशी धरती की तरफ पलायन करता है। यह असलियत है, चाहे यह उत्तर पूर्वांचल की हो, दक्षिण की हो, पूर्व की हो, पंजाब की हो या गोवा की हो या केरल की हो या गुजरात की हो। हम इस सच्चाई को नकार नहीं सकते हैं। इसलिए हमारा दल इतने सालों से समाज सेवा कर रहा है। हम सच्चाई से वाकिफ हैं। हमने बहुत कुछ किया है, लेकिन बहुत कुछ करना बाकी है। हमसे भी गलती हुई है, यह कबूल करने में हमें कोई आपत्ति नहीं हैं। जब कांग्रेस गांधी जी के राम राज्य पर चलती है, तो हम न्याय के मार्ग पर चलते हैं। आज भी उच्चतम न्यायालय ने राम मंदिर के ऊपर जो राय दी है, उसका हम स्वागत करते हैं। हम सेकुलरिज्म पर विश्वास करते हैं। यह जो सेकुलरिज्म शब्द है, इसमें सेकुलरिज्म की जो पश्चिमी परिभाषा है, उस परिभाषा से हम अपने आपको भिन्न रखते हैं। अगर आप संविधान की उस डिबेट को देखेंगे, जब

सेकुलरिज्म शब्द, पंथ निरपेक्ष शब्द संविधान में जोड़ा गया था तो कांग्रेस पार्टी के विभिन्न सांसदों ने यही कहा था कि हम पश्चिमी परिभाषा से अपने को परे रखते हैं। भारत एक धार्मिक देश है। भारत में बहुत धर्म को मानने वाले लोग रहते हैं और हम सर्वधर्म समभाव में विश्वास करते हैं। केवल एक ग्रंथ नहीं, बल्कि इस देश की मिट्टी में इतनी ताकत है कि 140 करोड़ लोगों की विभिन्न भाषाओं और आस्था को अखंडता के साथ, प्यार और सद्भावना के साथ बांधती है।

मैं नानक के कुछ शब्द कहना चाहूंगा। नानक साहब ने कहा–

"अव्वल अल्लाह नूर उपाया, कुदरत के सब बन्दे,
एक नूर ते सब जग उपजया, कौन भले कौन मन्दे।"

(1140/VB/SRG)

सर, हम सभी को बांधना चाहते हैं। यही हमारी संस्कृति है, यही हमारी सभ्यता है। इसलिए मैं सत्ता पक्ष को भी सतर्क करना चाहूँगा कि आप नाथूराम के रास्ते का त्याग करें। नाथूराम की पूजा करने की आपकी जो परम्परा है, आप उसका त्याग करें। आप नाथूराम गोडसे का खंडन करें, इसमें आपको कोई परहेज नहीं होना चाहिए।

मैं कहना चाहूँगा कि आप अहंकार के रोग से बचें। रावण को उसके अहंकार ने ही मारा। आपका अहंकार देश में महँगाई को देखने से आपको रोकता है, आपका अहंकार देश में बढ़ती हुई अस्थिरता को देखने से आपको रोकता है, चाहे वह मणिपुर में हो, चाहे वह लद्दाख में हो, चाहे वह चीन से लगी हुई सीमा पर हो। आज समाज में जो बढ़ती हुई आशंका है, विशेष रूप से अल्पसंख्यकों के बीच में, आपका अहंकार उस आशंका को देखने से आपको रोकता है। मैं आपको उससे सतर्क करना चाहता हूँ।

भारत एक प्राचीन देश है। इस देश का जन्म वर्ष 2014 में, जब मोदी जी की सरकार आई, तब इसका जन्म नहीं हुआ। इस देश का जन्म 22 जनवरी, 2024 को नहीं हुआ। राम लल्ला हमेशा हमारे साथ थे। वे 500 वर्ष पहले भी हमारे साथ थे और आज भी हमारे साथ हैं और आपकी सरकार जाने के बाद, वे कल भी हमारे साथ रहेंगे। राम हमारे मन में हैं।... (व्यवधान)

सर, इतनी कटुता क्यों है? जय श्रीराम में प्यार और सद्भावना होनी चाहिए। लेकिन आपके जय श्रीराम में हमेशा कटुता और क्रोध सुनाई देता है, ऐसा क्यों? ... (व्यवधान) यह क्रोध क्यों है? ... (व्यवधान) राम सबके हैं।... (व्यवधान)

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी ने हमेशा सेवा-भाव से गांधी जी के मूल्यों से प्रेरित होते हुए, डॉ. अम्बेडकर जी से पाठ सीखते हुए, भारत के नागरिकों को अधिकार देने का काम किया है। स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद ही, सभी को वोट का अधिकार मिले, इसका अधिकार भी कांग्रेस पार्टी ने स्थापित किया। शिक्षा का अधिकार कांग्रेस पार्टी ने स्थापित किया, स्वशासन का अधिकार, पंचायत का अधिकार कांग्रेस पार्टी ने स्थापित किया, अन्न सुरक्षा का अधिकार कांग्रेस पार्टी ने स्थापित किया, सूचना का अधिकार कांग्रेस पार्टी ने स्थापित किया, पहचान का अधिकार- 'आधार' कांग्रेस पार्टी ने स्थापित किया। उच्च शिक्षा के मन्दिर के रूप में आईआईटीज, आईआईएमज़ को कांग्रेस पार्टी ने स्थापित किया। बीमारी से पीड़ितों और मरीजों के लिए मन्दिर के

रूप में ऑल इंडिया इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंस को भी कांग्रेस पार्टी ने स्थापित किया।... (व्यवधान)

सर, हम लोग हमेशा सेवा-भाव से काम करते गये। हम आपसे भी अपेक्षा करते हैं कि आपके पास जो भी समय बचा है, आप भी सेवा-भाव से ही काम करें। हमने सेवा-भाव को हमेशा याद रखा। पूर्व के 10 वर्षों में हमने कैसे सेवा की, हमने कैसे भक्ति प्रदर्शित की, राजधर्म का पालन कैसे किया, उसी सेवा-भाव की कुछ पंक्तियों का उल्लेख मैं, आदरणीय पूर्व वित्त मंत्री पी. चिदम्बरम जी के भाषण से करना चाहूँगा।

(1145/RCP/CS)

> "The UPA Government's record on growth is unparalleled. Ten years ago, we produced 213 million tonnes of food grains; today in 2014, we produce 263 million tonnes of food grains. Ten years ago, there were only 51,511 kilometres of rural roads under Pradhan Mantri Gram Sadak Yojana; today, we have 3,89,578 kilometres. Ten years ago in 2004, the Central Government expenditure on education was Rs.10,145 crore; this year in 2014, we allocated Rs.79,451 crore. Ten years ago, the Central Government spent Rs.7,248 crore on health; this year in 2014, we will spend Rs.36,322 crore. Ten years ago, the minorities had 14,15,000 bank accounts. At the end of March, 2013, they had 43,52,000 accounts and the volume of lending had soared from Rs.4000 crore to Rs.66,500 crore. Ten years ago, only 9,71,182 women Self Help Groups had been credit linked to banks. At the end of December 2013, 41,16,000 women SHGs had been provided credit. Ten years ago, only a few thousand students got education loans. At the end of December 2013, 25,70,254 student loan accounts have been sanctioned. This is our work. At the end of 2013, at the end of the UPA, the Direct Benefit Transfer scheme would be rolled out. The scheme is a year old and money is being transferred to beneficiaries under 27 identified schemes including the National Social Assistance Programme."

तो इस सेवाभाव से हमने विभिन्न अधिकारों की स्थापना की। एमजीनरेगा के माध्यम से रोजगार के अधिकार की स्थापना हमने की। वैसे ही पहचान और डीबीटी का जो ढांचा है, उस ढांचे को भी हमने तैयार किया। आज भी इस सेवाभाव से आदरणीय राहुल गाँधी जी भारत जोड़ो न्याय यात्रा के तहत नफरत के बाजार में मोहब्बत की दुकान खोल रहे हैं। कितने दु:ख की बात है कि जब

22 जनवरी को आदरणीय प्रधानमंत्री जी अयोध्या में थे तो उसी दिन आदरणीय राहुल गाँधी जी असम के गुरु महापुरुष श्रीमंत शंकर देव जी के स्थान, मंदिर में जाना चाहते थे। वे महापुरुष श्रीमंत शंकर देव जी के प्रति अपनी भक्ति जताना चाहते थे। जिस दिन 22 जनवरी को प्रधानमंत्री मोदी जी ने सभी को ऐलान किया कि आप जहाँ पर भी हो, जैसे भी हो, आप अपने निकट के मंदिरों में जाएं, उसी 22 जनवरी के दिन राहुल गाँधी जी को पवित्र बोर्दोवा थान जाने से रोका गया। उन्हें क्यूँ रोका गया? ... (व्यवधान)अगर हम असम के मुख्यमंत्री की बात सुनें तो असम के मुख्यमंत्री ने प्रेस के सामने मीडिया को संबोधित करते हुए 22 जनवरी से कुछ दिन पहले यह कहा, मैं उनके शब्द कहना चाहूँगा।... (व्यवधान) उन्होंने कहा कि देखिए 22 जनवरी को राहुल गाँधी जी ने यह इच्छा प्रकट की कि वे सुबह बोर्दोवा थान जाना चाहते हैं, लेकिन जिस समय वे वहाँ जाना चाहते हैं, प्रधानमंत्री मोदी जी अयोध्या में प्राण प्रतिष्ठा के समारोह में उपस्थित होंगे। यह बात उचित नहीं है कि जिस समय टीवी के चैनल्स पर प्रधानमंत्री मोदी जी का चित्र आए, उसी समय राहुल गाँधी जी का भी चित्र आए, यह बात गलत है।... (व्यवधान) यह आपकी धर्म के प्रति आस्था है।... (व्यवधान)

**डॉ. निशिकांत दुबे (गोड्डा):** महोदय, इससे उसका क्या लेना-देना है?... (व्यवधान)

**श्री गौरव गोगोई (कलियाबोर):** यह मीडिया पर कहाँ है? यह मैं आपको ऑथेंटिकेट कर दूँगा।... (व्यवधान) सर, मुझे पता है कि आपका विश्वास, आपका आशीर्वाद मेरे साथ है। मैं हमेशा जब भी अपनी बात रखता हूँ तो सच्चाई से रखता हूँ, ईमानदारी से रखता हूँ। मुझे अपनी बात कहते हुए कोई संकोच नहीं, क्योंकि मैं जो कहता हूँ, वह सच्ची वाणी से कहता हूँ।... (व्यवधान)

**माननीय अध्यक्ष :** वे इस सदन के सदस्य नहीं हैं।

**श्री गौरव गोगोई (कलियाबोर):** इसीलिए मैं यह कहना चाहता हूँ कि धर्म का सर्टिफिकेट क्या ये बाँटेंगे?... (व्यवधान) मंदिर में कौन जाएगा, कब जाएगा, क्या इसकी हमें इनसे अनुमति लेनी पड़ेगी? ... (व्यवधान) अगर असम के मुख्यमंत्री के शब्दों पर विश्वास रखें तो क्या मंदिर जाना एक टीआरपी बन गया है?

(1150/IND/PS)

अध्यक्ष जी, क्या प्राण प्रतिष्ठा टीआरपी बन गया है? प्राण प्रतिष्ठा में बहुत लोग थे, यह उनकी श्रद्धा है। उस समय राहुल गांधी जी भी असम में थे।...(व्यवधान) उनकी श्रद्धा में वहां की सरकार ने बाधा क्यों डाली? हमें अपने संस्कारों पर, कर्तव्यों पर चलने में बाधा क्यों उत्पन्न की जा रही है?...(व्यवधान)

**डॉ. निशिकांत दुबे (गोड्डा):** अध्यक्ष जी, जहां गैर हिंदुओं का प्रवेश वर्जित है, वहां गैर हिंदू कैसे जा सकता है? ये मक्का जाएं या पुरी जाकर हमें दिखाएं।...(व्यवधान)

**श्री गौरव गोगोई (कलियाबोर):** महोदय, मैं दोबारा याद करा देता हूं कि हमारे देश में अनेक धर्म हैं। हमारे देश में अनेक ग्रंथ हैं। हमारे देश में अनेक पैगम्बर हैं, लेकिन यदि कोई शासन का ग्रंथ है, तो शासन का ग्रंथ एक ही है और वह यह संविधान है।...(व्यवधान) धर्म के अनेक ग्रंथ हैं लेकिन शासन का केवल एक ग्रंथ यह संविधान है।...(व्यवधान) हिंदू धर्म में अनेक वेद हैं, हिंदू धर्म में अनेक

उपनिषद हैं लेकिन भारत के लोगों ने शासन के लिए एक ही ग्रंथ को चुना है और वह संविधान है। संविधान के संरक्षण में आज मैं दोबारा कहना चाहूंगा कि राम राज्य...(व्यवधान) इतनी कटुता क्यों? 'जय श्री राम' कहते हुए इतनी कटुता क्यों? मर्यादा पुरुषोतम राम को नमन करते हुए इनकी वाणी में इतनी हिंसा और घृणा क्यों है? आप राम भक्त हो ही नहीं सकते, यदि आपके अंदर घृणा हो।...(व्यवधान) आप राम भक्त हो ही नहीं सकते, यदि आप नफरत फैलाते हैं। आप राम भक्त हो ही नहीं सकते, यदि आप दूसरे पर गोली चलाते हो। आप राम भक्त हो ही नहीं सकते, जब आप दूसरे के धर्म के अनुष्ठान को आप कलंकित करते हो।...(व्यवधान) हमारे लिए ग्रंथ एक ही है और इसमें लिखा है कि हम भारत के लोग भारत को एक सम्पूर्ण प्रभुत्व, सम्पूर्ण समाजवादी, पंथ निरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनाने के लिए तथा उसके समस्त नागरिकों को सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता। मैं दोबारा इसे पढ़ना चाहूंगा क्योंकि आपके शब्दों से लगता है कि आप संविधान में डॉ. भीमराव अम्बेडकर जी के मूल निर्देश ही भूल गए।...(व्यवधान) मैं दोबारा पढ़ना चाहूंगा क्योंकि आपके अंदर इतनी घृणा है।... (व्यवधान) जब मैंने ये शब्द पहली बार पढ़े, तो ये आपके हृदय में नहीं गए होंगे। मैं दोबारा आपके लिए पढ़ता हूं।...(व्यवधान) न्याय, सामाजिक, अर्थिक, राजनैतिक, स्वतंत्रता, विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म, उपासना, समता, प्रतिष्ठा और अवसर। इसी के प्रति हम निष्ठा और दायित्व स्वीकार करते हुए, आज यहां जो राम मंदिर और रामलला की प्राण प्रतिष्ठा पर नियम 193 के अंतर्गत चर्चा ली है, इसमें भाग लेते हुए, मैं अपनी वाणी को विराम देता हूं। धन्यवाद। जय हिंद, जय संविधान।

(इति)

**डॉ. निशिकांत दुबे (गोड्डा):** महोदय, भारत का संविधान, यह जिस भारत के संविधान की बात करते हैं, उसके आर्टिकल 26 यह कहता है कि यह भारत का संविधान किसी भी धर्म में, किसी भी मंदिर में, किसी की पूजा पद्धति में कोई हस्तक्षेप नहीं करेगा। उस मंदिर में जो कुछ भी हुआ, उसका भारत के संविधान से कोई लेना-देना नहीं है इसीलिए शंकर देव मंदिर के लिए इन्होंने जो बातें कही हैं, यदि वहां गैर हिंदुओं का प्रवेश वर्जित है तो गैर हिंदुओं का प्रवेश वर्जित है। जैसे हम मक्का नहीं जा सकते, वैसे पुरी नहीं जा सकते और वैसे ही शंकर देव के मंदिर में नहीं जा सकते हैं।...(व्यवधान)

(1155/RV/SMN)

1155 बजे

**उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्रालय में राज्य मंत्री तथा ग्रामीण विकास मंत्रालय में राज्य मंत्री (साध्वी निरंजन ज्योति):** माननीय अध्यक्ष जी, आपने मुझे एक बहुत ही महत्वपूर्ण विषय पर बोलने का अवसर दिया, इसके लिए मैं हाथ जोड़ कर आपका बहुत-बहुत अभिनन्दन करती हूं। श्री राम जन्मभूमि में जो भव्य मन्दिर बना है, उसके लिए जो आदरणीय सत्यपाल जी का प्रस्ताव है, उसके समर्थन में बोलने के लिए मैं खड़ी हुई हूं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मुझे लगा था कि विपक्ष की तरफ से कुछ सकारात्मक विचार आएंगे, राम लला के मन्दिर में विराजित होने के बाद इन्हें सद्बुद्धि आएगी। उस राम जन्मभूमि आंदोलन से जुड़ी होने के नाते मैं आज इस नए सदन में नए प्रस्ताव को समर्थन देते हुए देश के यशस्वी प्रधान मंत्री जी का, सन्तों की तरफ से, देश की जनता की तरफ से अभिनन्दन करती हूं, वंदन करती हूं।

1156 बजे (श्री राजेन्द्र अग्रवाल पीठासीन हुए)

माननीय सभापति महोदय, गौरव गोगोई जी ने गोली चलाने की बात कही, शायद मुझे उन्हें यह याद दिलाना पड़ेगा कि कारसेवकों के साथ ऐसा करने वाले इनकी सरकार के समर्थन में रहे, इनके साथ में हैं, 'इंडिया' गठबंधन में हैं। उन कारसेवकों की छातियों से जो रक्त बहा था, मैं वहां थी जब अयोध्या की गलियां रक्तरंजित थीं, तो क्या क्या एक बार भी कभी इस कांग्रेस ने उसके लिए खेद प्रकट किया?

माननीय सभापति महोदय, यह 500 सालों का संघर्ष था। यद्यपि यहां बाहर के किसी व्यक्ति का नाम नहीं लिया जा सकता, लेकिन आज जब मैं इस प्रस्ताव पर बोलने के लिए खड़ी हुई हूं तो आज मैं श्रद्धेय स्वर्गीय अशोक सिंघल जी का स्मरण करना चाहती हूं।

माननीय सभापति महोदय, मैं महन्त अवैद्यनाथ जी का स्मरण करना चाहती हूं, मैं रामचन्द्र परमहंस दास जी का स्मरण करना चाहती हूं। मैं वर्ष 1982 की घटना का उदाहरण देना चाहती हूं। उस कुम्भ की साक्षी मैं भी थी। जो सन्त कभी छत के नीचे रहना नहीं जानते थे, जंगलों में रहते थे, पेड़ों के नीचे रहते थे, ऐसे पूज्य वामदेव जी का भी मैं स्मरण करना चाहती हूं। मैं देवराहा बाबा का भी स्मरण करना चाहती हूं, जिन्होंने कभी झोपड़ी में रहकर जीवन व्यतीत किया, लेकिन अशोक सिंघल जी के आग्रह पर उस प्रयागराज के कुम्भ में सारे सन्त राम जन्मभूमि के लिए इकट्ठे हुए। यदि इसके लिए होने वाले आंदोलन का श्रेय किसी को देना चाहूंगी तो मैं श्रद्धेय अशोक सिंघल जी को देना चाहूंगी।

सभापति महोदय, अभी विपक्ष की तरफ से बहुत चर्चा हुई। बापू जी की बात हुई। महात्मा गांधी जी ने आज़ादी के बाद यह भी कहा था कि अब आज़ादी मिल चुकी है, अब कांग्रेस को खत्म कर देना चाहिए। उसे नहीं माना गया। लेकिन, आज मैं माननीय प्रधान मंत्री जी को धन्यवाद देने के लिए खड़ी हुई हूं। आज मैं माननीय प्रधान मंत्री जी के प्रति आभार व्यक्त करने के लिए खड़ी हुई हूं। राम राज्य की बात यदि सही मायने में किसी ने लागू किया है तो उसे देश के यशस्वी प्रधान मंत्री जी ने लागू किया है।

जब राम वनवास गए, तो उस वनवास के साथी कौन थे? क्या आपको यह याद नहीं था? क्या यह आज याद आया? क्या जब राम जन्मभूमि मन्दिर निर्माण का धन्यवाद प्रस्ताव आया, तब आपको वनवासी याद आए, आदिवासी याद आए, बिरसा मुंडा याद आए?... (व्यवधान)

(1200/GG/SM)

आप चिंता मत कीजिएगा, मुझे बोलने का मौका दीजिएगा। … (व्यवधान)

HON. CHAIRPERSON (SHRI RAJENDRA AGRAWAL): No, you cannot comment like this.

**श्री गौरव गोगोई (कलियाबोर):** सर, हमें वनवासी शब्द से आपत्ति है। … (व्यवधान)

**साध्वी निरंजन ज्योति :** आप क्या बोलेंगे, आपके अस्तित्व में राम थे ही नहीं। नासा के वैज्ञानिकों ने शोध किया कि राम सेतु है, आपने उसको भी नकारा। … (व्यवधान)

**माननीय सभापति :** ट्राइब्स शहरों में भी हो सकते हैं। ग्राम में रहते हैं, वे ग्राम वासी हैं, वन में रहते हैं, वनवासी हैं। यह टैरिटोरियल शब्द है। यह वर्ग से संबंधित नहीं है। यह टैरिटरी से संबंधित शब्द है। नगरवासी, ग्रामवासी, वनवासी इस प्रकार से है।

… (व्यवधान)

**माननीय सभापति :** आदिवासी हैं, वनों में भी हैं, गावों में भी हैं। वे भी आदिवासी हैं।

… (व्यवधान)

**साध्वी निरंजन ज्योति :** माननीय सभापति महोदय, मैं इनको याद दिलाना चाहती हूँ, जब राम का वनवास हुआ, उस समय सबसे पहले किसने साथ दिया? … (व्यवधान)

**माननीय सभापति :** क्या ट्राइबल रांची में नहीं रहते हैं? उनको आप क्या कहेंगे? वे सब जगह हैं। वनों के अंदर और भी लोग रहते हैं। यह क्षेत्र का शब्द है। यह वर्गसूचक शब्द नहीं है।

… (व्यवधान)

**साध्वी निरंजन ज्योति :** माननीय सभापति महोदय, मैं इनकी तरह पढ़ी-लिखी नहीं हूँ। … (व्यवधान) आजादी के बाद से राम के सखा को सम्मान मिलना चाहिए था कि नहीं मिलना चाहिए था? सभापति महोदय, संत की कोई जाति नहीं होती है, लेकिन शरीर भी किसी परिवार में पैदा हुआ है और मुझे गर्व है कि मैं उस निषाद समाज में पैदा हुई हूँ, जिसको मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम ने कहा था कि – 'तुम मम सखा, भरत सम भ्राता। सदा रहेहु पुर आवत जाता।' मैं उस कुल में पैदा हुई हूँ। क्या इनको श्रृंगवेरपुर नहीं दिखाई पड़ा? राम के सखा का स्थान नहीं दिखाई पड़ा? क्या इनको शबरी का स्थान नहीं दिखाई पड़ा। क्या इनको गिद्धराज का स्थान नहीं दिखाई पड़ा? क्या इनको हनुमान th का स्थान नहीं दिखाई पड़ा? मैं इस भरी सभा में अभिनंदन करना चाहती हूँ, मोदी जी देश के पहले प्रधान मंत्री हैं, देश के यशस्वी प्रधान मंत्री हैं, जिनका 56 इंच का सीना है, जिन्होंने निषाद के नाम से टिकट जारी किया। इनका 56 इंच का सीना है, जिन्होंने शबरी के नाम का टिकट जारी किया। गिद्धराज जटायू के नाम का टिकट जारी किया। राम मंदिj के नाम का टिकट जारी किया।

गोगोई जी गुरुवाणी का उदाहरण दे रहे थे, तो मुझे भी याद आ गया कि 'गुन गोबिंद गाइयो नहीं जनमु अकारथ कीनु।' सिखों के आस्था के केंद्र बिंदु को, पाकिस्तान में कैद, यदि रास्ता किसी ने दिया तो देश के यशस्वी प्रधान मंत्री जी ने दिया। यह आपको याद रखना चाहिए।

माननीय सभापति महोदय, माननीय अशोक सिंघल जी के नेतृत्व में मैं उस आंदोलन की भागीदार भी रही और मैं सौभाग्यशाली हूँ कि जिस राम जन्म भूमि का ट्रस्ट देश के यशस्वी प्रधान मंत्री जी ने बनाया, मेरे गुरुदेव, युगपुरुष स्वामी परमानंद जी महाराज उसके ट्रस्टी भी हैं।

मेरी गुरुबहन साध्वी ऋतंभरा जी को, मुझे याद है, मुझे लगता है कि वह बात बतानी जरूरी है, राम जन्म भूमि आंदोलन के समय 2003 के पहले इंदौर में, दिग्विजय सिंह की सरकार के समय गिरफ्तार किया गया था। महोदय, किसी महिला को यदि गिरफ्तार करना है तो कानून के मुताबिक दिन में गिरफ्तार किया जाता है और महिला कांस्टेबल होनी चाहिए। महोदय, रात्रि के ढाई बजे दिग्विजय सिंह की सरकार ने उन्हें गिरफ्तार किया। उनका दोष यह था कि साध्वी ऋतंभरा और हम लोग राम जन्म भूमि आंदोलन में लगे हुए थे। हमारा दोष यह था।

(1205/MY/RP)

सभापति महोदय, मुझे रात्रि ढाई बजे गिरफ्तार किया गया। 250 गाड़ियों के साथ लगा कि हमें सुरक्षित जगह ले जाया जाएगा, लेकिन वे 250 गाड़ियां इंदौर के आस-पास घूमती रहीं। मैंने एक गाड़ी अकेले लेकर, गुना की चौकी में जाकर एफआईआर लिखवायी।

सभापति महोदय, जब उस क्षण को मैं याद करती हूं तो मुझे लगता है कि इनको राम की बात करने का अधिकार नहीं है। आपको इसका अधिकार नहीं है।

सभापति महोदय, मैं उसकी भी साक्षी हूं कि कपड़ा बदल कर हम अयोध्या से गए थे। कारसेवकों की छातियों को गोलियों से भूना गया था, तब ये लोग कहां थे? मैं पूछना चाहती हूं कि ये लोग कहां थे?

सभापति महोदय, कोठारी बंधू की बहन से भी मैं मिली हूं। मुझे पश्चिम बंगाल जाने का अवसर मिला है। उन्होंने कहा कि दीदी, अभी हमारे भाइयों की आत्मा को शांति नहीं मिली है। जब देश के यशस्वी प्रधानमंत्री जी हाथ में भगवान का मुकुट लेकर राम मंदिर में प्रवेश कर रहे थे, उस समय उन कोठारी बंधुओं को सच्चे अर्थ में श्रद्धांजलि मिली।

सभापति महोदय, बोलने के लिए मेरे पास बहुत कुछ है। हमें रात्रि में गिरफ्तार किया गया था, इतना ही नहीं छोड़ा गया था, बल्कि कहीं बाथरूम तक नहीं करने दिया गया था। हमें ग्वालियर की जेल में ले जाकर बंद कर दिया गया था। हम किसी से बात नहीं कर सकते थे। शायद माननीय राजनाथ सिंह जी को एक घटना याद होगी। वह घटना मेरे दिल में कौंध गई थी, जब बुंदेलखंड के विधायक बादशाह सिंह को मुलायम सिंह जी सरकार के समय उठाकर एंकाउन्टर करने के लिए ले जाया गया था। माननीय राजनाथ सिंह जी वहां गए थे। मुझे वह बात याद आ गई कि कहीं मेरा भी एंकाउन्टर न हो जाए। क्या यही चर्चा करने का विषय है? क्या ये लोग राम राज की बात कर सकते हैं।

सभापति महोदय, मैं हाथ जोड़ कर आपसे प्रार्थना करती हूं। मैं पहली बार सदन में आई थी, मेरी बुंदेलखंडी भाषा से एक शब्द निकल गया था, पार्लियामेंट को आठ दिनों तक नहीं चलने दिया गया, क्या यही नारी का सम्मान है?

सभापति महोदय, न राम का सम्मान, न नारी का सम्मान। मुझे उस दिन बहुत पीड़ा हुई थी। आज मैं प्रधानमंत्री जी का आभार व्यक्त करना चाहती हूं। मेरे कारण मेरे प्रधानमंत्री जी को, मेरे कारण वेंकैया नायडू जी को, मेरे कारण आज के रक्षा मंत्री जी को, मेरा कारण स्वर्गीय सुषमा स्वराज जी को माफी मांगनी पड़ी थी। एक महिला के द्वारा एक शब्द निकला, उसके कारण पार्लियामेंट को घेरा गया।

सभापति महोदय, इसके लिए कौन जवाबदेह होगा, जब मौत का सौदागर माननीय प्रधानमंत्री जी को कहा गया? इसका जिम्मेदार कौन होगा, जब हमारे प्रधानमंत्री जी को जहर की पुड़िया कहा गया? यह कह दिया गया कि बाहर बोला गया शब्द है।... (व्यवधान)

गौरव गोगोई, आप मेरी बात सुन लीजिए। मैं आपकी बात सुनती रही हूं।... (व्यवधान)

माननीय सभापति महोदय, जब घाव होता है और उस पर मिर्ची लगती है तो जलन जरूर होती है और होना भी चाहिए। देश की जनता देख रही है कि तुमने राम के साथ क्या किया। वर्ष 2019 के पहले इन्हीं के वकील कोर्ट में खड़े हो गए थे कि अभी राम मंदिर के लिए न्याय नहीं होना चाहिए। आप क्या बात कर रहे हैं? आप किस मुख से राम की बात कर रहे हैं?

(1210/CP/NKL)

तुम्हारा अधिकार क्या है राम के विषय पर बात करने का, कोई अधिकार नहीं है। मैं न्यायाधीशों का सम्मान करती हूं और देश के यशस्वी प्रधानमंत्री जी का अभिनन्दन करती हूं। मैं कहना चाहती हूं, "राम मिले हैं केवट के विश्वासों में, राम मिले हैं प्रण हेतु वनवासों में।"

**माननीय सभापति (श्री राजेन्द्र अग्रवाल):** यह मेरठ के कवि हरिओम पंवार जी की पंक्ति है। मैं खास तौर से मेरठ से हूं। वे बड़े महान कवि हैं। गौरव गोगोई ने भी उन्हीं पंक्तियों को उद्धृत किया। मैं विशेष रूप से आभारी हूं कि आपने मेरठ के महान कवि, वे राष्ट्रीय कवि हैं, आपने उनका उल्लेख किया।

**साध्वी निरंजन ज्योति:**

राम मिले हैं केवट के विश्वासों में, राम मिले हैं प्रण हेतु वनवासों में।
राम मिले हैं हनुमान के सीने पर, राम मिले शबरी के जूठे बेरों पर।

महोदय, आखिरी में मैंने जोड़ा है, राम मंदिर मिला है, नरेन्द्र मोदी के 56 इंच के सीने में। राम का इतिहास यदि इन्होंने पढ़ा होता तो जो राम को नकार रहे हैं, उनको जवाब मिलना चाहिए था। रामायण फाड़ने वालों को जवाब मिलना चाहिए था, लेकिन नहीं दे सकते हैं। हमारे यहां कहावत है कि यदि छछूंदर सांप निगल लेता है तो न उगलते बनता है और न ही निगलते बनता है। इनकी वही स्थिति है। मैं कहना चाहती हूं कि रामचरित मानस पढ़ते तो राम तुम्हें भी बनना होगा, चलो राम के पदचिन्हों पर अब इतिहास बदलना होगा।

महोदय, ये गरीबों की बात कर रहे थे। मैं तो आज अपने विषय पर सीमित रहने वाली थी, लेकिन इन्होंने छेड़ दिया। जब छेड़ोगे तो हम छोड़ेंगे नहीं। मैंने कल उस हाउस में जवाब दिया। यदि इन्होंने गरीबी दूर की होती, तो आज 4 करोड़ लोगों को घर देने की हमें जरूरत नहीं पड़ती। वे कौन हैं? वही हैं शबरी के लोग, वही हैं निषाद के लोग, वही हैं जटायु के लोग, वही हैं रीछों के लोग,

जिनको समाज में पहचान मर्यादा पुरूषोत्तम भगवान के पदचिन्हों पर चलने वाले युगपुरुष नरेन्द्र मोदी जी ने दी है।

महोदय, ये कह रहे हैं कि गरीबी दूर हो गई, मुझे बड़ा आश्चर्य होता है। यह गरीबी दी किसने है? महोदय, मैं अपने बचपन की बात जरूर बताना चाहूंगी। मैं तो रामजन्म भूमि तक सीमित थी, मुझे आगे नहीं बढ़ना था। सन् 1982 में मैंने घर छोड़ दिया था। मेरे पिता दूसरों की ईटें पाथकर हम लोगों का पालन करते थे। मैं 14 साल की आयु में सन्यासी हो गई थी। श्रीमती स्वर्गीय इंदिरा गांधी जी हमीरपुर जिले में सुमेरपुर ब्लॉक में गई थीं। संत थे, सरल स्वभाव था। हमने सुना कि प्रधान मंत्री जी आई हैं। 14साल की आयु क्या होती है? पहली स्पीच थी कि हम गरीबों को घर देंगे, गरीबों को भूखे नहीं सोने देंगे। मुझे इस पर बड़ा विश्वास था। मुझे लगा कि मैं तो घर छोड़ कर चली आई, अब मेरे पिता को पक्का मकान जरूर मिलेगा। महोदय, यह नारा वर्ष 2014 तक चला। मेरा सौभाग्य है कि गरीब की बेटी को गरीबों को घर देने का अधिकार यदि किसी को दिया है तो मुझे दिया है, मेरे साइन से यह काम हो रहा है।

महोदय, सूखा पड़ा था, मेरे गांव में नहर की खुदाई हो रही थी। शायद 12 साल की आयु होगी। काम के बदले अनाज की घोषणा की गई थी। मैं भी काम पर जाती थी, इतनी मिट्टी उठाकर देती कि ज्यादा अनाज मिले। लाल जुंडी मंगाई गई थी। मेरी माता रोटी बनाकर खिलाती थी।...(व्यवधान) जुंडी मतलब ज्वार। मेरे बुंदेलखंड की भाषा है, मैं क्या करूं? हैं तो हम बुंदेलखंडी। सौ दंडी, एक बुंदेलखंडी पर्याप्त होते हैं।

(1215/NK/VR)

**माननीय सभापति (श्री राजेन्द्र अग्रवाल):** बुंदेलखंड बहुत प्यारा क्षेत्र है।

**साध्वी निरंजन ज्योति:** सभापति महोदय, मैं वह दिन याद करती हूं, मेरी माँ आटे से रोटी बनाकर खिलाती तो पूरे परिवार का पेट नहीं भर सकती थी। दलिया बना कर खिलाती थी। मैं देश के यशस्वी प्रधानमंत्री जी को आभार व्यक्त करती हूं, कोविड जैसी महामारी के समय एक भी परिवार भूखा नहीं मरा और जब काम की जरूरत पड़ी तो मनरेगा में पैसा बढ़ाकर लोगों को काम भी दिया।

महोदय, कई और वक्ता भी बोलने वाले हैं। लेकिन आज मेरा दिल अंदर से रो रहा है। इसलिए रो रहा है, जिस तरह शबरी प्रतीक्षा करते-करते बूढ़ी हो गई थी, तब राम गए थे, उसी तरह हमारे पूर्वजों की 22 पीढ़ी इस आंदोलन में खप गई, जब अयोध्या में प्रभु श्री राम भव्य मंदिर में प्रतिष्ठित हो रहे थे, भगवान के उस विग्रह को देखकर मैं उस दिन रो रही थी। देश के यशस्वी प्रधानमंत्री जी के कर कमलों से हो रहा था, मैं रो रही थी।

मेरा सौभाग्य है कि मैं आंदोलन में भी भागीदार रही, एक शंकराचार्य जी का श्लोक है। यद्यपि उन्होंने कहा कि बहुत ग्रंथ हैं,

"रुचि नाम वैचित्र्य, कुटिल नाना पथ जिस,
तृणमे को गमेच्छः वमसि, पैसा मृणव इवः।

हमारे जितने भी उपनिषद और वेद हैं, शास्त्र हैं, पुराण हैं, अष्टादश पुराण हैं,

अष्टादश पुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम्
परोपकार: पुण्याय पापाय परपीडनम्।

मोदी जी ने वह काम किया है, जो राम जी ने किया था, गरीबों की चिंता की है, पिछड़ों की चिंता की है। ओबीसी कमीशन की मांग कब से चल रही थी, यह किसने दिया, 56 इंच के सीने वाले ने दिया।

सभापति महोदय, मुझे दस मिनट समय मिला था, मैंने ज्यादा समय ले लिया। वेदांत हमारा स्वाभिमान है, मैं वेदांती गुरू की शिष्या हूं, जानती हूं,

ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या जीवो ब्रह्मैव नापर:

शंकराचार्य की परंपरा जानती हूं। जहां उनकी दृष्टि में ब्रह्मसत्य है, जगत मिथ्या है, यह संसार तीनों कालों में नहीं है। लेकिन वही देश को जोड़ने के लिए चारों मठों की स्थापना भी करते हैं। पश्चिम का व्यक्ति पूरब जाएगा, उत्तर का व्यक्ति दक्षिण जाएगा, लेकिन जब देश में उत्तर और दक्षिण की बात होती है तो दुख होता है कि शंकराचार्य जी का अपमान किया जा रहा है।

**श्री गौरव गोगोई (कलियाबोर):** शंकराचार्य जी का अपमान किसने किया?

**साध्वी निरंजन ज्योति:** सभापति महोदय, वेदांत हमारा स्वाभिमान, श्रेष्ठता हमारी सीता है, रोज हमारी रामायण, हर स्वांस हमारी गीता। जब तक होती शांत हृदय में, इसको बहुत गंभीरता से सुनिए, इनकी सरकार के समय में मेरे सैनिकों के सर कत्ल करके पाकिस्तान ले गये थे, लेकिन मेरे प्रधानमंत्री जी के 56 इंच के सीने ने घर में घुसकर मारा।

जब तक होती है शांत हृदय में,
तब तक होते हैं केवल भारत के,
प्रलय युद्ध छिड़ जाता है,
तब हो जाता है महाभारत।

सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से प्रधानमंत्री जी को हम करते हैं अभिनंदन, ऐसे प्रधानमंत्री जी को हम करते हैं वंदन, सभी साधु-सतों की तरफ से बारंबार करती हूं अभिनंदन।

जय श्री राम।

(इति)

(1220/SAN/SK)

1220 hours

SHRI MADDILA GURUMOORTHY (TIRUPATI): Hon. Chairperson, Sir, at the outset, I would like to speak a few points about Lord Rama and the importance of the eternal teachings of Lord Rama.

Lord Rama's life, as depicted in the Ramayana, serves as a moral compass, illustrating the virtues of righteousness, leadership and compassion. His adherence to *dharma*, despite formidable challenges, underscores the importance of duty and moral integrity. As an epitome of good governance, his reign, termed as 'Ram Rajya', epitomizes justice, welfare and happiness for all, setting a gold standard for leadership.

His life is a testament to following one's duty and righteousness even in the face of severe trials and tribulations. Lord Rama's rule in Ayodhya, known as Ram Rajya, is idealized as the epitome of good governance, where justice and prosperity prevailed, and all citizens were happy and content. His leadership was marked by fairness, compassion, and the welfare of his people above all else.

His teachings, deeply embedded in the Indian culture and consciousness, continue to inspire and guide humanity towards a virtuous and meaningful existence.

The Lord Venkateshwara Temple at Tirupati is one of the famous temples in our country, which is in my parliamentary constituency. One of the seven hills is called Anjanadri Hill, which is supposed to be Hanuman Janmabhoomi.

Apart from Anjanadri, there is Lepakshi in Andhra Pradesh which translates to 'Rise, oh bird', a name given in the honour of Jatayu. Jatayu is celebrated for its brave battle against Ravana while he was abducting Goddess Sita and taking her to Lanka in his Pushpaka Vimana. Lepakshi marks the spot where Jatayu plummeted after sustaining severe injuries from Ravana during Sita's abduction. This location is referenced in the Ramayana. Lepakshi, known for its connection with Ramayana, stands as a testament to the wide-spread reverence of Lord Rama's legacy.

Developing these sites would not only enhance India's cultural heritage tourism but also reinforce the bonds of unity and spirituality that Lord Ram inspires. Like Tirupati Temple, this monument has to be a pillar of unity, and economic resurgence.

We also request the Government for an overall infrastructure development and better connectivity to all religious sites, especially increased number of flights and train services.

Sir, 5.3 million pilgrims visit Tirupati Temple annually. Except from Hyderabad and only one flight from Bangalore, there are no direct flights to Tirupati from major metropolitan cities of India. Apart from that, airfares are extremely high and become unaffordable during peak season time. I would like to request the Government to take steps to increase the number of flights and train services to Tirupati, which is my parliamentary constituency.

Also, the development of Tirupati Bus Terminal as Inter-Modal Station needs to be expedited, which is pending with the National Highways Logistics Limited for the past eight months.

Sir, before concluding, let us champion the comprehensive development of all religious sites nation-wide, further enriching our cultural heritage and thereby strengthening the fabric of our society. This endeavour is not merely about honouring our past; it is about building a legacy of unity, faith and prosperity for the future.

Thank you.

(ends)

1224 बजे

**श्री रामप्रीत मंडल (झंझारपुर):** माननीय सभापति जी, आपने मुझे नियम 193 के अंतर्गत 'ऐतिहासिक श्री राम मंदिर के निर्माण और श्री रामलला की प्राण प्रतिष्ठा' चर्चा में भाग लेने का अवसर दिया, इसके लिए मैं आपका आभार व्यक्त करता हूं।

सभापति जी, श्रीराम जी को 'मर्यादा पुरुषोत्तम' कहा जाता और पूरे भारत में इनका नाम इ़ज़्ज़त से लिया जाता है।

(1225/MK/SNT)

अगर बच्चा पैदा होता है, तब भी राम का नाम लिया जाता है। लोगों के अंतिम समय में भी राम का नाम लिया जाता है। राम कण-कण में बसे हुए हैं। राम लोगों के दिल में बसे हुए हैं। रामलला की मूर्ति का अनावरण और मंदिर का निर्माण करके हमारे माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने जो ऐतिहासिक काम किया है, वह काबिले तारीफ है।

**माननीय सभापति (श्री राजेन्द्र अग्रवाल):** आपका शुभ नाम भी राम से प्रीत करने वाला है। आपका नाम रामप्रीत है।

**श्री रामप्रीत मंडल (झंझारपुर):** महोदय, आज माननीय प्रधान मंत्री जी का और भारत का नाम केवल भारत में ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया में इज्जत के साथ लिया जाता है। मैं मिथिला वासी हूं। मैं मिथिला से आता हूं और मिथिला का संबंध राम और सीता से जुड़ा हुआ है। हम लोग कहते हैं कि राम की शादी मिथिला में हुई थी, जो सर्वविदित है और लोग जानते हैं। हमारे यहां मिथिला की नारी गाना गाकर उनका स्वागत करती हैं, जिसको मैं मैथिली भाषा में बताना चाहता हूं-

ए पहुना एही मिथिले में रहु ना,
जउने सुखवा मिथिला में,
तउने सुखवा कहूं ना,
ऐ पहुना एही मिथिले में रहु ना।

आदरणीय सभापति महोदय, मैं माननीय प्रधान मंत्री जी से आग्रह करना चाहता हूं कि सीता के बिना राम अधूरे हैं। जिस तरह से माननीय प्रधान मंत्री ने अयोध्या में राम मंदिर बनाकर एक इतिहास बनाया है, मैं आपके माध्यम से, इस सदन से और माननीय प्रधान मंत्री जी से आग्रह करना चाहता हूं कि एक भव्य मंदिर हमारे सीतामढ़ी में भी बनाएं, जहां माँ जानकी का जन्मस्थल है।

महोदय, 22 जनवरी को जो ऐतिहासिक काम हमारे माननीय प्रधान मंत्री जी ने किया, जो लोग वहां जाने से डरते थे, आज सभी के दिल में राम बसे हुए हैं। राम कण-कण में बसे हुए हैं, राम लोगों के हृदय में बसे हुए हैं।

महोदय, 22 जनवरी को हमारे बिहार में, जिस तरह से दीवाली पर्व मनाई जाती है, उसी तरह से सभी घरों में दीवाली मनाई गई और राम की फोटो लगाकर लोगों ने पूजा की। इसके लिए मैं दिल से माननीय प्रधान मंत्री का आभार व्यक्त करता हूं।

महोदय, राम जी के आदर्श को पूरा विश्व मानता है। मैं यही कहूंगा कि उनके आदर्श पर चलने के लिए हम सब सहभागी बनें। राम का आदर करें। राम के विषय में यदि कोई अनर्गल बात करते हैं तो यह गलत बात है। मैं आपके माध्यम से आग्रह करना चाहूंगा राम पवित्र हैं। राम कण-कण में हैं।

महोदय, मैं आपको व्यक्तिगत बात बता रहा हूं, मैं नागालैंड में नौकरी करता था। मेरा नाम रामप्रीत है। मेरे माँ-बाप ने मेरा नाम रामप्रीत रखा। नार्थ-ईस्ट के लोग राम के बारे में कम जानते थे। वहां के लोग बोलते थे, what is your name. I said: “My name is God Love Mandal”, गॉड मतलब राम और लव मतलब प्रीत। उस दिन से वहां के लोग भी राम की पूजा करने लगे।

महोदय, मुझे कहना तो बहुत कुछ है, लेकिन मैं यही कहना चाहूंगा कि अगर राम का मंदिर अयोध्या में बना है तो बिहार के सीतामढ़ी में, जो सीता जी की जन्मभूमि है, वहां भी एक भव्य राम मंदिर बनाया जाए। मुझे आशा है कि इस विषय का सभी लोग हाथ उठाकर और थपड़ी बजाकर स्वागत करेंगे। आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

(इति)

(1230/SJN/AK)

1230 बजे

**श्री प्रताप चंद्र षडङ्गी (बालासोर) :** अधिष्ठाता महोदय, मैं आपका आभार व्यक्त करता हूं। इस विषय में मेरा श्रद्धा निवेदन करने के लिए, श्रीराम जन्मभूमि में जो प्राण प्रतिष्ठा हुआ है, मुझे उस विषय पर चर्चा करने का मौका देने के लिए मैं आपके प्रति कृतज्ञता प्रकट करता हूं।

मर्यादा परुषोत्तम भगवान श्रीरामचन्द्र को आज कुछ लोग राजनीति के कठघरे में बंदी करने का दुष्प्रयास करते हैं, परंतु यह संभव नहीं होगा। इस देश के नस-नस में राम विराजमान करते हैं। जब बच्चा पैदा होता है, तो उसके कान में राम नाम बोला जाता है। जब हम थक जाते हैं, तो राम-राम कहते हैं। अभिनंदन करते समय जय श्रीराम कहते हैं और मरने के समय 'राम नाम सत्य है', यह कहकर हम जाते हैं।

"वही राम दशरथ का बेटा, वही राम घट घट में लेटा,
वही राम जगत पसारा, वही राम सबसे न्यारा।"

राम एक मर्यादा का प्रतीक है। हमारे देश ही नहीं, बल्कि पूरे विश्व में भगवान श्रीराम सर्वोच्च चरित्रवत्ता के आदर्श हैं। आदर्श पुत्र, आदर्श भ्राता, आदर्श प्रजानुरंजक राजा, कुशल समाज संगठक और आदर्श तत्ववेत्ता के रूप में श्रीराम जी ने एक अद्भुत आदर्श प्रतिष्ठा किया, जो अतुलनीय है, अनुपम है, असाधारण है।

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री रामचन्द्र को साम्प्रदायिकता के कठघरे में बंदी करने वाले लोगों की इस देश में कमी नहीं है। कुछ लोगों ने तो कहा है कि भगवान श्रीरामचन्द्र जी के जन्म स्थान पर एक शौचालय बना दिया जाए। क्यों? क्योंकि विदेशी आक्रांता बाबर को इस देश के अनन्य राष्ट्रपुरुष राम के साथ बराबरी करने वाले इतिहास का उनको सामना करना पड़ेगा।

अधिष्ठाता महोदय, भगवान श्रीराम का अनुपम दिव्य चरित्र, उनका जीवन, त्याग, सेवा, सत्यनिष्ठा, चरित्रवत्ता, परदुख का हर्ता और प्रजानुरंजन के सर्वश्रेष्ठ आदर्श हैं। वे सामाजिक समरसता और राष्ट्रीय एकात्मकता का प्रतीक भी हैं। चंडाल से ब्राह्मण तक सर्वत्र उनका प्रेम का वारिक प्रवाह है। "अचंडाला प्रतिहरतियो ही यस्य प्रेम प्रवाह" और भगवान श्रीरामचन्द्र को छोड़कर कोई छद्म धर्मनिर्पेक्षता का आश्रय लेकर इस राष्ट्र का पुनरुद्धार नहीं हो सकता है। उन्होंने क्या किया? उनके समय में इस समाज में एक प्रकार से विभाजन की चरम परिस्थिति आ गई थी। आर्य संस्कृति, सावर संस्कृति, निषाद संस्कृति, राक्षस संस्कृति, ऐसे कई प्रकार के विभाजन थे, लेकिन श्रीराम ने इसको जोड़ दिया।

श्रीराम का आविर्भाव क्यों हुआ? रावण को मारने वाले, रावण को परास्त करने वाले, उस समय ऐसी कई विभूतियां थीं। बाली ने उसको अपने कोख में छः महीने तक जागकर चला था, रावण उनके सामने कुछ नहीं है। उनका बेटा अंगद, उसके साथ फुटबॉल की तरह खेलता था। वह भी कुछ नहीं है। कार्तवीर्य नामक एक महावीर था, जिनको सहस्त्रार्जुन कहते हैं, वह रावण को बराबर उठवश करता था। उनके सामने रावण का पराक्रम कुछ नहीं था। भगवान परशुराम जी,

जिन्होंने 21 बार इस व्यक्ति को क्षत्रिय शून्य कर दिया, उन्होंने कार्तवीर्य को भी मार दिया, उनके सामने भी रावण का पराक्रम कुछ नहीं है, फिर भगवान राम की क्या आवश्यकता थी?

समाज में जिस जड़ता के कारण, जिस खामोशी के कारण, जिस स्वार्थपरता के कारण, जिस भीरुता के कारण रावण पैदा होता है, उसको दूर करने के लिए, समाज को संगठित करने के लिए भगवान राम का आविर्भाव हुआ था। भगवान राम अयोध्या से कोई क्षत्रिय सेना लेकर नहीं गए थे। दशरथ जैसे महावीर ने देवासुर संग्राम में देवताओं की मदद की, राक्षसों को परास्त किया, तब ये भी थे। जनक जैसा ब्रह्मज्ञानी थे, राजर्षि थे। ये सारे महावीर बाली, सहस्त्रार्जुन और परशुराम थे, परंतु रावण के अत्याचार से समाज की रक्षा नहीं की जा सकती थी, क्योंकि उनके टेररिस्ट आउटफिट्स के द्वारा वह समाज में अत्याचार फैलाता था।

जैसे अलकायदा का लादेन था, जैसे आईएसआईएस है। उनके सैकड़ों टेररिस्ट आउटफिट्स हैं। बोड़ो, हिज़बुल मुजाहिद्दीन, जेकेएलएफ, ये सब हैं। रावण के कई टेररिस्ट आउटफिट्स के सरदार कौन थे? ताड़का, शूर्पणखा, मारीच, सुबाहु, हजारों राक्षसी सेना लेकर समाज में गोरिल्ला युद्ध करके आतंकवाद फैलाते थे। ऋषियों के यज्ञकुंड को विध्वस्त करते थे। सामान्य जनता को अत्याचारित करते थे। सनातन मूल्यबोध को खत्म करने में लगे रहते थे। कुछ लोग भयंकर भ्रम पैदा करते हैं।

इसमें हिन्दू-मुस्लिम का कोई विवाद नहीं है। इसमें उत्तर-भारत और दक्षिण भारत का कोई विवाद नहीं है। ये क्यों करते हैं? उनके धर्मपिता अंग्रेजों ने जिस देश पर शासन करने के लिए जो भ्रम फैलाते रहे, उसको चलाते हैं। ये क्या है? उत्तर भारत में तुम आर्य हो, दक्षिण भारत में तुम द्रविड़ हो। रावण एक आर्य संतन था, विश्रवा ऋषि का नंदन था, सर्वश्रेष्ठ वेदज्ञ ब्राह्मण था। भगवान श्रीराम ने उनका पुरोहित पद में वरण किया था।

(1235/SPS/UB)

यह गलत है, यह अनएतिहासिक है, यह सत्य पर आधारित नहीं है। परंतु, ऐसा क्यों करते हैं? ऐसा हमारे राष्ट्र जीवन को तोड़ने के लिए करते हैं। भगवान श्री राम ने उत्तर-दक्षिण, पूर्व-पश्चिम को जोड़ दिया। इतने पराक्रमी लोग रावण को शास्ति नहीं दे सकते थे, नियंत्रित नहीं कर सकते थे, परंतु हमारे देश के एक मनस्वी, तपस्वी जिन्होंने अपनी साधना की गुहा से निकलकर, माला छोड़कर भाला पकड़ लिया। इस देश के तारुण्य के अनन्य प्रतिनिधि दो किशोरों राम और लक्ष्मण के हाथ में धनुष बाण पकड़ा दिया, तब रावण के साम्राज्य में भूंकप आ गया। 'निसिचर हीन करउँ महि भुज उठाइ पन कीन्ह'। जब उन्होंने यह प्रण कर लिया, तब रावण कांपने लगा, लंका कांपने लगी, सारी आसुरी शक्तियां कांपने लगी। यह कौन है? ये असाधारण विभूति बालक कौन हैं? इन्होंने रावण को चेतावनी दे दी कि अब तुम्हारा जमाना खत्म होने वाला है।

अधिष्ठाता महोदय, माननीय नरेन्द्र मोदी जब कुर्सी पर आए तो उन्होंने कहा कि हम न खाएंगे, न खाने देंगे। यह जानकर कुछ लोग चकित हो गए, उनका जीवन त्राहि-त्राहि हो गया। वे कहते थे कि हम भी खाएंगे, कर्मियों को खिलाएंगे और जनता को लूटेंगे। वे अचंभित हो गए। यह क्या हुआ, राजनति में नया कल्चर आ गया। भगवान श्री राम भारत की एकात्मकता के आदर्श थे।

वह सामाजिक न्याय के प्रतिष्ठाता थे। उन्होंने क्या किया, वे जंगल में वनवास के लिए क्यों गए, वह पितृ सत्य पालन करने के लिए गए। पितृ सत्य किसलिए, क्योंकि उनकी विमाता कैकेयी ने दशरथ को बाध्य किया था। उन्होंने विमाता को बहुत सम्मान दिया। उन्होंने कहा कि मां, आप मेरी परम कल्याणकारिणी हो। मेरा छोटा भाई भरत राजा बनेगा, मैं जंगल में ऋषियों की सेवा करूंगा और मुझे देश को जानने का मौका मिलेगा। राम का कितना सकारात्मक व्यवहार था और वे जंगल में चले गए। लोगों ने उनको बहुत समझाया। गुरु वशिष्ठ और भरत ने जाकर समझाया, परंतु राम को विचलित नहीं कर सके। वशिष्ठ ने बोला कि मैं गुरु हूं, तुम्हें मेरे आदेश का पालन करना है और तुम्हें वापस जाना है। भगवान राम बोले कि मैं आपके आदेश का पालन अवश्य करूंगा, अगर आप सत्य बोलेंगे कि शास्त्र, वेद, श्रुति सारे अध्यात्म के आधार पर आप जो उपदेश देते हैं, ग्रहणीय है, सत्य के आधार पर है, तो मैं मानूंगा। गुरु वशिष्ठ परास्त होकर वापस आ गए। प्रज्ञा के अधिष्ठान प्रतिष्ठित इस महापुरुष ने 14 साल के वनवास में इस राष्ट्र को समझा। अत्याचारित वनवासी उनकी सेना में शामिल हुए थे, वे कौन थे? वे वानर, भल्लग, रीछ, भील, किरात, सब समाज के उपेक्षित वर्ग थे। उनको श्री राम ने सम्मान दिया। उन सबका आलिंगन किया और उनको सामाजिक प्रतिष्ठा दिला दी। पतिता अहिल्या की सेवा ग्रहण की, कैवर्त की सेवा स्वीकार की। उन्होंने अहिल्या का उद्धार किया। जो शबरी थी, राम ने शबरी का उच्छिष्ट स्वीकार करके सामाजिक समरसता क्या होती है, वह भाषण में नहीं, आचरण में प्रदर्शित किया। अयोध्या के राजा राम जो पितृ सत्य पालन करने के लिए स्वर्ण सिंहासन को छोड़कर चले गए। भरत जी उनको वापस लाने के लिए गए थे और उन्होंने भी सिंहासन स्वीकार नहीं किया। यही राम राज्य की महिमा है। उन्होंने पादुका पूजन की और राम राज्य के आदर्श को स्थापित किया।

जब भगवान श्री राम पर्वत पर गए। वहां भगवान श्री राम सुग्रीव के साथ बैठे थे। वहां पर विभीषण आए। उसने रावण को सत्य का उपदेश दिया, वह नहीं माना तो यहां आ गए। भगवान श्री राम ने क्या किया, उन्होंने बोल दिया कि बैठो लंकेश। सुग्रीव ने बोला कि आपने यह क्या कर दिया, उनको लंकेश बोल दिया। अगर रावण सीता माता को समर्पित करके क्षमा याचना करेगा तो आप क्या करेंगे। राम ने अचानक बोल दिया कि कुछ प्रॉब्लम नहीं है, कुछ समस्या नहीं है, मैं रावण को अयोध्या दे दूंगा और लंका में विभीषण का राज्याभिषेक कराऊंगा।

"रघुकुल रीत सदा चली आई प्राण जाई पर वचन न जाई।"

भगवान श्री राम ने यह बोल दिया। भगवान श्री राम साम्राज्यवादी नहीं थे। जब लंका पर विजय प्राप्त की तो उसे अपने साम्राज्य में नहीं मिलाया, वहां पर विभीषण का अभिषेक किया। उन्होंने किष्किंधा पर विजय प्राप्त की तो उसे अपने साम्राज्य में नहीं मिलाया, वहां पर सुग्रीव का अभिषेक किया। भगवान श्री राम कभी तलवार के बल पर विश्वास नहीं करते थे, लेकिन जब तलवार की जरूरत होती है तो उसको भी नहीं छोड़ते थे। जब पराक्रम को प्रकट करने की जरूरत होती है तो उसको मान लेते हैं।

(1240/MM/SRG)

अधिष्ठाता महोदय, भगवान श्री राम ने लंका पर विजय प्राप्त की और विभीषण को बोले –

सकृदेव प्रपन्नाय तवास्मीति च याचते ।
अभयं सर्वभूतेभ्यो ददाम्येतद्व्रतं मम ॥

यदि कोई एक बार बोल देता है कि मैं तुम्हारा हूं तो उनको तीनों लोक में अभय प्रदान करना हमारा धर्म है। शरणागत वत्सल श्री राम से हमें यह सीखना चाहिए। देश प्रेम क्या है? जब श्री राम ने रावण का वध किया तो कुल नारी का अपमान नहीं किया। सबको सम्मानपूर्वक व्यवस्थापित किया। वध करने के पश्चात विभीषण और लक्ष्मण बोले – हे प्रभु! आप इस स्वर्णिम लंका पर शासन करें, हम आपकी सेवा करेंगे। भगवान श्री राम की आंखों से आंसू आ गए। वह बोले –

अपि स्वर्णमयी लंका न मे लक्ष्मण रोचते।
जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी॥

लक्ष्मण ये क्या है? स्वर्णपुरी लंका में मेरा कोई आग्रह नहीं है। मैं अयोध्या का स्वर्ण सिंहासन सत्य के लिए छोड़कर आया हूं और आज जन्मभूमि मुझे पुकारती है, मुझे जाना पड़ेगा। इसमें मेरी कोई रुचि नहीं है। विदेशी बैंक में हजारों करोड़ रुपये रखने वाले, इस देश को तोड़ने वाले, इस देश को लूटने वाले भगवान श्री राम के देश प्रेम की इस लहर को समझ नहीं पाएंगे।

अधिष्ठाता महोदय, भगवान श्रीराम आ गए। स्वर्णपुरी लंका को छोड़कर आ गए। अयोध्या में प्रवेश हुआ। अयोध्या में उनका राज्याभिषेक हुआ। राज्याभिषेक में क्या हुआ? प्रजा वर्ग बैठे थे। भगवान श्री रामचंद्र ने अभिषेक उत्सव में उद्बोधन दिया-

"स्नेहं दयां च सौख्यं च, यदि वा जानकीमपि,
आराधनाय लोकस्य मुञ्चतो नास्ति मे व्यथा"

स्नेह, दया, सुख, स्वच्छांदय, यदि प्रयोजन होता है तो मैं माता जानकी को भी विसर्जित कर सकता हूं। किसलिए, प्रजा की अराधना के लिए। आराधनाय लोकानाम, राजा प्रजा का अराधन करेगा, राम राज्य में यही उलटी रीति है। प्रजा राजा का नहीं, और मान्यवर नरेन्द्र मोदी के राज्य में क्या होता है? मान्यवर नरेन्द्र मोदी जी के राज्य में भी राजा प्रजा की अराधना करता है। गरीबों की अराधना करता है। माताओं की अराधना करता है। युवाओं की अराधना करता है। जनसाधारण की अराधना करता है। मैं राष्ट्र का प्रधान मंत्री नहीं, प्रधान सेवक कहने वाला और झाड़ू पकड़ने वाला, झाड़ू से सफाई करने वाला प्रधान मंत्री हमारा गौरव है। यह राम राज्य का आदर्श है। रिक्शा वाले से लेकर राष्ट्रपति तक झाड़ू पकड़वाने वाले हमारे गौरवशाली और यशस्वी प्रधान मंत्री श्रीमान नरेन्द्र मोदी रामचन्द्र जी के पदचिह्नों पर चलने वाले हैं। इसलिए राम मंदिर प्रतिष्ठा कोई सामान्य मंदिर नहीं है। जन्म स्थान में प्रतिष्ठा को लेकर कुछ लोगों ने सवाल उठाया। यहां राम पैदा हुए, क्या इसका कोई प्रमाण है? क्या किसी दूसरे महापुरुष के बारे में ऐसा बोल सकते हो? आपके जन्म का क्या प्रमाण है? क्या माता-पिता का डीएनए टेस्ट करके आपने उन्हें माता-पिता बोला। भगवान श्री रामचन्द्र हमारी आस्था हैं। इस राष्ट्र की अस्मिता, अभिमान, स्वाभिमान हैं। इसके बारे में ऐसा सवाल उठाने का तुमको क्या अधिकार है। प्रश्न यह है कि उधर मंदिर था या नहीं था, यह साबित हो गया है। हिस्ट्रीकल एविडेंस, ज्योग्रीफिकल एविडेंस,

साइंटिफिक एविडेंस, डाक्यूमेंट्री एविडेंस, सारे प्रमाणों के आधार पर मान्यवर आदालत ने यह राय दी कि उधर मंदिर था और मंदिर रहेगा।

मुझे याद है, हर बार कार सेवा में मैं गया था। वर्ष 1990 में भी गया था और वर्ष 1992 में भी गया था। मुझे इस पर गर्व है। वर्ष 1992 में पुलिस लाठीचार्ज में घायल होकर मैं वहां पड़ा था। यह कार सेवा जिन्होंने की और इससे पहले पांच लाख लोगों ने 500 सालों में बलिदान दिया, आज उनकी अंतरात्मा को शांति मिलेगी। नरेन्द्र मोदी जी ने एक असंभव कार्य किया। मैं अदालत को भी धन्यवाद देता हूं। अगर मान्यवर नरेन्द्र मोदी का शासन नहीं होता, यहां कांग्रेसियों का शासन होता तो मैं गारण्टी के साथ बोल सकता हूं कि राम मंदिर नहीं बनता। क्यों? मान्यवर कपिल सिब्बल ने कितनी बार केस की हियरिंग को डिले करने के बारे में बोला। 139 साल इस केस में चले गए। कितने लोग मारे गए, लेकिन उनको शांति नहीं मिली। इसको डिले करने के लिए बोले। मान्यवर मोदी जी के कारण, प्रतिदिन, 40 दिन तक सुनवायी हुई और इसमें फैसला आया। जो फैसला आया, उसका स्वागत सारे देश ने किया। पूरे विश्व ने उसका स्वागत किया। बिना रक्तपात हुए, शांतिपूर्वक, समाज में भातृभाव रखते हुए मंदिर का निर्माण हुआ।

सर, यह मंदिर कोई सामान्य मंदिर नहीं है। यह मंदिर हमारा राष्ट्र मंदिर है। जिन-जिन मूल्य बोध के प्रतीक भगवान श्री राम हैं, उसकी तरंग इस मंदिर से छूटती है।

(1245/YSH/RCP)

सर, मैं जानना चाहता हूँ कि इस मंदिर को साम्प्रदायिक बनाने की कितनी चेष्टा की गई? मातृ भक्ति, पितृ भक्ति, गुरु भक्ति, देश भक्ति, त्याग, शरणागत वत्सलता, शक्ति और राष्ट्रीय पराक्रम, इन सबका आधार भगवान श्री राम हैं। क्या हमको यह गुणवत्ता नहीं चाहिए? समुद्र को विनय करके तीन दिनों तक भगवान राम ने प्रार्थना की कि मुझे मार्ग दिखाइए, लेकिन समुद्र ने नहीं सुना। समुद्र को सुखाने के लिए भगवान श्री राम ने धनुर्बाण निकाला कि मैं समुद्र को सुखा दूंगा तो विश्व में भूकंप आ गया। समुद्र देवता जी हाजिर हो गए और बोलने लगे कि मैं मार्ग प्रशस्त करता हूँ, आप पत्थरों की व्यवस्था कीजिए। गोस्वामी तुलसीदास की मनोरम शब्दावली में इसका वर्णन किया गया कि:

"बिनय न मानत जलधि जड़ गए तीनि दिन बीति, बोले राम सकोप तब भय बिनु होइ न प्रीति।"

सर, भारत के सैनिकों की गर्दन काटी गई, तब मान्यवर मनमोहन सिंह जी प्रधान मंत्री थे। उन्होंने गर्जना तो की, पेपर में बयान भी आया, लेकिन जब उनकी मालकिन ने निर्देश नहीं दिया तो उन्होंने कुछ नहीं किया। राष्ट्र की रक्षा के लिए भी कॉम्प्रोमाइज हुआ। इसका कारण वोट था। उसके बाद मान्यवर नरेन्द्र मोदी जी ने क्या किया? चाहे पुलवामा हो, उरी हो, उसका जवाब सर्जिकल स्ट्राइक के माध्यम से दिया गया।

अभी पाकिस्तान और म्यांमार में घुसकर हमारे सैनिक सर्जिकल स्ट्राइक करके वहां पर आतंकवादी शिविर को ध्वस्त करके आ गए। सन् 1962 में क्या हुआ था? चीन का शासक भारत के प्रधान मंत्री को चेतावनी देते हुए कहा कि मोदी जी तुम क्या कर रहे हो? हमने तुम्हारे 20

सैनिकों को मारा तो तुमने हमारे 43 सैनिकों को मार दिया। क्या तुम जानते हों कि हमारी ताकत क्या है? क्या तुम 1962 को भूल गए? मोदी जी ने कहा कि हम नहीं भूले, लेकिन शायद तुम भुल गए हो। सन् 1962 से अब तक गंगा नदी में बहुत पानी चला गया है। अब मार खाकर गाल दिखाने वाले प्रधान मंत्री नहीं है, अब ईट का जवाब पत्थर से देने वाला प्रधान मंत्री है। हम किसी को नहीं छेड़ेंगे, लेकिन हमें जो छेड़ेगा, उसे हम नहीं छोड़ेंगे।

श्रीराम जी के चरित्र में गोस्वामी तुलसीदास, महामुनि वाल्मिकी क्या बोले? "मृदुनि कुसुमादपि, वज्रादपि कठोराणि", वे श्रीराम चंद्र जी के चरित्र के बारे में बोलते हैं कि कुसुम से कोमल है और व्रज से कठोर है। राजा, प्रजा, धनी, निर्धन, मूर्ख, विद्वान, ब्राह्मण, चाण्डाल, सभी के साथ यथायोग्य व्यवहार करने वाले भगवान श्रीराम चन्द्र थे। जब धर्म के ऊपर आघात आता है, राष्ट्र के ऊपर आघात आता है, तब वे प्रलय का शक्ति प्रदर्शन करते हैं।

आदरणीय नरेन्द्र मोदी जी भाईचारे का संदेश देने वाले भी हैं और राष्ट्र की सीमा पर स्पर्श करने पर प्रलय करने वाली ताकत भी रखते हैं। भगवान श्रीराम चन्द्र अयोध्या से कोई ब्राह्मण-क्षत्रिय सेना लेकर नहीं गए थे। आतंकवाद का दमन करने के लिए बुलेटप्रूफ कार में नहीं गए थे। उन्होंने जंगल में अत्याचारित वनवासियों की मूल शक्ति को जानकर, उनको जगाया, झकझोर दिया, तब उन्होंने हर वनवासी की शक्ति के सहारे रावण समेत समस्त आसुरी साम्राज्य को खत्म कर दिया। पूरे राष्ट्र को उत्तर-दक्षिण, पूर्व-पश्चिम तक अपने श्वेत छत्र के नीचे आने दिया और उसमें साम्राज्यवाद का कोई लेना-देना नहीं है, वह भारत का सांस्कृतिक सम्राट बन गया।

उनके जन्मस्थान पर मंदिर था। वह किसने बनवाया था? उनके जन्मस्थान पर मंदिर उनके पुत्र कुश ने बनवाया था, जो कौशाम्बी के राजा थे। इस मंदिर को 1033 में एक विदेशी आक्रांता ने तोड़ दिया था। उसके बाद भगवान श्रीराम के मंदिर का निर्माण करने के लिए गड़वाल के राजाओं ने बहुत कोशिश की और एक भव्य मंदिर बना दिया। जब इस मंदिर को तोड़ा गया तो सारे हिंदुओं ने मिलकर इसका विरोध किया। एक दिन भी नहीं छोड़ा। बहुत रक्तपात हुआ। फिर सन् 1528 में विदेशी आक्रमणकारी बाबर ने अपने सेनापति मीर बाकी खान को भेजकर मंदिर को ध्वस्त करवाया। उसके बाद भी समाज ने इसको स्वीकार नहीं किया। लगातार 500 सालों तक इस मंदिर को मुक्त करने की कोशिश की गई।

सर, जब मंदिर तोड़ा गया तो हिंदुओं ने वहां पर पूजा करनी चालू की। कई वीरों और वीरांगनाओं का बलिदान हुआ। सन् 1950 में वहां पर बहुत भंयकर संघर्ष हुआ। सन् 1950 में वहां पर जो सिक्योरिटी गार्ड था, वह अचानक मूर्छित हो गया। वह एक अद्भुत दृश्य देखा कि एक ज्योर्तिवलय के अंदर भगवान रामलला की प्रतिमा विराजमान है। हंसते-हंसते भगवान श्रीराम जैसे चलमान होते हैं।

(1250/RAJ/PS)

इसको देख कर बेचारा मूर्छित हो गया। फिर सरकार के पास खबर गया। बाद में राम लला की इस मूर्ति को हटाने की कोशिश की गई। वहां कलेक्टर श्री के.के.नैयर थे। उन्होंने ऑर्डर कर दिया कि मूर्ति की पूजा तीन बार होगी, भक्त दर्शन करेंगे, मूर्ति को नहीं हटाया जा सकेगा। उन्होंने

तत्कालीन प्रधान मंत्री जी के आदेश का भी पालन नहीं किया। उन्होंने नौकरी छोड़ दी। इस आदेश को कोई कोर्ट भी खंडित नहीं कर कर पाया। तब से वहां भक्तो का दर्शन चालू हुआ है। वहां 23 दिसम्बर, 1949 को एक लाख भक्तों ने दर्शन किया। बाद में विश्व हिन्दू परिषद ने इस काम की जिम्मेदारी ली। वर्ष 1983 में 'एकात्मता रथ यात्रा' पूरे हिन्दुस्तान के कोने-कोने से, नेपाल से निकली। इसने पूरे देश को एकता के सूत्र में जोड़ दिया।

सर, इसके बाद कई प्रकार की रथ यात्रा निकली, 'राम-जानकी रथ यात्रा', 'चरण पादुका पूजन', 'अरणी मंथन' में निकला हुआ ज्योतिका पूजन, ये सब हुए। इन सब पूजन के बाद कार सेवा के लिए भक्त उधर पहुंचे। 1990 में एक परिंदा भी वहां पर नहीं मार सकता है, बोलने वाले हमारे यूपी के तत्कालीन मुख्यमंत्री, मुलायम सिंह यादव के सारे अहंकार को चूर-चूर करते हुए कार सेवक उधर पहुंच गए। वहां गोली किस ने चलाई? मैं कांग्रेस के माननीय सदस्य की बात को सुन रहा था – गोली चलाने वाले। कार सेवक ने कभी गोली नहीं चलाई। राम मंदिर को समर्थन करने वालों ने कभी शस्त्र धारण नहीं किया। यूपी के मुख्यमंत्री श्रीमान मुलायम सिंह ने गोली चलवाई, गोली चलाने का आदेश दिया। इसके कारण सैंकड़ों कारसेवकों का निधन हुआ। सरयू के तट पर जहां भगवान राम ने जल समाधि ली थी, उसी स्थान पर उनकी समाधि हुई। हमने उनकी चिता भस्म को देखा।...(व्यवधान)

सर, इस सरयू के तट पर सैकड़ों शवों की दाह क्रिया हुई। पूरे हिन्दुस्तान में उनका भस्म वितरण हुआ। भस्म की यात्रा चली। देश में नई भावना आ गई। मुझे याद है कि हमारे ओडिशा के एक कारसेवक स्वामी लक्ष्मणानंद के ऊपर पुलिस गोली चलाने गई, उनके सामने संग्राम महापात्रा जी खड़े हो गए, उनको छ: गोलियां लगी। वे हॉस्पिटल में पड़े थे। उधर सैंकड़ों महिलाएं रक्त दान करने के लिए खड़ी थीं। वहां सैकड़ों कारसेवक घायल हो कर पड़े थे। सर, जब उनको सेन्स आया, उन्होंने एक महिला से पूछा कि माता यहां इतनी भीड़ क्यों है? वह महिला रोते हुए बोलने लगी कि बेटा राम जी को गोली लगी है, क्या माता कौशल्या स्थिर हो सकती है? आप इस भावना को समझ सकते हैं। राम सेतु को तोड़ने वाले, राम मंदिर को विलंबित करने वाले, उधर शौचालय बनाने वाले, वे कभी इस भावना को नहीं समझ सकते हैं। राम को छोड़ कर भारत की कल्पना करना असंभव है।

सर, जिसके नाम के प्रभाव से एक दस्यू भी महापुरुष बन गया और रामायण ग्रंथ की रचना की। वे महामुनि वाल्मीकि बन गए। महात्मा गांधी जी ने रघुपति राघव राजा राम कहते हुए आजादी की लड़ाई शुरू की थी। क्या गांधी जी सांप्रदायिक हैं, क्या आप उनको सांप्रदायिक मानते हैं? सर, जब हम नाम लेते हैं, तो वे इसको राजनीति क्यों कहते हैं? अगर मैं एक नाम नहीं लूंगा तो मुझे अकृतज्ञता दोष होगा। जब माननीय लाल कृष्ण आडवाणी ने रथ यात्रा निकाली, तब हम बनारस की जेल में थे, इसके कारण भारत में अद्भुत जागरण हुआ। महंत रामचंद्र दास चले गए। राम चरणदास को फांसी हो गई। सर, हिन्दू-मुस्लिम सिपाही विद्रोह में एकजूट हो गए। बहादुर शाह जफर ने राम मंदिर छोड़ देने के लिए मुस्लिम समाज से निवेदन कर दिया था,

आदेश कर दिया था। हिन्दू-मुस्लिम एकता चरम सीमा पर पहुंच गई थी। सर, अंग्रेज शासकों ने षडयंत्र करके इसको ध्वस्त कर दिया और जो एकता के प्रवक्ता थे, उनको फांसी पर चढ़ा दिया। हमें यह इतिहास भी जानना चाहिए। राम ही इस देश को जोड़ सकते हैं। जब मंडल कमीशन के आधार पर यह देश जातिवाद में बंट गया था तब राम मंदिर ने इस देश में एकात्मता की प्रतिष्ठा की। देश को एकता के सूत्र में बांध दिया।…(व्यवधान) भगवान श्री राम के मंदिर में प्रतिष्ठा होने से सारे मूल्य बोध की प्रतिष्ठा हो जाएगी।

सर, इस मंदिर का शिलान्यास मान्यवर प्रधान मंत्री जी के कर कमलों से हुआ। इस मंदिर का उद्घाटन भी हुआ और भगवान श्री राम की प्राण-प्रतिष्ठा भी हुई। वहां प्रधान मंत्री जी यजमान के रूप में बैठे थे। इसमें कितने लोगों को आपत्ति है। क्या वे राम मंदिर नहीं चाहते हैं? वे क्या चाहते हैं? इस देश को तोड़ने वाले लोगों को प्रतिष्ठित करने के लिए, इसमें हिन्दू-मुस्लिम कोई विवाद का विषय नहीं है।

(1255/KN/SMN)

रामचंद्र पूर्ण असांप्रदायिक थे, पतितों का उद्धार किया, सब को गले लगाया। भगवान श्रीराम इस वैश्विक मूल्य बोध का प्रतीक है। आज इस कार्यक्रम के लिए हम मान्यवर प्रधान मंत्री जी को धन्यवाद देते हैं, मान्यवर प्रधान मंत्री जी को उत्साहित भी करते हैं, पूरा देश उनके साथ है और संपूर्ण विश्व उनके साथ है। भगवान श्रीराम ने क्या किया?

सर, स्वामी विवेकानंद कहते थे, a nation is not great and good because its Parliament enacts this and that, a nation is great and good when its people are great and good. सज्जन शक्ति के द्वारा देश की महत्ता निर्भर करती है। इसलिए भगवान श्रीराम ने विभीषण, सुग्रीव जैसे महा मानवों को संगठित किया। पूरे देश में ऐसे सज्जनों का समावेश किया।… (व्यवधान) आज मान्यवर नरेन्द्र मोदी जी यही कार्यक्रम करते हैं– 'सबका साथ, सबका विकास, सबका प्रयास और सबका विश्वास'। यही काम राम ने किया और इसको श्रीमान नरेन्द्र मोदी जी करते हैं। इसलिए मैं इस प्रस्ताव का समर्थन करता हूं और मान्यवर मोदी जी का भी समर्थन करता हूं।

(इति)

1256 बजे

**डॉ. श्रीकांत एकनाथ शिंदे (कल्याण):** सभापति महोदय, आपने मुझे बोलने का मौका दिया, उसके लिए मैं आपका धन्यवाद करता हूं। मुझे लगता है कि आज हम सभी के लिए यह बहुत ही ऐतिहासिक क्षण है, ऐतिहासिक पल है और बहुत ही भावनिक क्षण है। आज इस सभागृह में सभी लोग इसे महसूस कर रहे हैं। इतिहास में पहली बार और देश को स्वतंत्र हुए 75 साल हो चुके हैं। आज हमें 75 साल लगे कि इस सभागृह में हम राम मंदिर पर डिस्कशन कर रहे हैं। आज 75 साल के बाद इस सभागृह में सभी लोग प्रभु श्रीराम जी और राम मंदिर पर डिस्कशन कर रहे हैं, इसके लिए मैं देश के यशस्वी प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी जी का बहुत-बहुत धन्यवाद अदा करता हूं। जिस राम मंदिर का सपना लाखों-करोड़ों लोगों ने देखा और वह सपना 22 जनवरी को पूरा हुआ है। आज मुझे इस पर बोलने का मौका मिल रहा है। हमारी पार्टी शिव सेना और स्वर्गीय बालासाहेब ठाकरे जी का यह सपना था।

आज यह सपना पूरा हुआ है और बालासाहेब के विचारों को पूरा करने का काम नरेन्द्र मोदी जी ने किया है। आज मेरे जैसे युवा को इस सभागृह में राम मंदिर के विषय पर बोलने का मौका मिला है, मैं खुद को बहुत ही भाग्यशाली समझता हूं। यह बहुत ही भावनिक क्षण, भावनिक पल है कि जिनके विचारों को हम आगे लेकर जा रहे हैं और उनके विचारों से यह मंदिर बना है। राम मंदिर के निर्माण से सदियों का इंतजार खत्म हुआ है। यह न सिर्फ आने वाली पीढ़ियों की आस्था और संकल्प था, बल्कि अनंत काल तक पूरी मानवता को प्रेरणा देने वाली घड़ियां हमने 22 जनवरी को देखीं।

जिस प्रकार स्वतंत्रता दिवस लाखों बलिदानों और स्वतंत्रता की भावना का प्रतीक है, उसी तरह राम मंदिर का निर्माण कई पीढ़ियों के अखंड तप, त्याग और संकल्प का प्रतीक है। यह राम मंदिर भारतीय संस्कृति का आधुनिक प्रतीक बनेगा, हमारी शाश्वत आस्था का प्रतीक बनेगा, राष्ट्रीय भावना का प्रतीक बनेगा। यह मंदिर करोड़ों-करोड़ों लोगों की सामूहिक शक्ति का भी प्रतीक बनेगा। मैं अपनी बात रखने से पहले हिन्दू हृदय सम्राट बालासाहेब ठाकरे जी को नमन करता हूं, उनको यहां पर याद करता हूं, उनके लिए यहां पर श्रद्धांजलि व्यक्त करता हूं, अभिवादन करता हूं कि बालासाहेब ठाकरे जी ने यह सपना देखा था कि कश्मीर से अनुच्छेद 370 खत्म की जाए और अयोध्या में प्रभु श्रीराम जी का मंदिर बने। आज वह मंदिर वहां पर बना है और अनुच्छेद 370 को हटाने का काम माननीय नरेन्द्र मोदी जी ने यहां पर किया।

(1300/VB/SM)

आज मैं यहाँ पर कुछ पंक्तियाँ कहना चाहूँगा।

राम हमारा कर्म है,
राम हमारा धर्म है,
राम हमारी गति है,
राम हमारी मति है,
राम हमारी शक्ति है,
राम हमारी भक्ति है,
बिना राम के आदर्शों के चरमोत्कर्ष कहाँ है,
बिना राम के भारत में, भारतवर्ष कहाँ है?

मुझे लगता है कि राम मन्दिर का निर्माण आज़ादी के बाद ही हो जाना चाहिए था। लेकिन ब्रिटिश लोगों का जो कोलोनियल माइंडसेट था, उससे बाहर ये लोग नहीं आ पाये। इसलिए इतने साल राम मन्दिर के निर्माण में लग गये। इस देश पर जिन्होंने आक्रमण किये, जिन्होंने शासन किये, वह चाहे बाबर हो, चाहे महमूद गजनवी हो, कांग्रेस ने सिर्फ इनका धर्म देखा। बाबर, गजनी आदि जो लोग इस देश में आये थे, वे इस देश में आक्रमण करने आये थे, यहाँ आतंकवाद फैलाने आए थे। लेकिन इन्होंने सभी चीजों को सिर्फ धर्म के साथ जोड़ा। आज़ादी के बाद से आज तक सिर्फ धर्म के नाम पर राजनीति करने का काम, पाप करने का काम कांग्रेस ने किया। देश में आक्रमण करने वाले आतंकवादियों को आपने पूरा सम्मान दिया। आपने उनके नामों पर अलग-अलग शहरों के नाम रख दिए, अलग-अलग रास्ते के नाम रख दिए। यह बराबर है?... (व्यवधान) मैं उनको ही बोल रहा हूँ।... (व्यवधान) औरंगज़ेब के नाम पर औरंगाबाद कर दिया और आज भी ये औरंगाबाद ही बोल रहे हैं।... (व्यवधान) जिस औरंगज़ेब ने छत्रपति संभाजी महाराज... (व्यवधान) जो औरंगज़ेब चढ़ाई करके इस देश में आया और बहुत ही क्रूरता के साथ उसने छत्रपति संभाजी महाराज की हत्या की। ऐसे इंसान के नाम पर शहर का नाम रखा गया था। इस सभा गृह में ऐसे कुछ लोग बैठे हैं कि उनको आज भी औरंगाबाद का बदला हुआ नाम पसंद नहीं है।... (व्यवधान) आज औरंगाबाद का नाम बदलने का काम हम लोगों ने किया, इस सरकार ने किया और उसका नाम बदलकर छत्रपति संभाजी महाराज नगर किया गया।... (व्यवधान) *... (Not recorded)*... (व्यवधान)

**माननीय सभापति (श्री राजेन्द्र अग्रवाल) :** आप अपने विषय पर आ जाइए।

... (<u>व्यवधान</u>)

**डॉ. श्रीकांत एकनाथ शिंदे (कल्याण) :** मैं कह रहा था कि इतिहास को बदलने का काम, जो लोग यहाँ शासन करने आये थे, उनके नाम पर सड़कें भी बना दी गईं। हमने अफ़ज़ल खान रोड का नाम बदल दिया, औरंगाबाद शहर का नाम बदल दिया। इनको यह भी पसंद नहीं है।

आज़ादी के बाद इन्होंने कई एमिनेंट हिस्टोरियंस, कई सो कॉल्ड एक्टिविस्ट्स को यहाँ पर जन्म दिया, उनको यहाँ पर खड़ा किया। ये लोग उनके माध्यम से, इस देश का इतिहास बदलने का काम आज तक कर रहे थे।

आज कांग्रेस के नेता राम मन्दिर के प्राण-प्रतिष्ठा में भी नहीं गये। वे किस मुँह से जाते? उनको यह कभी चाहिए ही नहीं था। ये नहीं चाहते थे कि राम मन्दिर बने, तो ये किस मुँह से वहाँ दर्शन करने जाते। लेकिन आज आपके पास वक्त है, आज मन्दिर बन चुका है।

(1305/CS/RP)

जो पाप आप लोगों ने किया है, आप उस पाप का प्रायश्चित मंदिर में रामलला के दर्शन लेकर कर सकते हैं। आज भी नेहरू-गाँधी परिवार लोगों को, इनके भी लोगों को राम मंदिर जाने से रोकने का काम कर रहा है, लेकिन ये भूल रहे हैं कि इनके पूर्वजों ने भी, राम मंदिर बने, इसके लिए उन्होंने भी संघर्ष किया। आज पूरी दुनिया में ऐसे तीन ही स्थान हैं, एक है जेरूसलम, एक है हागिया सोफिया और एक अयोध्या है। इनमें से सिर्फ एक ही स्थान अयोध्या में, पूरी दुनिया में जो संभव नहीं हुआ, जो शांतिपूर्ण ढंग से इस देश में संभव हुआ और वहाँ पर प्रभु श्रीराम जी का मंदिर बना है।... (व्यवधान) सर, अभी तो मैंने शुरुआत की है।

**माननीय सभापति (श्री राजेन्द्र अग्रवाल):** नहीं-नहीं। आपको बोलते हुए 12 मिनट हो गए हैं।

**डॉ. श्रीकांत एकनाथ शिंदे (कल्याण):** शांतिपूर्ण रास्ते से आज अयोध्या में मंदिर बना है। यहाँ हम किसी धर्म के विरोध में नहीं हैं। सुप्रीम कोर्ट ने निर्णय दिया और वहाँ पर दोनों धर्मों के लोगों को जगह देने का काम किया गया। परसों कुछ लोग इस सभागृह में बात कर रहे थे कि धर्म के पहरेदार बनो, धर्म के ठेकेदार मत बनो। मुझे उनको बताना है कि किसने ठेकेदारी की? ठेकेदारी इन लोगों ने की। कार सेवकों पर जिन्होंने गोली चलायी। एएसआई के माध्यम से फर्जी रिपोर्ट बनाने का काम इन लोगों ने किया। इसी के साथ कोर्ट में इतना बड़ा असत्य कि प्रभु श्रीराम और राम सेतु दोनों ही काल्पनिक हैं, यह बताने का काम इन लोगों ने किया मतलब धर्म का ठेका इन लोगों ने लेकर रखा था। मैं इनको बताना चाहूँगा कि हम धर्म के ठेकेदार नहीं हैं, हम धर्म के पहरेदार हैं। हमने धर्म की पहरेदारी की है। प्रभु श्रीराम के अस्तित्व के लिए कार सेवक हों या हमारे देश के प्रधानमंत्री हों, उन्होंने आज धर्म की पहरेदारी की है।

**माननीय सभापति :** अब आप अपना भाषण समाप्त कीजिए। बहुत सारे वक्ता इस पर बोलना चाहते हैं।

**डॉ. श्रीकांत एकनाथ शिंदे (कल्याण):** सर, यहाँ पर धर्म की पहरेदारी की, इसलिए 500 साल बाद एक युगपुरुष का जन्म हुआ, जिसका नाम नरेन्द्र मोदी है, उन्होंने आज मंदिर यहाँ पर बनाया है। हिन्दू धर्म हमें धर्मनिरपेक्षता सिखाता है। आप हमारा कोई भी धार्मिक स्थान देख लीजिए, वह किसी भी मस्जिद या चर्च को तोड़कर नहीं बनाया गया था, लेकिन अयोध्या, काशी या मथुरा, इन सभी स्थलों को तोड़ा गया और हमारी संस्कृति को भी तोड़ने, दफनाने का काम यहाँ किया गया। न सिर्फ हमारे धार्मिक स्थल, बल्कि हमारे नालंदा विश्वविद्यालय को भी तोड़ने का काम मुगलों ने किया। मुगलों को पता था कि धर्म और संस्कृति इनकी आत्मा है, आत्मा पर घात करने का काम उन्होंने किया, लेकिन इनको पता नहीं चला कि यह हमारी आत्मा है, हमारी धरोहर है। इस आत्मा को पुनर्जागृत करने का काम हमारे प्रधानमंत्री जी ने किया है। हाँ, मोदी जी ने ही किया है। जलील जी, मोदी जी ने ही किया है। इतिहास को फिर से सही ढंग से लिखने का काम नरेन्द्र मोदी जी ने

किया है। हमारे धर्म ही नहीं, हमारी संस्कृति को बर्बाद करने का काम पहले मुगलों ने किया, फिर कांग्रेस ने किया।

**माननीय सभापति :** अब आप अपना भाषण समाप्त कीजिए।

**डॉ. श्रीकांत एकनाथ शिंदे (कल्याण):** सिर्फ एक पर्टिकुलर वोट बैंक के लिए हमारा इतिहास बदलने का काम इन लोगों ने किया।

**माननीय सभापति :** अब आप अपना भाषण समाप्त कीजिए।

**डॉ. श्रीकांत एकनाथ शिंदे (कल्याण):** सर, मैं समाप्त कर रहा हूँ। आज कुछ लोग कहते हैं कि यहाँ पर मंदिर क्यों बने? वहाँ पर अस्पताल बनाया जाए, वहाँ पर स्कूल बनाया जाए, वहाँ पर टायलेट्स बनाए जाएं, ऐसी बातें, ऐसी इंटेलेक्चुअल टॉक्स इन्होंने बहुत सालों से पैदा की हैं। ये ऐसा उनके माध्यम से वहाँ के लिए कहते हैं। हमारा यह इकलौता ऐसा देश है, जहाँ पर कल्चरल डाइवर्सिटी है। इसका उदाहरण दिया जाता है।

(1310/IND/NKL)

सभापति जी, बिना हमारी संस्कृति और बिना हमारे इतिहास के डेवलपमेंट कैसे हो सकता है? उस संस्कृति को, उस नींव को मजबूत करने का काम आज यहां नरेन्द्र मोदी जी ने किया है। मैं थोड़ा इतिहास में जाना चाहूंगा। यहां एक उदाहरण सोमनाथ के मंदिर का देना चाहूंगा। जब सोमनाथ मंदिर के रेस्टोरेशन का केबिनेट में फैसला हुआ, वह फैसला उनको दिल पर पत्थर रखकर करना पड़ा था। केबिनेट के बाद पंडित जवाहर लाल नेहरू जी ने डॉक्टर मुंशी जी को फोन करके कहा, उसे मैं कोट करता हूं: "I do not like you trying to restore Somnath. It is Hindu revivalism." मुझे बिलकुल पसंद नहीं है कि आप सोमनाथ के मंदिर का रेस्टोरेशन चाहते हैं। I quote:

> "Some of the temples of the South, however, repel me in spite of their beauty. I just can't stand them. Why? I do not know. I cannot explain that, but they are oppressive, they suppress my spirit.

महोदय, मतलब इतनी हिंदू विरोधी सोच, इतने सालों से आज तक यहां चल रही है। जब मंदिर बन गया, तो यहां वे रुके नहीं। उसके बाद डॉक्टर राजेन्द्र प्रसाद, तब के हमारे राष्ट्रपति जी को उन्होंने कहा कि आप इस मंदिर के इनोग्रेशन में मत जाइए, लेकिन तब भी डॉक्टर राजेन्द्र प्रसाद जी मंदिर के इनोग्रेशन में गए। जब उनकी स्पीच वहां शुरू हुई, तो उस स्पीच को ब्लैक आउट करने का पाप कांग्रेस की सरकार ने किया। यहां ये रुके नहीं।

**माननीय सभापति (श्री राजेन्द्र अग्रवाल):** आप दो मिनट में अपनी बात समाप्त कीजिए। अन्य माननीय सदस्य भी अपनी बात सदन में रखना चाहते हैं।

**डॉ. श्रीकांत एकनाथ शिंदे (कल्याण):** सभापति जी, पंडित नेहरू जी अपनी एक इनोग्रल स्पीच आर्किटेक्चर सेमिनार में दे रहे थे, मैं उसे कोट कर रहा हूं:

> "They do not allow me to rise, they keep me down. The dark corridors—I like the sun and air and not dark corridors."

महोदय, हमारे मंदिरों के प्रति जो भावना थी या हमारी आस्था के प्रति उनकी भावना पहले से ही ऐसी चली आ रही थी। उन्हें लगा ही नहीं कि मंदिर जो हमारी फाउंडेशन है, उसे ठीक किया जाए। मुझे बहुत खुशी है कि मंदिर के आंदोलन में शिव सैनिक भी शामिल थे। महाराष्ट्र से आए कई राम भक्त भी शामिल थे और आज जब यह मंदिर बन गया है, यहां महाराष्ट्र के चन्द्रपुर से खास सागवान की लकड़ियां इस मंदिर में लगाई गई हैं। मैं आज यहां विशेष कर अहिल्या बाई होलकर जी को भी याद करना चाहूंगा कि यहां विश्वनाथ मंदिर का पुनर्निर्माण भी उन्होंने किया था। आज जो आलोचक बात करते हैं कि मंदिर की क्या जरूरत है लेकिन आप यहां देख लीजिए हमारे पास केदारनाथ कोरीडोर का उदाहरण है, काशी के कोरीडोर का उदाहरण है। अयोध्या का उदाहरण है। हमारे पास उज्जैन महाकाल का भी उदाहरण है कि जब भी जीर्णोद्धार हुआ, तब जाकर वहां की इकोनॉमी भी रिवाइव हुई। आज धर्म के साथ-साथ डेवलपमेंट की बात भी हुई है। मैं अपनी बात कुछ पक्तिंयां बोलकर समाप्त करना चाहूंगा।

"राम राम तो कह लोगे पर, राम सा दुख भी सहना होगा
पहली चुनौती यह होगी कि मर्यादा में रहना होगा
मर्यादा में रहना मतलब कुछ खास नहीं कर जाना है
बस त्याग को गले लगाना है और अहंकार जलाना है।
(मुझे लगता है कि यह सबके लिए है)
रामलला के खातिर इतना न कर पाओगे
अरे शबरी का झूठा खाओगे तो पुरुषोतम कहलाओगे
काम क्रोध के भीतर रहकर तुमको शीतल बनना होगा
बुद्ध भी जिसकी छांव में बैठे, वैसा पीपल बनना होगा
बनना होगा ये सब कुछ और वो भी शून्य में रहकर प्यारे
तब ही तुमको पता चलेगा, थे कितने अद्भुत राम हमारे।"

(1315/RV/VR)

सभापति महोदय, इसी के साथ मैं अपना भाषण समाप्त करता हूं। यहां पर फिर से एक बार इस देश के यशस्वी प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी जी को बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूं, जिनके कारण आज हमारी पीढ़ी और आने वाली कई पीढ़ियों को राम लला का दर्शन एक छोटी-सी कुटिया में नहीं करना पड़ेगा, बल्कि 'राष्ट्र मन्दिर' के रूप में एक भव्य, दिव्य मन्दिर अयोध्या में बना है, जो आने वाली कई पीढ़ियों को ऊर्जा देता रहेगा। धन्यवाद।

जय हिन्द। जय महाराष्ट्र। जय श्री राम।

(इति)

**माननीय सभापति (श्री राजेन्द्र अग्रवाल):** श्री मलूक नागर जी, आप कृपया चार-पाँच मिनट में अपनी बात पूरी कीजिएगा।

मेरा सभी माननीय सदस्यों से निवेदन है कि पाँच मिनट में अपना निवेदन पूर्ण करें।

1316 बजे

**श्री मलूक नागर (बिजनौर):** माननीय सभापति महोदय, आपने मुझे बोलने का मौका दिया, इसके लिए मैं आपको बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूं।

महोदय, आज नियम-193 के अधीन चर्चा से पहले, राज्य सभा में जो हंगामा हुआ, उसके बारे में कहना चाहता हूं।... (व्यवधान)

**माननीय सभापति :** आप यहीं की चर्चा कीजिए। आप दूसरे सदन की बात नहीं कर सकते हैं।

... (व्यवधान)

**श्री मलूक नागर (बिजनौर):** महोदय, मैं राज्य सभा की बात यहां पर नहीं उठा रहा हूं। मैंने चार-पाँच दिनों पहले ही यह मांग की थी कि चौधरी चरण सिंह जी को 'भारत रत्न' दिया जाए। उनके साथ-साथ मैंने यह भी मांग की थी कि बाबा महेन्द्र सिंह टिकैत जी को, राजेश पायलट जी को, जो कांग्रेस के नेता थे और हमारे भी नेता थे, विजय सिंह पथिक जी को और मान्यवर कांशीराम जी को भी 'भारत रत्न' दिया जाए। इसमें कम से कम शुरुआत हुई और चौधरी चरण सिंह जी को 'भारत रत्न' दिया गया। मुझे उम्मीद है कि जो दूसरे लोग हैं, आगे उन्हें भी 'भारत रत्न' दिया जाएगा। इसके लिए मैं इस सरकार को, माननीय प्रधान मंत्री जी को धन्यवाद देता हूं और कांग्रेसियों से कहता हूं कि इनकी खिलाफत मत कीजिए, अगर आपको मेरी या किसी इंडिविजुअल की खिलाफत करनी है तो कीजिए, पर अगर आप चौधरी चरण सिंह जी की खिलाफत कीजिएगा तो आप देश के 80 प्रतिशत किसानों और देश के 56 प्रतिशत पिछड़े लोगों की, जिनमें जाट, गुजर, यादव, पाल, सैनी, कश्यप, सुनार, लुहार आदि तमाम पिछड़ी जातियां हैं, अगर आप उन सबकी खिलाफत करेंगे तो आपकी यहां स्थिति, राजस्थान या मध्य प्रदेश में जैसी है, वैसी हो जाएगी।

महोदय, आज के विषय पर मैं कहना चाहता हूं कि भारत का संविधान, जिसे बाबा साहेब अम्बेडकर ने लिखा और माननीय सुप्रीम कोर्ट के आदेश से मन्दिर बना। मैं देख रहा था कि अभी हमारे कुछ साथी यह चर्चा कर रहे थे कि मन्दिर किसने तुड़वाया, मस्ज़िद किसने तुड़वाई, इसकी भी चर्चा कर लीजिए कि वह मन्दिर किसने बनवाया? वर्ष 1976 में जब सर्वे हो रहा था, तब के.के. मुहम्मद की रिपोर्ट थी कि यह जो मस्ज़िद का ढाँचा है, उसके नीचे मन्दिर के अवशेष मिले और उनकी रिपोर्ट यह भी थी कि उसे गुर्जर-प्रतिहार ने बनवाया था। उसकी भी चर्चा हो। इसके लिए पूरे देश में जो खुशी की लहर दौड़ी और पूरे देश में जो महोत्सव मनाया गया, यह बहुत खुशी की बात थी। मैं विपक्ष के अपने साथियों से, जो कांग्रेस पार्टी के लोग बैठे हैं, उनसे यह कहना चाहता हूं कि कम से

कम इस बात का तो विरोध मत कीजिए। अगर आप इस बात का विरोध करते हैं तो जब देश में विधान सभाओं के चुनाव होते हैं तो फिर आप क्यों मन्दिरों में जाते हैं, क्यों जनेऊ पहनते हैं? हम एक और बात के भी पक्षधर हैं कि माननीय सुप्रीम कोर्ट के ऑर्डर पर जो वहां पर मस्ज़िद भी बन रही है तो कल जब वहां पर मस्ज़िद बन जाएगी तो हम उसका भी स्वागत करेंगे।

महोदय, एक बात कह कर मैं अपनी बात को समापन की तरफ लेकर जा रहा हूं कि आज पूरे देश में जो हालात हैं और पूरे देश में जो पिछड़े हैं, तो अगर देश को मजबूत करना है तो विपक्ष का मजबूत होना बहुत जरूरी है और विपक्ष में सबसे बड़ी पार्टी कांग्रेस है। उसका मजबूत होना बहुत जरूरी है, तभी हम सब मजबूत हो सकते हैं।

(1320/GG/SAN)

अगर बगैर मतलब के बातों का विरोध करोगे, तो यह ठीक बात नहीं है। सन् 1913 में जब यह लैजिसलेचर सिस्टम कोलकाता में शुरू हुआ था, तब यह देश कुछ और था। जब सन् 1947 में देश आजाद हुआ, तब यह देश कुछ और था। सन् 1952 से जो शुरूआत हुई, वह देश और था और आज वर्ष 2024 का देश और है। सभी नौजवान देख रहे हैं। पार्टी, पॉलिटिक्स, जाति, सबसे उठ कर सोचेंगे और सरकार की कहां-कहां कमी है, वह निकालेंगे, जिस तरह हम निकालते हैं, उस तरह निकालोगे तो वोट मिलेंगे। अभी मैं देख रहा हूँ कि हमारे कांग्रेस के सिर्फ चार या पांच साथी ही बैठे हैं। यहां सारी सीटें खाली पड़ी रहती हैं, जब हम सरकार से टकरा रहे रहे होते हैं, जूझ रहे होते हैं और भिड़ रहे होते हैं। मैं प्रार्थना करना चाहता हूँ कि जहां देश की बात हो, जहां देश की जनता की बात हो, वहां साथ देना चाहिए।

राजेश पायलट इनकी पार्टी के ही थे, आज उनका जन्मदिन है। ... (व्यवधान) आपको उनसे सीखना चाहिए कि वे सरकार में मंत्री रहते हुए भी देश के लिए, देश की जनता के लिए टकराते थे। बगैर मतलब विरोध मत करो, नहीं तो आपको वर्ष 2024 में झेलना पड़ जाएगा।

(इति)

1321 बजे

**श्री हंस राज हंस (उत्तर-पश्चिम दिल्ली):** सभापति जी, जब ऐसे-ऐसे प्रकांड विद्वान बोल रहे हैं, मेरी तो कैफियत यह है कि 'मुझे तो होश नहीं, आप मश्विरा दीजिए, कहां से छेड़ूं फसाना, कहां तमाम करूं।' पूरा जहान, खंड-ब्रह्माण, भारतवर्ष, आज तो लोकतंत्र के मंदिर का गुंबद भी राममयी हुआ है। तो दोनों हाथ जोड़ कर बोलो जय श्री राम, जय-जय श्रीराम। हम खुशकिस्मत हैं कि भारत में पैदा हुए। हम खुशकिस्मत हैं कि भारत में अयोध्या है। हमारी खुशनसीबी है कि हम रामनाम लेवा हैं। लेकिन अगर राम को समझना है तो सबसे पहले हृदय में प्रेम आना चाहिए, करुणा आनी चाहिए। इसके बिना राम समझ नहीं आएंगे। सियासतें होती रहेंगी। इसमें थोड़ी-बहुत नोंक-झोंक भी होती है। ये दिन उत्सव की तरह है। सदियों से तरस रहे लोगों की तमन्ना, आरज़ू और मन्नतें पूरी हुई हैं। न जाने कितनी अमूल्य जानें गईं। संतों-महापुरुषों ने रो-रो कर प्रार्थना की, लेकिन अब जा कर, हम कितने खुशनसीब हैं, हम उस वक्त सांस ले रहे हैं, जिस दिन 22 जनवरी आई। उस दिन एक नहीं, करोड़ों दिवालियां मनाई गईं। भारत से ले कर पूरी दुनिया में मनाई गई। भारत एक ऐसा खंड है, जब खंड बने भी नहीं थे, सबसे पुरानी संस्कृति है। राम भगवान मोहब्बत का, प्रेम का, इंसानियत का मुजस्समा है। राम भगवान को मानना है, जानना है, देखना है, तो इक्वेलिटी, को समझना पड़ेगा। यह जिस समाजवाद की भी हम जिक्र करते हैं, वह समाजवाद भी भगवान राम की देन है। वे कभी शबरी के झूठे बेर खाते, केवट के जाते, निषाद के जाते, उनको सभी से प्यार था, सभी से प्रेम था। आप देखो, आज हम बहुत बड़ी-बड़ी बातें करते हैं, लेकिन भागवान राम ऐसी हस्ती हैं, जिन्होंने कुर्बानी की। राजतिलक का समां हो, ऑर्डर हो जाए, हुक्म हो जाए कि वनवान जाना है, तो ये भगवान राम ही कर सकते हैं। हमें उनसे सीखना चाहिए। इन नफरतों भरी दुनिया में भगवान राम का संदेश बहुत जरूरी है। भारत को भी इस वक्त राम की जरूरत है। आओ, इस राष्ट्र को राम मान लो और खुद हनुमान बन जाओ।

(1325/MY/SNT)

उस दिव्य आत्मा का जिक्र मैं जरूर करूंगा, जिन्होंने अपनी माँ को धरती का रब और आकाश का रब भगवान राम को आदर्श माना। हमारे महबूब, यशस्वी, तेजस्वी, तपस्वी प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेन्द्र भाई मोदी जी, जिनके माथे पर यह यश लिखा हुआ था, कितनों ने कोशिश की, उनकी नीयत अच्छी थी, उनको भगवान राम के प्रति श्रद्धा थी, उन्होंने बातें नहीं कीं, बल्कि सारा जीवन भगवान राम को आदर्श मानकर जिया, इसीलिए तो प्राण-प्रतिष्ठा की सबसे अहम जिम्मेवारी सौंपी गई, यह हमारे प्रिय प्रधानमंत्री जी के हिस्से आई।

पूजनीय ब्राह्मणों ने कहा था कि दो दिन का ही व्रत काफी है, लेकिन उन्होंने 11 दिन का व्रत रखा। देखो कितनी शिद्दत की सर्दी थी, जबरदस्त ठंड और इस सर्दी में कितने जलों से वह नहाए! एक बात जब मैं सोचता हूं, भगवान राम के बारे में बोलूं, तो मैं सोचता हूं कि मैं अदना सा, एक छोटा सा वंदा क्या बोलूंगा। मेरे शब्द, मेरी वोकैब्युलरी, मेरी जेहन जवाब दे जाती है। अरे, जिसका गुणगान आदिकवि भगवान वाल्मीकि जी ने किया हो, गोस्वामी जी ने किया हो, वह हम जैसे गरीब उनका गुणगान क्या करेंगे!

देखिए, प्रधानमंत्री जी ने एक कैसी अज़ीम सोच के अधीन भगवान वाल्मीकि जी को कितना श्रद्धापूर्वक नमन किया, रेलवे स्टेशन का नाम उनके नाम पर रखा, ताकि 24 घंटे वाल्मीकि रामायण

का पाठ भी हो और पता भी चले कि भगवान राम के आने से पहले जिस हस्ती ने रामायण लिख दिया था, उनका जिक्र जरूरी है, इसलिए यह भी बहुत बड़ी बात है। मैं प्रधानमंत्री जी का धन्यवाद करता हूं। संत, महापुरुषों और जितने भी लोग थे, इवेन अदालत वाले लोग, जुडिशिरी सबका धन्यवाद हमें करना चाहिए और रोम-रोम से करना चाहिए। अगर प्रेम हृदय में बसाना है तो राम रोम-रोम में बस जाएंगे। मेरा संगीत से भी थोड़ा ताल्लुक है, अगर इजाजत हो तो दो-चार लाइनें आपकी नज़र करूंगा।

"पैगाम-ए-रोशनी अयोध्या जिनका धाम
पैगाम-ए-रोशनी है, अयोध्या है जिनका धाम
उतम है सब जानों में, इसमें कोई कलाम
इकबाल ने भी जिनको कहा हिंद के इमाम
भारत की सर-जमीं पे है उनका वो मुकाम
सच्चाई का है प्रेम का संदेश राम राम
बोलो जय श्री राम, जय श्री राम
जय जय श्री राम, जय श्री राम
वह एक आदर्श भाई है, वह एक आदर्श बेटा है
मुहब्बत के लिए किसने दुखों को यूं समेटा है"

हम इस पहलू को भी देखेंगे, तमाम उम्र संघर्ष में गुजर गया। भगवान होने के बावजूद अगर मालिक भी इस ह्यूमन बॉडी में आता है तो इंसान को क्या-क्या तकलीफें आती हैं। वह खुद झेलता है।

"वह एक आदर्श भाई है, वह एक आदर्श बेटा है
मुहब्बत के लिए किसने दुखों को यूं समेटा है
कहीं ऐसा भी होता है,
पूरी दुनिया में नजर मार कर देखों-
कहीं ऐसा भी होता है, कभी एहसास ये होता है
पिता के प्रेम में किसको यहां वनवास होता है
पिता के प्रेम में जिसको यहां वनवास होता है
वह है हमारा राम, जय श्री राम
जय जय राम, जय श्री राम।"

(1330/CP/AK)

अगर हमें अच्छा बेटा बनना है, अच्छा भाई बनना है, अच्छा इंसान बनना है, इवेन गवर्नेंस के हवाले से भी से कि गवर्नेंस कैसी होती है, शासक बनना है तो भगवान राम के फलस्फे को मानो, उनकी जिंदगी की तर्जमानी को अपनी रूह में बसा लो। सियासतें होती रहेंगी। आज लास्ट दिन है। एक बार सब लोग बोल दो। खाली कुर्सियों को भी जय श्रीराम। जय श्रीराम, जय-जय श्रीराम। इतना ऊंचा बोलो कि खाली कुर्सियों से उधर से भी आवाज आए। जय श्रीराम, जय-जय श्रीराम, जय-जय श्रीराम, जय श्रीराम।

(इति)

1331 बजे

**श्री अरविंद सावंत (मुम्बई दक्षिण):** आदरणीय चेयरमैन सर, मैं बहुत धन्यवाद देता हूं। मुझे बहुत हर्ष है, बहुत आनंद है कि आज प्रभु रामचंद्र पर आज इस सदन में चर्चा हो रही है। यह हर्ष और ज्यादा होता, अगर हम प्रभु रामचंद्र जी के मंदिर के लिए कानून बनाने के लिए यहां आते, चर्चा करते, तो और मजा आता। वह हमने न्यायालय से पा लिया। हम पहले गठबंधन में थे। सन् 1987 में विले पार्ले में एक उपचुनाव हुआ। उस चुनाव में इस देश में पहला राजनीतिक नारा देने वाले कौन थे कि गर्व से कहो हम हिंदू हैं, वे थे वंदनीय हिंदू हृदय सम्राट बाला साहब ठाकरे। उस वक्त आपकी पार्टी खिलाफ लड़ी थी, यह भी आपको याद रखना है। यह नींव नहीं भूलना है। आपकी पार्टी भी खिलाफ थी। …(व्यवधान) प्राणलाल वोरा जी खड़े थे, इनकी तरफ से खूंटिया जी खड़े थे और हम लोग गर्व से कहो हम हिंदू हैं, कहकर चुनाव लड़ रहे थे और चुनाव जीता। चुनाव जीतने के बाद भारतीय जनता पार्टी को एहसास हुआ कि हिंदू बनकर भी हम एक साथ आ सकते हैं, वोट भी पा सकते हैं और जीत भी सकते हैं। वह एहसास होने बाद फिर हम लोगों ने हिंदुत्व का नारा लगाया। फिर लालकृष्ण आडवाणी जी ने राम रथ की यात्रा निकाली।

आदरणीय परम श्रद्धेय हिंदू हृदय सम्राट शिवसेना प्रमुख बाला साहब ठाकरे ने यह नारा निकाला था। वर्ष 1992 का आप सारा इतिहास जानते हैं। कारसेवकों की इसमें बहुत बड़ी भूमिका है। उनको नहीं भूलना है। वे भी हमारी एक नींव हैं। वर्ष 1989 में भी हम वहां लोग कारसेवा करके गए थे, लेकिन तब कुछ नहीं हुआ। वर्ष 1992 में ढांचा गिरने के बाद आप लोगों ने कोई जिम्मेदारी नहीं ली। यहां जय श्रीराम के नारे लगाते हो, लेकिन जिम्मेदारी नहीं ली। हिंदुस्तान में एक ही शख्स था, जिसने वह जिम्मेदारी ली। अगर वह ढांचा मेरे शिवसैनिकों ने गिराया होगा, तो मुझे उन पर गर्व है, ऐसा कहने वाले एक ही शख्स थे, वे थे हिंदू हृदय सम्राट बाला साहब ठाकरे जी। आदरणीय उद्धव ठाकरे साहब कहते थे, हमने नारा दिया था - सौगन्ध राम की खाते हैं, मंदिर वहीं बनाएंगे। वर्ष 2014 के बाद आदरणीय उद्धव ठाकरे जी ने माननीय मोदी साहब को कहा कि कानून बनाकर इसे करें। ये भूल गए थे। सन् 2014 से 2019 हो गया, उन्होंने याद दिलाई। मंदिर वहीं बनाएंगे, तारीख नहीं बताएंगे, थोड़ी उपासना की, थोड़ी आलोचना की। … (व्यवधान) बाद में मंदिर बनाने का काम शुरू हुआ। हमें बहुत आनन्द है, बहुत गर्व है कि इस देश में प्रभु रामचंद्र जी का मन्दिर, हमारी आस्था है, हमारी अस्मिता है, इस देश की अस्मिता है, हम यह मानते हैं। मैं इतना ही कहूंगा कि प्रभु रामचंद्र त्यागी थे। एकवचनी थे, सत्य वचनी थे। मैं एक-दो चीजें सिर्फ बताऊंगा, ज्यादा भाषण नहीं करूंगा।

प्रभु रामचंद्र जी को वनवास भेजा गया। यह मांग सौतेली मां कैकेयी की थी। राजा दशरथ ने कहा कि जाना पड़ेगा। आज्ञाधारक प्रभु रामचंद्र ने आज्ञा का पालन किया, वे गए।

सत्ता छोड़ दी, कुर्सी छोड़ दी। वे अपने पिता जी के साथ लड़े नहीं, कुर्सी का त्याग किया, वनवास में गए। बाकी सारा इतिहास आप जानते हैं। वहां भी जब रावण के साथ लड़ाई हुई, रावण भी तो शिवभक्त था, रावण ने सीता जी के साथ कोई गैर-व्यवहार नहीं किया, अपहरण जरूर किया, गैर-व्यवहार नहीं किया। उस रावण के साथ लड़ाई हुई, रावण की हत्या हुई और रावण मारा गया। प्रभु रामचंद्र जी ने सत्ता नहीं ली। प्रभु रामचंद्र जी ने सत्ता विभीषण को दे दी। किष्किंधा की लड़ाई हुई। किष्किंधा की लड़ाई में वे सुग्रीव के साथ खड़े रहे। किष्किंधा जीत लिया, लेकिन प्रभु रामचंद्र जी ने राज नहीं लिया।

(1335/NK/UB)

सुग्रीव के हाथ में सत्ता सौंप दी, ये सत्ताकरण करने वाले लोगों के लिए जब प्रभु श्रीरामचन्द्र जी का उदाहरण देते हैं न तो यह उदाहरण बहुत महत्वपूर्ण है। मैं आपसे इतना ही कहूंगा, हम आपसे यही कहते आये हैं, प्रभु श्रीरामचन्द्र जी, रघुपति राघव राजा राम, पतित तपावन सीताराम। उसके आगे मैं ईश्वर अल्ला तेरे नाम नहीं जोड़ता। जय रघुनन्दन जय घनश्याम, पतित पावन सीताराम। पतित आज क्या पावन है? हम सारी चीजें राजनीति के लिए कर रहे हैं। मैं आपसे इतना ही कहूंगा प्रभु राम जनता के दिलों पर राज किया, सत्ता पाकर नहीं किया, बिना सत्ता से वह जनता के दिल पर राज किए, पूरे भारतवर्ष की आत्मा बन गए, सत्ता के लिए लोगों को पराजित नहीं किया। … (व्यवधान) एक मिनट बोलने दीजिए।

**माननीय सभापति (श्री राजेन्द्र अग्रवाल):** अरविंद जी, आप समाप्त कीजिए। आप दो बार कह चुके हैं कि समाप्त कर रहा हूं, समाप्त कीजिए।

… (<u>व्यवधान</u>)

**माननीय सभापति:** डॉ. अमोल रामसिंह कोल्हे जी।

… (<u>व्यवधान</u>)

**श्री अरविंद सावंत (मुम्बई दक्षिण):** भरत राजा ने प्रभु रामचन्द्र जी कुर्सी पर चरण पादुका रखकर राजकाज किया। कुर्सी पर छुरा भोंककर नहीं बैठे। वह एक आदर्श हैं, वह भी आदर्श सोचिए।

(इति)

**माननीय सभापति:** डॉ. अमोल रामसिंह कोल्हे जी, आप प्रारंभ कीजिए।

1336 बजे

**डॉ. अमोल रामसिंह कोल्हे (शिरूर):** सभापति महोदय, राम मंदिर का निर्माण एक ऐतिहासिक घटना है। इस ऐतिहासिक घटना के उपलक्ष्य में हर उस व्यक्ति जो मंदिर निर्माण के कार्य में योगदान दिया है, उनके साथ ही मैं पूरे देश का अभिनंदन करूंगा। राम मंदिर तथा मर्यादा पुरूषोतम प्रभु श्री राम राजनीति या चुनाव प्रचार का मुद्दा नहीं है बल्कि यह हमारे देश की गौरवशाली परंपरा रही है कि धर्म में राजनीति नहीं होनी चाहिए और राजनीति में धर्म नहीं आना चाहिए। विश्व का इतिहास इस बात का गवाह है कि धार्मिक कट्टरता राष्ट्र को नुकसान पहुंचाती है। वहीं धार्मिक उदारता एवं वैश्विकता राष्ट्र को मानवता को ऊंचाई पर पहुंचाता है। मुझे मेरे हिन्दू होने पर गर्व है, मेरा हिन्दू धर्म इसी उदारता, वैश्विकता और सहिष्णुता की वजह से विश्व में वंदनीय है।

*Chairman Sir, I am really proud that I am Marathi because our Chhatrapati Shivaji Maharaj had established a people's kingdom with the help of people from various castes and communities. I hail from such a land where devotees of Lord Vishnu across all the castes assemble to worship Pandurang at the banks of river Chandrabhaga. I come from such a state of Maharashtra where Mahatma Jyotiba Phule, Chhatrapati Shahu Maharaj and Dr. Babasaheb Ambedkar fought against the inhuman traditions and rituals in order to establish humanity.

महोदय, राम मंदिर देश की आस्था का विषय है, भक्ति मार्ग का विषय है, भक्ति मार्ग में माध्यम, साधन और साध्य, तीन चीजों का बहुत महत्व होता है। जैसे हम पूजा पाठ करते हैं, जाप करते हैं या आरती करते हैं, यह माध्यम हुआ। सामने मूर्ति रखते हैं या फोटो फ्रेम रखते हैं, यह साधन हुआ। साध्य होता है, परमात्मा से आत्मा का संवाद। इसीलिए राम मंदिर साध्य नहीं है, राम मंदिर साधन है, साध्य होना चाहिए, मर्यादा पुरूषोतम श्री राम चन्द्र जी के आदर्शों का अपने जीवन में अनुसरण करना, आचरण करना। प्रभु श्री राम जी एक वचनी, एक वाणी, एक पत्नी कहलाते हैं। एक वचनी प्रभु श्रीराम जी के जब हम भक्त कहलाते हैं, एक वचनी प्रभु श्रीराम जी के भक्त कहलाते हैं तो देश के युवाओं को दो करोड़ रोजगार मिलने के वादा का क्या हुआ? किसानों की आय दोगुनी करने की गारंटी का क्या हुआ? 2022 तक हर किसी को पक्के घर मिलने के इरादे का क्या हुआ, इन वचनों पर अंतर्मुख होकर विचार करना होगा। प्रभु श्रीराम जी का दूसरा बहुत महत्वपूर्ण गुण है, हर नागरिक को समान न्याय की दृष्टि से देखना। … (व्यवधान) समान न्याय की दृष्टि से देखना। लेकिन समस्त देशवासी देख रहे हैं कि जब ईडी और सीबीआई की कार्रवाई होती है, सत्ता पक्ष के नहीं केवल विपक्ष के नेताओं पर कार्रवाई होती है। जैसे ही कोई सत्तापक्ष का दामन थाम लेता है तो भ्रष्टाचार के आरोप और ईडी की कार्रवाई सब नामोनिशान मिट जाता है। क्या यह समान न्याय दृष्टि है।

**माननीय सभापति:** जो प्रस्ताव है, उस पर बोलिए।

* Original in Marathi

**डॉ. अमोल रामसिंह कोल्हे (शिरूर):** सभापति महोदय, मैं राम मंदिर पर ही आ रहा हूं। मैं नारायण गांव से आता हूं, जो तमाशा पंडरी कहलाती है, तमाशा लोक नाट्य महाराष्ट्र की बहुत बड़ी परंपरा है।

**माननीय सभापति:** आप प्रस्ताव से सहमत हैं या अहसमत हैं, इस पर बोलिए।

**डॉ. अमोल रामसिंह कोल्हे (शिरूर):** सभापति महोदय, जी मैं सहमत हूं, इसी पर आता हूं। तमाशा हमारी परंपरा है।

(1340/SK/SRG)

वगनाट्य व्यंगात्मक रूप से होता है। व्यंगात्मक रूप से लिखने वाले एक लेखक ने मुझे कहा कि वह कलयुग की रामायण लिख रहे हैं। मैंने कहा कि कैसे कलयुग में राम होंगे? कलयुग में रामलला आएंगे, लेकिन रामायण कैसे होगी? वगनाट्य लेखक ने मुझे कहा – देखो, रामायण में कांचन रूप का लालच दिखाकर रावण ने सीता का हरण किया था, कलयुग में ईडी, सीबीआई, इनकम टैक्स का डर दिखाकर चुनाव चिह्न, पार्टी और नेताओं का हरण होता है। रामायण में सीता मैय्या अशोक वन में विलाप कर रही थीं, आज लोकतंत्र कलयुग में विलाप कर रहा है। मैंने पूछा कि इसका उपाय क्या है? क्योंकि रामायण में हनुमान जी ने समुद्र लांघकर सीता मैया को रामजी की अंगूठी दी और उनका ढाढ़स बांधा। उन्होंने कहा कि यह आज भी हो सकता है। मैंने पूछा कि कैसे हो सकता है तो उन्होंने कहा – उन्हीं हनुमान से प्रेरणा लेकर समस्त देशवासियों को झूठी गारंटी और झूठे प्रोपेगेंडा का समुद्र लांघकर मतदान की अंगूठी देनी होगी और लोकतंत्र का ढाढ़स बांधना होगा।

सभापति जी, अंत में, मैं अपनी ही रची कविता की पंक्तियां सुनाकर वाणी को विराम दूंगा। इसके साथ ही मैं कलयुsग के उदाहरण का जिक्र करना चाहूंगा। कलयुग में एक ऐसा उदाहरण है, जिन्होंने आदर्श प्रस्थापित किया कि इंसान धर्म के लिए नहीं बल्कि धर्म इंसानों के लिए बना है और वह आदर्श है छत्रपति शिवाजी महाराज। मैं इसलिए 'जय श्री राम' जरूर कहता हूं लेकिन उससे पहले 'जय शिवराय' कहता हूं। *But, before I salute Lord Rama, I would like to salute Chhatrapati Shivaji Maharaj first because he was the one who had protected all the people, cattle and farms. He ensured that the Dharmsatta should not be allowed to rule, but it must go hand in hand with Rajsatta. This ideal should be followed.

माननीय सभापति जी, हम उन्हीं छत्रपति शिवाजी के राज्याभिषेक की 350वीं वर्षगांठ मना रहे हैं। संयोगवश माननीय प्रधान मंत्री जी शिव जयंती के अवसर पर मेरे चुनाव क्षेत्र के किले शिवनेरी में आ रहे हैं। मैं माननीय प्रधान मंत्री जी का तहे दिल से स्वागत करता हूं और साथ ही बड़ी विनम्रता से याद दिलाना चाहता हूं कि आपके कर कमलों से रामलला की प्राण

* Original in Marathi

प्रतिष्ठा तो हो गई, राम मंदिर का निर्माण तो हो गया, लेकिन अरबी समुद्र में होने वाला छत्रपति शिवाजी का शिव स्मारक के जल और भूमि पूजन भी आप ही के कर कमलों द्वारा 24 दिसंबर, 2016 को हुआ था और वह अभी भी निर्माण की प्रतीक्षा में है।... (व्यवधान)

सभापति जी, आप मुझे दो मिनट दीजिए। ... (व्यवधान)

**माननीय सभापति (श्री राजेन्द्र अग्रवाल):** क्या दो मिनट एक्सटेंड हो रहा है?

... (व्यवधान)

**डॉ. अमोल रामसिंह कोल्हे (शिरूर):** महोदय, मैं एक ही स्पीकर हूं।... (व्यवधान)

महोदय, उसी शिव स्मारक के साथ मेरे चुनाव क्षेत्र में शिवनेरी किले के परिसर में शिव संस्कार स्मारक बनाया जाए जिससे देश के युवाओं को माता और मातृभूमि के लिए सर्वोच्च योगदान की प्रेरणा मिलती रहे।

महोदय, अंत में, मैं अपनी रची कविता की पंक्तियां सुनाकर अपनी वाणी को विराम दूंगा।

मंदिर का निर्माण हुआ, रामलला भी विराजमान हुए,
अब जिम्मेदारी बनती है और सवाल भी उठता है,
रामलला तो आ गए, अब रामराज्य कब आएगा?
मंदिर में घंटा बजाने से, पूजा-अर्चना करने से दिल को सुकून तो मिलेगा,
परंतु मेरे देश में रामराज्य कब आएगा?
आस्था के विषय पर राजनीतिक रोटियां सेंकने से चुनाव-प्रचार का मुद्दा तो मिलेगा,
लेकिन मेरे देश में रामराज्य कब आएगा?
रामराज्य तो तब आएगा, जब धोबी की तरह आम देशवासी की शंका का समाधान होगा,
जब आज की शबरी का बेर आदर और प्रेमपूर्वक स्वीकार होगा,
जब किसान, मजदूर, महिला और हर नागरिक के साथ समान न्याय होगा,
किसानों को मेहनत का सही दाम और मेरे हर युवा के हाथ में काम होगा,
रामराज्य तो तब आएगा, जब मंदिर पर लहराता भगवा तिरंगे का रंग प्रतीत होगा,
दहलीज़ के बाहर कदम रखते ही राम, रहीम, रॉबर्ट, हर कोई सिर्फ भारतीय कहलाएगा।

(इति)

**माननीय सभापति:** धन्यवाद।

श्री सुनील कुमार जी।

1344 बजे

**श्री सुनील कुमार पिन्टू (सीतामढ़ी):** माननीय सभापति जी, मैं आपके प्रति विशेष रूप से धन्यवाद ज्ञापित करता हूं कि आपने मुझे इस शुभ अवसर पर इस सत्र के आखिरी दिन बोलने का मौका दिया।

महोदय, 22 जनवरी, 2024 का दिन विश्व के इतिहास लिखा गया क्योंकि इस दिन रामलला का मंदिर बनकर तैयार हुआ और रामलला उस मंदिर में विराजमान हुए। मैं धन्य हूं कि मैंने इस धरती पर जन्म लिया।।

(1345/MK/RCP)

उसी धरती से माँ सीता भी प्रकट हुईं। सीतामढ़ी का कण-कण पूजनीय है। मैं अपने-आप को धन्य मानता हूं कि माँ सीता की उस धरती से मैंने भी पैदा हुआ। आज भगवान राम के मंदिर के बाद अगर कोई मंदिर बनना चाहिए, जो माननीय प्रधान मंत्री जी का भी संकल्प है तो सीतामढ़ी में माँ सीता का भव्य मंदिर होना चाहिए और 'सीतागढ़ी' का नाम सीतामढ़ी नहीं बल्कि अयोध्याधाम की तरह 'सीतामढ़ीधाम' होना चाहिए। उसके लिए माननीय प्रधान मंत्री जी ने मुझे कहा था कि आप राम मंदिर के निर्माण होने तक इंतजार कीजिए। राम मंदिर के निर्माण के बाद सीता जी की भी मंदिर बनेगी। मुझे इस बात पर गर्व है कि अयोध्या में राम मंदिर ट्रस्ट के माननीय चंपत राय जी ने रामायण रिसर्च काउंसिल के तत्वावधान में और नलखेड़ा के हमारे पूजनीय गुरुदेव आदरणीय स्वामी स्वप्निल महारज जी का भी संकल्प है कि सीतामढ़ी में माँ सीता जी की भव्य मंदिर बने। माँ सीता जी, जो साक्षात् देवी स्वरूपा, पार्वती स्वरूपा, लक्ष्मी स्वरूपा और माँ जगत जननी शक्ति स्वरूपा हैं, वहां पर उनका एक मंदिर शक्तिपीठ के रूप में स्थापित हो। उसके लिए उन्होंने मुझे कहा है कि राम मंदिर ट्रस्ट की तरफ से सारे निर्माण कराए जाएंगे और अयोध्या की तर्ज पर सीतामढ़ी में सीता जी की भव्य मंदिर और उनकी भव्य मूर्ति स्थापित की जाएगी। इसके लिए राम मंदिर ट्रस्ट पूजा के बाद संकल्पित है और वहां कार्य शुरू होगा। मैं तो इस बात के लिए माननीय प्रधान मंत्री जी को धन्यवाद देता हूं कि 22 जनवरी, 2024 के ऐतिहासिक दिन पर अगले साल से 22 जनवरी को पूरे देश में छुट्टी घोषित हो। ऐसा भी एक संकल्प होना चाहिए।

मैं दूसरी बात कहना चाहता हूं कि जब 22 तारीख को अयोध्या में मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा हो रही थी तो माँ सीता के मायके से, हम लोग मिथिला के रहने वाले हैं, हम लोग कहते हैं जब हमारी बेटी का नया घर बनता है तो मायके से पूरे घर को भरा जाता है, सीतामढ़ी से 21 ट्रकों पर सामान लादकर सीतामढ़ीवासी वहां पहुंचे तो अयोध्या के लोगों ने कहा कि धन्य हैं सीतामढ़ी के लोग कि आज भगवान प्रभु श्री राम और मैया सीता के घर को भरने के लिए इतना संदेश और इतना सामान लेकर आए हैं। पूरे अयोध्यावासियों ने सीतामढ़ी के प्रति कृतज्ञता प्रकट की थी।

आज मैं इस सदन के माध्यम से माननीय प्रधान मंत्री जी के प्रति और सभी सदस्यों के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करता हूं। मैं कहना चाहता हूं कि जय श्री राम नहीं, जय सियाराम होना चाहिए, क्योंकि राम सीता के बिना अधूरे हैं। जब सीता उनके नाम के आगे जुड़ीं, तभी राम जाने गए। इसलिए 'जय सियाराम हो' और राम जी की तरह भव्य सीता जी की भी मंदिर बने। यही हमारा संकल्प है। आपने मुझे समय दिया, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

(इति)

1349 बजे

**श्री राहुल रमेश शेवाले (मुम्बई दक्षिण-मध्य):** सभापति महोदय, आपने मुझे राम मंदिर के प्रस्ताव पर बोलने का मौका दिया, उसके लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। जब इस सत्र के प्रारंभ होने से पहले सर्वदलीय नेताओं की बैठक हुई थी, मैंने उस वक्त ही शिवसेना की तरफ से प्रस्ताव रखा था कि इस सत्र में राम मंदिर के निर्माण के ऊपर अभिनंदन प्रस्ताव रखा जाए। इसके लिए मैं सरकार को धन्यवाद देता हूं कि शिवसेना की जो मांग थी, वह आज नियम 193 की चर्चा की माध्यम से पूरी हो रही है।

सभापति महोदय, 17 वीं लोक सभा के गठन के बाद लोक सभा अधिवेशन के पहले दिन मुझे शून्य काल में मुझे बोलने का अवसर मिला था। उस समय मैंने राम मंदिर निर्माण के आंदोलन के बारे विस्तार से अपना पक्षा रखा था। उस समय तक माननीय उच्चतम न्यायालय का फैसला नहीं आया था। आज अयोध्या में निर्मित भव्य राम मंदिर के निर्माण के बाद हमारे आराध्य देव श्री राम को स्मरण करने से मन भाव विभोर होकर अह्लादित हो उठा है। बहुत लोग श्री राम के होने पर ही प्रश्न चिह्न लगाते हैं। कुछ लोग प्रश्न करतें कि राम नाम में ऐसा क्या है? यह नाम महिमामंडित है।

महोदय, मैं उन लोगों को बताना चाहूंगा कि राम नाम वह शक्ति है कि पत्थर भी पानी में तैरने लगते हैं बशर्ते राम नाम भावना से नहीं बल्कि पूरी श्रद्धा से लिया जाए, क्योंकि भावना निर्मल होती है तो श्रद्धा निश्चल होती है।

(1350/SJN/PS)

सभापति महोदय, श्रीराम सिर्फ देवता नहीं, सिर्फ महाकाव्य के नायक नहीं, श्रीराम भारत की प्रेरणा हैं, श्रीराम भारत के आदर्श हैं और श्रीराम भारत का एक सम्मान हैं। अयोध्या में श्रीराम मंदिर का पुनर्निर्माण यानी इस भारत देश के आदर्शों का पुनर्निर्माण है। कुछ सदियों पहले श्रीराम का मंदिर गिराकर भारत देश की संस्कृति का अपमान किया गया था, तब देश के सम्मान को ठेस पहुंची थी। आदरणीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने राम मंदिर पुनर्निर्माण का नेतृत्व कर देश के गौरव को फिर से खड़ा किया है।

यह सिर्फ एक मंदिर की निर्मिति नहीं है, ये नए भारत की निर्मिति का आरंभ है। यह नया भारत किसी का तुष्टीकरण नहीं करता है, यह नया भारत आज तक दबे-कुचले भारतीयों को सीना तानकर चलने की हिम्मत देता है। इस नए भारत में झूठे सेकुलरिज्म की कोई जगह नहीं है। ये नया भारत धर्म के आधार पर लोकतंत्र को शक्तिशाली बनाना चाहता है। ये नया भारत दुनिया की भीख का मोहताज नहीं है। ये नया भारत दुनिया के कंधों से कंधा मिलाकर चलता है और दुनिया का नेतृत्व करने की इच्छा रखता है। इस नए भारत की नींव श्रीरामलला के प्राण प्रतिष्ठा से रखी गई है। इतिहास में स्वर्ण अक्षरों से लिखा जाएगा और इस महान कार्य को करने के लिए प्रधानमंत्री जी को भारत की जनता धन्यवाद तो दे रही है और प्रधानमंत्री जी इस लोक सभा के अभिनंदन के पात्र भी हैं। जो महागठबंधन बना है, इसके लिए प्रधानमंत्री जी के ऊपर वह व्यक्तिगत रूप से आरोप लगाता है और अकेले प्रधानमंत्री मोदी जी उनका सामना कर रहे हैं। उनका विरोध केवल मोदी जी कर रहे हैं। मैं मोदी जी के लिए गीता की चंद पंक्तियां सुनाना चाहता हूं।

"सत्य और असत्य की लड़ाई में सत्य अकेला खड़ा है,
असत्य के साथ तो बड़ी फौज है, लेकिन मूर्खों का झुंड खड़ा है।"

सभापति महोदय, मोदी सरकार ने अयोध्या के राम मंदिर के लिए अथक आंदोलन करने वाली हस्तियों को देश का सर्वोच्च पुरस्कार 'भारत रत्न' देने की घोषणा की है, जो निश्चित रूप से सराहनीय

काम है। इसके लिए उनकी जितनी भी प्रशंसा की जाए, वह कम है। राम मंदिर के आंदोलन को धार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले माननीय लालकृष्ण आडवाणी जी को 'भारत रत्न' देने की घोषणा देश के 140 करोड़ लोगों का सम्मान है। देश के पूर्व उप प्रधानमंत्री माननीय लालकृष्ण आडवाणी जी राम मंदिर आंदोलन का प्रमुख चेहरा रहे हैं। उन्होंने इसके लिए रथयात्रा निकालकर अपने देश के 130 करोड़ हिन्दुओं की इच्छा को पूरा करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाया है, इसके लिए मैं फिर से एक बार सरकार को धन्यवाद देता हूं।

सभापति महोदय, माननीय आडवाणी जी के साथ ही अयोध्या में प्रभु राम मंदिर के निर्माण में देश के पूर्व प्रधानमंत्री नरसिम्हा राव जी का भी महत्वपूर्ण योगदान है। 6 दिसंबर, 1992 को अयोध्या में हजारों कार सेवकों न अयोध्या में मौजूद बाबरी ढांचे को ध्वस्त कर दिया था। जब ढांचा तोड़ा जा रहा था, तो उत्तर प्रदेश में कल्याण सिंह जी मुख्यमंत्री थे और पी. वी. नरसिम्हा राव जी केन्द्र में प्रधानमंत्री थे। उन पर जान-बूझकर बाबरी ढांचा ढहाने का भी आरोप लगा था। दिवंगत पत्रकार कुलदीप नैयर ने अपनी पुस्तक "बियॉड द लाइन्स" में लिखा है कि जब बाबरी ढांचा तोड़ा जा रहा था, तब प्रधानमंत्री श्री राव पूजा पर बैठे थे और उन्होंने वहां मौजूद सहयोगियों को सलाह दी थी कि उन्हें पूजा करते समय न डिस्टर्ब किया जाए। इससे स्पष्ट है कि अयोध्या में प्रभु राम मंदिर के निर्माण की राह को आसान करने में उनका भी बहुत बड़ा योगदान रहा है। मोदी सरकार ने माननीय आडवाणी जी के बाद उनको भी देश का सर्वोच्च सम्मान यानी 'भारत रत्न' देने की घोषणा करके, देश के 130 करोड़ हिन्दुओं का सम्मान किया है। इसके लिए मैं फिर से एक बार सरकार को धन्यवाद देता हूं।

सभापति महोदय, आपको पता है कि राम मंदिर के निर्माण की राह को प्रशस्त करने में हिन्दु हृदय सम्राट और शिवसेना के संस्थापक दिवंगत बालासाहेब ठाकरे जी का भी बड़ा योगदान रहा है। 6 दिसंबर, 1992 को अयोध्या में बाबरी विध्वंस में उनकी भी संलिप्तता मानी गई है। हालांकि वे खुद बाबरी विध्वंस स्थल पर मौजूद नहीं थे। वे बाबरी ढांचा गिराने की रणनीति का अहम हिस्सा थे। बालासाहेब ठाकरे जी ने स्वयं दावा किया था कि उनके संगठन ने मस्जिद गिराने में अहम भूमिका निभाई थी। हिन्दुत्व और हिन्दु धर्म के प्रखर प्रणेता बालासाहेब ठाकरे जी को याद कर आज हर हिन्दु का सीना गर्व से चौड़ा हो जाता है और मस्तक ऊंचा हो जाता है। मैं सरकार से यह मांग करता हूं कि देश की इस महान हस्ती हिन्दु हृदय सम्राट शिवसेना प्रमुख बालासाहेब ठाकरे जी को भी भारत रत्न देकर देश के 130 करोड़ हिन्दुओं का सम्मान करें। मैं इस प्रस्ताव के माध्यम से सरकार को यह भी बताना चाहता हूं कि जिन-जिन लोगों का इस राम मंदिर के निर्माण में योगदान है, तो उनका भी सम्मान होना चाहिए। कार सेवकों का तो बहुत ही बड़ा योगदान और बलिदान रहा है। मैं सरकार से यह मांग करता हूं कि जिन कार सेवकों ने अपना बलिदान दिया है, अगर सरकार के माध्यम से उनके परिवारों के लिए एक पेंशन योजना चालू की जाए, तो उनके कार्य को एक बड़ा सम्मान मिलेगा।

(1355/SPS/SMN)

यह लास्ट सत्र है और आज लास्ट ही दिन है। इसके बाद लोक सभा चुनाव हैं और सभी लोक सभा चुनाव में जाएंगे। मैं सभी को लोक सभा चुनाव के लिए शुभकामनाएं देता हूं और जाते-जाते यही बताना चाहता हूं कि – 'जो राम को लाए हैं, हम उनको लाएंगे, मोदी जी को तीसरी बार प्रधान मंत्री बनाएंगे।' जय श्री राम।

(इति)

1355 hours

DR. UMESH G. JADAV (GULBARGA): Hon. Chairman, Sir, thank you for the opportunity you have given me today to speak on the discussion on the construction of historic Sri Ram Temple and Pran Pratishthan of Sri Ram Lalla.

Mr. Chairman, Sir, I believe that it is one of the best and golden moments of my life. It is said that just by taking the name of Ram once, life will be transformed, all the troubles will go away. And today, you have blessed my life by giving me the opportunity to discuss about Lord Ram. सबको मेरा राम-राम, जय श्री राम, जय सेवालाल।

Mr. Chairman, Sir, this is not just a temple, it is a temple of faith of every person who had dreamt for it; this is the temple of dreams of every Ram devotee, who had his breath with this faith for almost 500 years that one day Ram temple will be built and it will be built at the same place where Ram Lalla was born.

This Ram Mandir is a symbol of trust in our judicial system and every Indian has faith in law and justice. I thank the hon. Supreme Court for the historic judgement.

This Ram Mandir is the symbol of crores of people who voted for Narendra Modi ji with the confidence that Ram temple will be built.

This Ram Mandir is a symbol of trust, which say जो कहा, वह किया, not just limited to vote politics.

Mr. Chairman, Sir, I come from the Banjara community, in which people greet everyone by saying Ram-Ram. There is a population of eight to ten 10 crore of Banjara community in India, and this is the community whose language, culture and attire are one across the country.

Every individual of Banjara community is feeling proud that he has been called for the inauguration of historic Sri Ram Temple and Pran Prathishthan of Sri Ram Lalla and gave a befitting reply to those people who say that only the upper community has been given priority for this

sacred event. It is because in this program, our Banjara Gurus Shri Babu Singh Maharaj ji descendants of our spiritual *santh* Shri Sevalal Maharaj ji, along with the Maharaja from my State Karnataka Shri Baliram Maharaj, Shri Murari Maharaj, Shri Siddhaling Maharaj along with many backward caste *Santh* Maharaj were invited.

I would like to thank the respected Prime Minister and Shri Ram Janmabhoomi Tirtha Kshetra Committee for giving such a big opportunity to my Banjara community on this auspicious occasion. My entire Banjara community of the country has looked at this invitation from you with pride. For this, I thank you once again.

Mr. Chairman, Sir, I would like to mention here that on 5th March 2020, when the religious Guru of my Banjara community Shri Ramrao Maharaj ji of Pohradevi, located in Washim district of Maharashtra State, which is called Banjara's Kashi had met our respected Prime Minister in Parliament House and invited to be the chief guest on the occasion of Ram Navami in 2020.

But due to the corona epidemic, his dream remained unfulfilled and our Maharaj had left for heavenly abode on 30th October 2020. But today, I want to tell the house that due to our Prime Minister Shri Modi ji, our revered Guru Bal Tapasvi and Bal Brahmachari Shri Ramrao Maharaj had become immortal to the entire nation.

With just one message on Twitter and Facebook Modi ji had mentioned that Shri Ramrao Bapu Maharaj ji will be remembered for his service to society and rich spiritual knowledge. He worked tirelessly to alleviate poverty and human suffering. I had the honour of meeting him a few months ago. In this sad hour, my thoughts are with his devotees, om shanti. After that the entire India's all the big leaders had paid tribute to our Ramarao Maharaj ji.

(1400/SM/MM)

His dream was to build a grand temple in Poharadevi and this place should be developed like other pilgrimage centres like Kashi and Ayodhya. After our BJP-Shiv Sena government came to power in Maharashtra, today this *teerth kshetra* has been developed at a cost of Rs. 593 crores by the State Government of Maharashtra.

This is the biggest gift of this Government to the people of Banjara community. I take the privilege to thank hon. Pradhan Mantri, Shri Narendra Modi ji, Hon. Chief Minister, Shri Eknath Shinde ji, Deputy Chief Minister, Shri Devendra Fadnavis and the hon. Minister, Shri Sanjay Bhau Rathod ji on the historical decision of building the temple at Poharadevi.

Sir, I come from a State where every person is looking at himself with pride and saying that the idol of Ram Lalla has been sculpted by Shri Arun Yogiraj ji of our State of Karnataka. Sir, I would like to thank our respected hon. Prime Minister and hon. Minister of Culture and Tourism, Shri G. Kishan Reddy ji for celebrating Baba Lakisha Banjara Jayanti during Azadi Ka Amrit Mahotsav at Talkatora Stadium for the first time in the history of post-Independence.

I would like to draw the kind attention of this august House to one thing. We all know about the 9$^{th}$ Sikh Guru, Guru Teg Bahadur ji and how he sacrificed his life for the protection of religion. But only a few know that after the *shaheedi* of Guru Teg Bahadur ji, it was the Baba Lakhi Shah Banjara who took the risk of his life and his entire family and cremated the body of Guru Teg Bahadur ji by setting fire to his entire house. That sacred place, called Gurudwara Rakab Ganj, is just adjacent to the Parliament House.

Sir, today I am saying these things because our Prime Minister, Shri Narendra Modi ji has fulfilled all the dreams that we had once dreamt. I was in Gulbarga on the day of Ram Lalla Pran Pratishtha. I realised how important this historical day is for every person. Everyone has lived that moment and this auspicious occasion in his own way. There were lights and happiness in everyone's house like Diwali.

In the Banjara community from which I come, there was a festival-like atmosphere in the entire 5,500 thandas of Karnataka, despite being 2,000 kilometre away from Ayodhya. Every Banjara of Southern States was as happy and enthusiastic as the people of Ayodhya and entire North India.

I thank the people of my Gulbarga constituency who had celebrated this historic day of Ram Lalla Pran Pratishtha with happiness and peace. I would also like to thank my constituency people for giving me this biggest opportunity to sit in this august House of democracy called Parliament of India.

Sir, I would like to give special thanks to the Chair and the entire staff who have given me the support and opportunity to raise issues relating to my parliamentary constituency. I am lucky that I have got the opportunity to speak on the last working day of the five-year period. I thank the entire House, all the staff and everybody. Thank you, Sir.

(ends)

1404 hours

SHRI RAM MOHAN NAIDU KINJARAPU (SRIKAKULAM): Thank you very much, hon. Chairman, Sir, for giving me this opportunity to speak on this important issue. I would like to congratulate our 140 crore Indians for the Pran Pratishtha of Ram Lalla in Ayodhya.

I would like to take a moment also to congratulate our hon. Prime Minister, Shri Narendra Modi ji and countless other individuals across India who strived hard and sacrificed for the centuries-old dream of having the temple in Ayodhya. I had the good fortune of taking part in the inauguration of Ram Lalla's mandir on 22nd January,2024 accompanying my hon. leader, Shri Nara Chandrababu Naidu ji and it is an unforgettable experience in my life.

(1405/RP/YSH)

I would like to remind this August House that Lord Ram has been a part of our country's identity for thousands of years. From Kashmir to Kanyakumari and from Somnath to Pasighat, Lord Ram is omnipresent. He is not only restricted to our country but is celebrated cross various other countries like Indonesia, Myanmar, Vietnam, Thailand, Laos, and across the world we see him worshiped in temples.

We remember him in joy and sadness. We call him at our darkest times and thank him when we achieve great things. He is in the heart of my fellow brothers and sisters irrespective of caste, creed or religion. He is not only a part of our collective identity but also in our names. No matter which part of our country we are talking about, I am sure, each family has a member who is named after Lord Ram and I can proudly say, my name is Ram. I was also named after him by my parents as I was born in the same Nakshatra, the Punarvasu Nakshatra, as Lord Ram. That is how, my parents have named me Ram. Much like other children in this country, I was raised on his stories and grew to idealise his morals, respect for society, and dedication to doing what was right by all. Even before I knew anything about politics, I knew about the virtues of Lord Ram and Ramayana.

Sir, it is because of his *vanavas* for 14 years, he explored North and South India and by the end of his great epic journey, he brought an integration to these regions. We, the Telugu people of Andhra Pradesh, have a very close association with the journey of Lord Sri Ram, especially, with the places like Bhadrachalam, which is also called as Dakshin Ayodhya. Lord Ram stayed there for a brief period during his exile and traversed through the forests of Dandakaranya. Parnasala which is also located near Bhadrachalam, is believed to be the place of Lord Rama where he built a hermitage during his exile. There are other places like Lepakshi. This was a place where Jatayu fought valiantly against Ravana when he was abducting Maa Sita.

Sir, our connection to Lord Ram is not only limited to the legends and the wars he fought. His divinity not only comes from being an incarnation of God but also from the values that he stood for. He showcased such qualities that people across religions and civilisations have a deep connection with. His ideals and morals on governance which we dearly call 'Ram Rajya' have long been considered to be the pinnacle of how a Government must work.

Sir, we have heard my fellow speakers speak about Ram Rajya. Even now, when we go to the elections, when we campaign, definitely, we are going to use this word more and more on bringing up Ram Rajya. But, what is Ram Rajya? I believe that Ram Rajya is simply put the adaptation of Lord Ram's virtues into the governance of society. I would like to explain it with an example. When Lord Ram decided to go to Lanka to save Maa Sita from the clutches of Ravana, his army did not consist of only one group. He could have singularly taken action being an incarnation of Lord Vishnu. He had all the powers. But, he still chose to work collectively with various beings from Lord Hanuman to Jatayu and from Laxshman to Vibhishan. Even a small animal like a squirrel came in support of Lord Ram. They were all with him not merely because he was God but because he inspired them to come together and achieve collective greatness.

Similalrly, Ram Rajya speaks about the necessity of all parts of society working collectively together. A society cannot grow if there is no collective growth. Our country would grow only if everyone of would work together. Keeping the ideals of Lord Ram, we need to achieve this overall benefit of society.

Sir, Ram is devotion to Dharma; Ram is sacrifice and selflessness; Ram is equality and justice for all; Ram is respect and protection for women; Ram is good governance; Ram is compassion and benevolence; Ram is unity and harmony; Ram is personal integrity and honesty; Ram is discipline and perseverance; and Ram is devotion in loyalty.

Sir, as I conclude my speech, I would like to remind this August House that Lord Ram is prevalent across all sections, religions, and workings of our country. His ideals are relevant from education to foreign policy and from governance to communal harmony. The ideals of Lord Ram go beyond religion and define the world view of people of Bharat Desam. From 7000 years, these ideals have remained in the hearts and minds of the people. They are defining what is right and what is wrong; and what is good and what is evil.

We must strive to not restrict his greatness by politicising him, by philosophically restricting him but rather make all efforts to live up to his legend, his ideals, and his greatness. Sir, I am reminded of a shloka:

राजधर्म परायणा: रघुकुल नायक: सत्य धर्म चरित्रस्त श्री राम सर्वदा स्मर:

Jai Sri Ram!

(ends)

(1410/RAJ/NKL)

1410 बजे

**श्री असादुद्दीन ओवैसी (हैदराबाद):** मोहतर्रम चेयरमैन साहब, आपका बेहद शुक्रिया। मैं इस मोशन के मुखालिफत में खड़ा हुआ हूं। मैं शुरुआत में हबीब जालीब का एक शेर पढ़ना चाहता हूं। आप उर्दू जानते हैं और लॉ मिनिस्टर उर्दू जानते हैं। हबीब जालीब ने कहा था कि

*हुक्मरां हो गए कमीने लोग*
*ख़ाक में मिल गए नगीने लोग*
*हर मुहिब्ब-ए-वतन ज़लील हुआ*
*रात का फ़ासला तवील हुआ*
*आमिरों के जो गीत गाते रहे*
*वही नाम-ओ-दाद पाते रहे*
*रहज़नों ने रहज़नी की थी*
*रहबरों ने भी क्या कमी की थी।*

सर, अभी शिंदे ग्रुप शिवसेना पार्टी लीडर अपनी तकरीर कह रहे थे। उन्होंने कहा कि जब 6 दिसम्बर को बाबरी मस्जिद को शहीद किया जा रहा था, उस वक्त के वजीरे आजम नरसिम्हा राव पूजा कर रहे थे। आप ही ने कहा और कहा कि कोई डिस्टर्ब नहीं करना। ये बड़ा अजीब मौका है कि बीजेपी की ताईदी पार्टी यह कह रही है कि नरसिम्हा राव ने कहा कि मुझे डिस्टर्व नहीं करो, मैं पूजा कर रहा हूं। जिसने रथ यात्रा निकाली, इन दोनों को मोदी सरकार ने इस मुल्क का सबसे बड़ा सिविलियन अवार्ड दे दिया।...(व्यवधान) यह बताता है कि इंसाफ जिंदा है या जुल्म को बरकरार रखा जा रहा है।...(व्यवधान)

सर, तीसरी बात यह है कि इस ऐवान में सियासी पार्टियां आएंगी और चले जाएंगी। आप यहां आए, मैं यहां आया, हम भी यहां से चले जाएंगे। मैं इस जमीन की गिज़ा बन जाऊंगा। यह ऐवान तो बाकी रहेगा। मैं ताज्जुब कर रहा हूं कि लोक सभा मुखतलिफ आवाजों में कैसे बोल सकती है? लोक सभा को एक ही आवाज में बोलना चाहिए और लोक सभा भी भारत के संविधान आईन के बेसिस स्ट्रक्चर का ताबे है। सर, मैं यह ले कर देता हूं। यह इसलिए कह रहा हूं कि 16 दिसम्बर, 1992 को इसी लोक सभा ने एक रेजोल्युशन पेश किया था। आप इजाजत दीजिए तो मैं पढ़ता हूं। ये गुलाम नबी उस वक्त के मिनिस्टर थे। मैं नाम नहीं लेना चाह रहा था।

> "This House strongly and unequivocally condemns the desecration and demolition of the Babri Masjid at Ayodhya by and at the instigation of forces represented among others by VHP, RSS and the Bajrang Dal, which has caused communal violence in the country. Such act of vandalism was carried out not only in violation of the orders of the Supreme Court but amounted to an attack on the secular foundations of our country. This House

expresses its anguish at the happening and wishes to reiterate its resolve that it will ceaselessly endeavour to uphold the secular and democratic traditions of our country and for the maintenance of the Rule of Law."

एक और पैराग्राफ है, मैं वह नहीं पढ़ूंगा। मैं ताज्जुब कर रहा हूं कि जब इस ऐवान ने एक रेजोल्युशन पास किया तो हुकूमत आएगी-जाएगी और यह मोदी हुकूमत जश्न मना रही है, जो 6 दिसम्बर को हुआ। यह एक बात है। चौथी बात यह है।

**माननीय सभापति (श्री राजेन्द्र अग्रवाल):** नहीं, 6 दिसम्बर के ऊपर कोई जश्न नहीं है। राम मंदिर का निर्माण और जो प्रतिष्ठा हुई है, उसको संबोद्धन करना है। वह माननीय सर्वोच्च न्यायलय के द्वारा तथ्यों के आधार पर दिए गए निर्णय के कारण हुआ है। वह माननीय सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय है, तथ्यों के आधार पर निर्णय है। आपने वह विषय कह दिया, वह ठीक है। परंतु मंदिर का जो निर्माण है, वह नियमानुसार माननीय सर्वोच्च न्यायलय के निर्णय से तथ्यों को देख कर।

… (व्यवधान)

**माननीय सभापति :** आप इस्लाम के बहुत जानकार हैं। वैसे भी आप कानून के विद्वान हैं। यदि किसी अन्य धर्म के स्थान पर मस्जिद बनाई जाए तो शायद उसको मान्य नहीं किया जाता। अभी एएसआई ने माननीय सुप्रीम कोर्ट में स्वीकार किया है कि वहां पर राम मंदिर था।

… (व्यवधान)

**माननीय सभापति :** विषय केवल यह है कि वहां पर राम मंदिर ठीक बना या नहीं बना। वह विषय हो गया। कृपया आप यदि इस पर कुछ बोलना चाहें तो बोलिए।

**श्री असादुद्दीन ओवैसी (हैदराबाद):** सर, अभी मैं आपको गलत साबित कर दूंगा।… (व्यवधान) रूक जाइए। मैं आपकी बड़ी इज्जत करता हूं। मैं माननीय सुप्रीम कोर्ट का जजमेंट पैराग्राफ 1222(xvii) कोट कर रहा हूं। उसमें लिखा गया है।

(1415/KN/VR)

उसमें लिखा गया है कि – The destruction of the mosque took place in breach of the order of status quo and an assurance given to this Court. The destruction of the mosque and the obliteration of the Islamic structure was an egregious violation of the rule of law. छोटी-मोटी अंग्रेजी हमें आती है। एग्रेगियस का मतलब क्रिमिनल एक्ट कहा। आपने कहा था कि वहां पर मंदिर को तोड़ कर बनाया गया।

सर, मैं आपके सामने ये तमाम चीजें ले कर दूंगा। सुप्रीम कोर्ट के जजमेंट के जो पैराग्राफ्स हैं, सुप्रीम कोर्ट ने एएसआई की रिपोर्ट को नकारा। उन्होंने कहा कि मंदिर को तोड़ कर मस्जिद नहीं बनाई गई थी। सुप्रीम कोर्ट ने यह कहा।… (व्यवधान) मैं इसे रख दूंगा, आप पढ़ लीजिए।… (व्यवधान)

सर, मैं अपनी तकरीर पर आ जाता हूं। मैं अपनी बात रख देता हूं। मैं यह पूछना चाह रहा हूं कि क्या मोदी सरकार एक समुदाय, एक मजहब की सरकार है या पूरे देश के मज़ाहिब को मानने

वालों की सरकार है या जो नहीं मानते उनकी सरकार है? हमको बता दीजिए।... (व्यवधान) क्या मोदी सरकार सिर्फ एक फिक्र और नजरिया हिन्दुत्व की सरकार है? क्या इस देश का, इस गवर्नमेंट ऑफ इंडिया का कोई मजहब है? इस वतन-ए-अज़ीज़ सब के मजहब को मानता हो। सर, मेरा मानना है कि इस देश का कोई मजहब नहीं है। क्या यह सरकार 22 जनवरी का पैगाम देकर यह बताना चाहती है कि एक मजहब को दूसरे मजहब के मानने वालों पर गलबा और कामयाबी मिली? क्या आईन इसकी इजाजत देता है? क्या यह पैगाम आप जो इस ऐवान से दे रहे हैं, तो 17 करोड़ मुसलमानों को क्या पैगाम दे रहे हैं? यह मैं आप पर छोड़ता हूं।

सर, वर्ष 1949 में धोखा हुआ, वर्ष 1986 में धोखा हुआ, वर्ष 1992 में धोखा हुआ, वर्ष 2019 और 2022 में भी इस ऐवान के जरिये हमको धोखा दिया जा रहा है तथा अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि मुस्लिम अखलियत को हमेशा यह कहा गया कि तुमको भारत के शहरी बरकरार रहने के लिए एक बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ेगी और हम पर इल्जाम लगा दिया गया। क्या मैं बाबर का स्पोक्सपर्सन हूं, क्या मैं जिन्ना का स्पोक्सपर्सन हूं, क्या मैं औरंगजेब का स्पोक्सपर्सन हूं? आप बताइये।... (व्यवधान) आखिर आप मुझे कहां तक लेकर जाएंगे?

सर, दूसरी बात यह है कि 6 दिसंबर के बाद देश में फसाद हुआ, नौजवानों को टाडा में डाला गया, जो बूढ़े होकर निकले। यकीनन आपकी सरकार नहीं थी। मैं तो मर्यादा पुरुषोत्तम राम की इज्जत करता हूं। मगर मैं नाथूराम गोडसे से नफरत करता हूं, मेरी नस्लें नफरत करती रहेंगी क्योंकि नाथूराम गोडसे ने उस शख्स को गोली मारी, जिसकी जबान से आखिर लफ्ज़ हे राम निकले।

सर, छठी बात यह है कि वर्ष 1987 में मलियाना हाशिम पुरा हुआ, वर्ष 1983 नेल्ली हुआ, वर्ष 1944 में जम्मू में नस्लकशी हुई, वर्ष 2022 में हल्द्वानी में कत्ल हुआ, इतने धोखे सबसे बड़े किसको दिए गए, असादुद्दीन ओवैसी को दिए गए? मगर फिर भी मुझसे यह कहा जाता है कि वफादारी को तुम साबित करो। आज भारत के 17 करोड़ मुसलमान अपने आपको अजनबी और एलियनेटेड महसूस कर रहे हैं।... (व्यवधान) बहुत बड़ी नाइंसाफी होती है, यह कोई तारीख-ए-नाइंसाफी को इंसाफ नहीं किया जा रहा है।... (व्यवधान)

**डॉ. निशिकांत दुबे (गोड्डा):** स्पीकर सर, ओवैसी साहब, केवल एक प्रश्न का जवाब दे दें कि बाबर को वह आक्रमणकारी मानते हैं या नहीं मानते हैं?

**श्री असादुद्दीन ओवैसी (हैदराबाद):** आप पुष्यमित्र शुंग को क्या मानते हैं? आप बताओ।... (व्यवधान) आप पुष्यमित्र शुंग को क्या मानते हैं? वह कश्मीर के राजा को क्या मानते हैं, जिसके पास मंदिरों को तोड़ने के लिए एक फौज थी। आप उसे क्या मानते हैं? यही तो मैं कह रहा हूं कि वर्ष 1947 में आज़ादी मिली और निशिकांत दुबे आवैसी से बाबर की बात पूछ रहे हैं। तुम गांधी की बात पूछते, तुम बोस की बात पूछते, तुम जलियांवाला बाग की बात पूछते, कालापानी में जो मुसलमान शहीद हो गए, तुम उनकी बात पूछते। मगर बाबर की बात पूछी जाती है।... (व्यवधान) सर, मैं आपको बता रहा था, ख्वामख्वाह मुझे डिस्टर्ब किया और निशिकांत दुबे ने मेरा वक्त ले लिया।... (व्यवधान)

(1420/VB/SAN)

सर, मैं आपसे कह रहा था कि मोदी हुकूमत भारत के मुसलमानों को यह पैगाम दे रही है कि जान बचाना है या इंसाफ चाहते हो। मैं कह रहा हूँ कि मैं भीख नहीं मागूँगा। इस तास्सुब को कबूल नहीं करूँगा। मैं दूसरे दर्जे के शहरी के मौकफ़ को कबूल नहीं करूँगा। मैं अपनी शिनाख़्त को नहीं मिटने दूँगा। अब मैं झूठी और दिलफरेब बातों पर हरगिज भरोसा नहीं करूँगा। मैं वह काम नहीं करूँगा, जो बीजेपी और नाम-निहाद सेकुलर पार्टियाँ चाहती हैं। मैं संविधान के दायरे में रहकर, वह काम करूँगा, जो आपको पसंद नहीं है।

सर, कंक्लूजन में, मैं आपको बताना चाहता हूँ कि आज इस देश को किसकी जरूरत है। इस को अयोध्या में, शायद आप तारीख नहीं पढ़ते होंगे। मौलाना अमीर अली कौन थे? पुजारी बाबा राम चरण दास कौन थे? ये अयोध्या के पुजारी थे। इन दोनों ने मिलकर अंग्रेजों के खिलाफ जंग लड़ी थी। इन दोनों को अंग्रेजों ने गिरफ्तार किया था और एक पेड़ पर लटकाकर मौलाना अमीर अली और पुजारी राम चरण दास को फांसी दे दी गई। देश को इनकी जरूरत है। देश को शंभू प्रसाद, अछन खाँ की जरूरत है। ये राजा देवी बख्श सिंह की फौज़ में थे। इन्होंने अंग्रेजों से मुकाबला किया। मुसलमान की लाशों को जला दिया गया और शंभू प्रसाद को दफना दिया गया। इस को उनकी जरूरत है। इस देश को बाबा मोदी की जरूरत नहीं है। आज भारत को अयोध्या के मौलाना अमीर अली, पुजारी राम चरण दास, शंभू प्रसाद, अछन खाँ की जरूरत है। मैं अभी नाम-निहाद सेकुलर पार्टियों के बयानात को सुन रहा था। जब क़ाजी साहब गवाहों को लेकर दुल्हन के पास जाते हैं और वे दुल्हन से पूछते हैं कि क्या तुमको निक़ाह कबूल है, तो दुल्हन शरमाकर खामोश बैठ जाती है, तो इनकी खामोशी रज़ामंदी की अलामत है।

सर, मैं अपनी बात खत्म करने से पहले यह बताना चाहता हूँ कि जब वज़ीरे आज़म जवाब देंगे, तो क्या वे भारत के 140 करोड़ जनता के लिए जवाब देंगे या वे सिर्फ हिन्दुत्व की फिक्र करने वाले के लिए जवाब देंगे। इसे यह देश-दुनिया और सारे मुसलमान देख रहे हैं।... (व्यवधान)

सर, मैं कंक्लूड करने जा रहा हूँ। मेरा मानना यह है कि आज मैं बहैसियत भारत के एक ग़य्युर मुसलमान, Sir, let me stand as a tall Indian Muslim and say that the light of Indian democracy is at its dimmest today. मेरी फिक्र में, मेरा ईमान मुझे कहता है कि जिस जगह पर मस्जिद थी, है और रहेगी। बाबरी मस्जिद है और रहेगी। बाबरी मस्जिद जिंदाबाद, जिंदाबाद। भारत जिंदाबाद। जय हिंद।

(इति)

جناب اسدالدین اویسی (حیدرآباد): چیئرمین صاحب، آپ کا بہت شکریہ۔ میں اس موشن کی مخالفت میں کھڑا ہوا ہوں۔ میں شروعات میں حبیب جالب کا ایک شعر پڑھنا چاہتا ہوں۔ آپ اردو جانتے ہیں اور لاء منسٹر اردو جانتے ہیں۔ حبیب جالب نے کہا تھا کہ

حکمراں ہو گئے کمینے لوگ
خاک میں مل گئے نگینے لوگ
ہر محب وطن ذلیل ہوا
رات کا فاصلہ طویل ہوا
آمروں کے جو گیت گاتے رہے
وہی نام و داد پاتے رہے
رہزنوں نے جو رہزنی کی تھی
رہبروں نے بھی کیا کمی کی تھی

سر، ابھی میں شنڈے گروپ کے شو سینا کے پارٹی لیڈر تقریر کر رہے تھے۔ انہوں نے کہا کہ جب 6 دسمبر کو بابری مسجد کو شہید کیا جا رہا تھا، اس وقت کے وزیر اعظم نرسمہا راؤ پوجا کر رہے تھے۔ آپ یہ نہیں کہا اور کہا کہ کوئی ٹریٹر نہیں ہونا۔ یہ بڑا عجیب واقع ہے کہ بی۔جے۔پی کی ساتھی پارٹی یہ کہہ رہی ہے کہ نرسمہا راؤ نے کہا کہ مجھے ٹریٹر نہیں بننا ہے، میں پوجا کر رہا ہوں۔ جس نے رتھ یاترا نکالی، ان دونوں کو مودی سرکار نے اس ملک کا سب سے بڑا سویلین اوارڈ دے دیا۔ (مداخلت)۔ یہ بتاتا ہے کہ انصاف زندہ ہے یا ظلم کو برقرار رکھا جا رہا ہے (مداخلت)۔

سر، تیسری بات یہ ہے کہ اس ایوان میں سیاسی پارٹیاں آئیں گی اور چلی جائیں گی۔ آپ یہاں آئے، میں یہاں آیا، ہم بھی یہاں سے چلے جائیں گے۔ میں اس زمین کی غذا بن جاؤں گا۔ یہ ایوان تو باقی رہے گا، میں یہ تعجب کر رہا ہوں کہ لوک سبھا مختلف آوازوں میں کیسے بول سکتی ہے؟ لوک سبھا کو ایک ہی آواز میں بولنا چاہئیے اور لوک سبھا بھارت کے آئین کے بیسک سٹرکچر کے تابع ہے۔ سر، میں لکھ کر دیتا ہوں۔ یہ اسلئے کہہ رہا ہوں کہ 16 دسمبر 1992 کو اسی لوک سبھا نے ایک ریزولیوشن پیش کیا تھا۔ آپ اجازت دیجئے تو میں پڑھتا ہوں یہ الفاظ بھی اس وقت کے منسٹر تھے میں ان کا نام نہیں لینا چاہ رہا تھا۔

ایک اور پیراگراف ہے میں وہ نہیں پڑھوں گا، میں تعجب کر رہا ہوں کہ جب اس ایوان نے ایک ریزولیوشن پاس کیا تو حکومت آئیں گی، جائیں گی اور یہ مودی حکومت ہمیشہ نہیں رہی ہے، جو 6 دسمبر کو ہوا۔ یہ ایک بات ہے۔ سر، چوتھی بات یہ ہے کہ سر، ابھی میں آپ کو غلط ثابت کر دوں گا۔ (مداخلت) (رُک جائیے۔ میں آپ کی بڑی عزت کرتا ہوں، میں آنریبل سپریم کورٹ کا ججمنٹ پیراگراف 1222(xvii) کوٹ کر رہا ہوں، اس میں لکھا گیا ہے کہ **The Destruction of the Mosque took place in Breach of the order of status quo and an assurances given to this Court. The destruction of the mosque and the obliteration of the Islamic structure was an**

سیگی لیکن ہے بتی ہیں گریزی موٹی چھوٹی **egregious violation of the rule of law.**
کا مطلب کریمنل ایکٹ ہے۔ آپ نے کہا تھا کہ وہاں پر مندر توڑ کر بنایا گیا۔
سر، میں آپ کے سامنے یہ تمام چیزیں لے کر دوں گا۔ سپریم کورٹ کے ججمنٹ
کے چیپٹر نمبر فائیو میں، سپریم کورٹ نے اے ایس آئی کی رپورٹ کو نکارا۔ انہوں نے
کہا کہ مندر کو توڑ کر مسجد نہیں بنائی گئی تھی، سپریم کورٹ نے یہ کہا کہ۔ (مداخلت)
میں سب کے سامنے رکھ دوں گا، آپ پڑھ لیجئے۔ (مداخلت)
سر، میں اپنی تقریر پر آ جاتا ہوں۔ میں اپنی بات رکھتا ہوں میں یہ پوچھنا
چاہ رہا ہوں کہ کیا مودی سرکار ایک طبقے اور مذہب کی سرکار ہے یا پورے ملک کے
مذاہب کو ماننے والوں کی سرکار ہے یا جو ہندوازم مانتے ہیں ان کی سرکار ہے؟ ہم کہتے تھا
دیکھیئے۔ (مداخلت) کیا مودی سرکار صرف ایک فکر اور نظریہ ہندوتو کی سرکار ہے؟
کیا اس ملک کا، اس گورنمنٹ آف انڈیا کا کوئی مذہب ہے؟ اس وطن عزیز سب کے
مذہب کو مانتا ہوں۔ سر، میرا ماننا ہے کہ اس ملک کا کوئی مذہب نہیں ہے، کیا یہ
سرکار 22 جنوری کے پیغام دے کر یہ بتانا چاہتی ہے کہ ایک مذہب دوسرے مذہب کے
ماننے والوں پر غالب ہے اور کیا یہی ملے گا کیا آئین اس کی اجازت دیتا ہے؟ کیا یہی پیغام آپ
جو اس ایوان سے دے رہے ہیں، تو 17 کروڑ مسلمانوں کو کیا پیغام دے رہے ہیں؟ یہ
میں آپ پر چھوڑتا ہوں۔

سر، سال 1949 میں دھوکہ ہوا، سال 1986 میں دھوکہ ہوا، سال 1992 میں دھوکہ
ہوا، سال 2019 اور 2022 میں بھی اس ایوان کے ذریعہ ہم کو دھوکہ دیا جا رہا ہے اور
افسوس کے ساتھ کہنا پڑتا ہے کہ ہم مسلمانوں کو ہمیشہ یہ کہا گیا کہ تم کو بھارت کے
شہری برقرار رہنے کے لئے یہ کب تک بڑی قیمت چکانی پڑے گی اور ہم پر الزام لگایا
گیا۔ کیا میں بابر کا اسپوکس پرسن ہوں، کیا میں جناح کا اسپوکس پرسن ہوں کیا میں
اورنگزیب کا اسپوکس پرسن ہوں؟ بتایئے۔ (مداخلت) آخر آپ مجھے کہاں تک لے کر
جائیں گے؟

سر، دوسری بات یہ ہے کہ ہم سب کو پتہ ہے کہ ملک میں فساد ہوا، نوجوانوں کو
ٹاڈا میں ڈالا گیا، جو بوڑھے ہو کر نکلے۔ یقیناً آپ کی سرکار نہیں تھی۔ میں تو مریادا
پرشوتم رام کی عزت کرتا ہوں۔ مگر میں ناتھو رام گوڈسے سے نفرت کرتا ہوں۔ میری
نسلیں نفرت کرتی رہیں گی کیونکہ ناتھو رام گوڈسے نے اس شخص کو گولی ماری،
جس کی زبان سے آخری لفظ ہے رام نکلے۔

سر، چھٹی بات یہ ہے کہ سال 1997 میں ملیانہ ہاشم پورہ ہوا، سال 1983 میں نیلی
ہوا، سال 1944 میں جموں میں نسل کشی ہوئی، سال 2022 میں ہلدوانی میں قتل ہوا،
اتنے دھوکے سب سے بڑے سکس کو دئے گئے، دلتوں اور آدیواسیوں کو دئے گئے؟ مگر
پھر بھی مجھ سے ہی کہا جاتا ہے کہ وفاداری کو ثابت کرو؟ آج بھارت کے 17 کروڑ
مسلمان پہلے آپ کو اچھی اور ڈیفیٹیڈ محسوس کر رہے ہیں۔ (مداخلت) بہت بڑی نا
انصافی ہوتی ہے، یہاں کئی تاریخ ان انصافیوں کو انصاف یوں کیا جا رہا ہے (مداخلت)۔
آپ پشیامتر شُنگ کو کیا مانتے ہیں؟ آپ بتاؤ (مداخلت) آپ پشیامتر شُنگ کو کیا
مانتے ہیں؟ وہ کشمیر کے راجہ کو کیا مانتے ہیں، جس کے پاس مندروں کو توڑنے
کے لئے ایک فوج تھی۔ آپ ان سے کیا مانتے ہیں؟ یہ تو میں کہہ رہا ہوں کہ سال 1947

میں آزادی ملی اور نشی کانت دوبے اویسی سے بابر کی بات پوچھ رہے ہیں۔ تم گاندھی کی بات پوچھتے، تم سبھاش کی بات پوچھتے، تم جلیاں والا باغ کی بات پوچھتے، کالا پانی میں جو مسلمان شہید ہوگئے، تم ان کی بات پوچھتے۔ مگر بابر کی بات پوچھی جاتی ہے۔ (مداخلت) سر، میں آپکو بتا رہا ہوں، خوامخواہ مجھے ڈسٹرب کیا اور نشی کانت دوبے نے میرا وقت لے لیا۔ (مداخلت)

سر، میں آپ سے یہ کہنا چاہتا ہوں کہ مودی حکومت بھارت کے مسلمانوں کو یہ پیغام دے رہی ہے کہ جانا چاہتا ہے یا انصاف چاہتے ہو۔ میں کہہ رہا ہوں کہ میں بھی کن میں مانگوں گا۔ اس تعصب کو قبول نہیں کروں گا۔ میں دوسرے درجے کے شہری کا موقف قبول نہیں کروں گا۔ میں اپنی شناخت کو نہیں مٹنے دوں گا۔ اب میں جھوٹی اور فرضی بیانوں پر ہرگز بھروسہ نہیں کروں گا۔ میں وہ کام نہیں کروں گا، جو بی جے پی۔ اور نام نہاد سیکولر پارٹی چاہتی ہیں میں ان کے دائرے میں رہکر وہ کام کروں گا جو آپکو پسند نہیں ہے۔

سر، کنکلوزن میں، میں آپکو بتانا چاہتا ہوں کہ آج اس ملک کو کس کی ضرورت ہے۔ اسکو ایودھیا بھوشن اور آپ تاریخ نہیں پڑھتے ہونگے۔ مولانا امیر علی کون تھے؟ پجاری بابا رام چرن داس کون تھے؟ یہ ایودھیا کے پجاری تھے، ان دونوں نے انگریزوں کے خلاف جنگ لڑی تھی۔ ان دونوں کو انگریزوں نے گرفتار کیا تھا اور ایک پیڑ پر لٹکاکر مولانا امیر علی اور پجاری رام چرن داس کو پھانسی دے دی گئی۔ ملک کو انکی ضرورت ہے۔ ملک کو شمبھو پرساد اور اچھن خان کی ضرورت ہے۔ یہ راجہ دیوی بخش سنگھ کی فوج میں تھے۔ انہوں نے انگریزوں سے مقابلہ۔ مسلمانوں کی لاشوں کو الٹ دیا۔ اور شمبھو پرساد کو دفنا دیا گیا۔ اسکو انکی ضروت ہے اس ملک کو بابا مودی کی ضرورت نہیں ہے۔

آج بھارت کو ایودھیا کے مولانا امیر علی، پجاری رام چرن داس، شمبھو پرساد اچھن خان کی ضرورت ہے جو ہمیں اب ہندوستان اور سیکولر پارٹیوں کے بیانات سن رہا تھا۔

جب قاضی صاحب گواہوں کو لیکر دلہن کے پاس جاتے ہیں اور وہ دلہن سے پوچھتے ہیں کہ نکاح کو قبول ہے تو دلہن شرماکر خاموش ہوجاتی ہے تو ان کی خاموشی رضامندی کی علامت ہے۔

سر، میں اپنی بات ختم کرنے سے پہلے یہ بتانا چاہتا ہوں کہ جب وزیر اعظم صاحب جواب دینگے تو کیا وہ بھارت کے 140 کروڑ عوام کے لئے جواب دینگے یا وہ صرف مٹھی بھر ووٹ کی فکر کرنے والوں کے لئے جواب دینگے۔ اس لئے یہ دیش دنیا اور سارا ہندوستان دیکھ رہے ہیں (مداخلت)

سر میں یہ کہتے ہوئے ختم کرنے جا رہا ہوں میں مسلمان ایک ہے کہ آج میں بھی تب بھارت کے ایک غیور مسلمان، Sir, let me stand as a tall Indian Muslim and say that the light of Indian democracy is at its dimmest today.

میری فکر میں میرا ایمان مجھے کہتا ہے کہ جس جگہ پر مسجد تھی، ہے اور رہے گی بابری مسجد ہے اور رہے گی بابری مسجد زندہ باد، بھارت زندہ باد۔ جے ہند۔

(ختم شد)

**माननीय सभापति (श्री राजेन्द्र अग्रवाल)** : सबको जोड़ने की बात की जाए, वह बेहतर है।

श्री बी.बी. पाटिल जी।

1423 बजे (माननीय अध्यक्ष पीठासीन हुए)

**माननीय अध्यक्ष :** कृपया आप बैठ जाएं। आप अपनी बात गृह मंत्री जी के बाद कहें।

… (व्यवधान)

**माननीय अध्यक्ष :**माननीय गृह मंत्री जी।

1423 बजे

**गृह मंत्री तथा सहकारिता मंत्री (श्री अमित शाह):** माननीय अध्यक्ष जी, मैं सबसे पहले आपको धन्यवाद देना चाहता हूँ। आज़ादी के बाद, राष्ट्र के जीवन में जो कुछ महत्वपूर्ण प्रस्ताव आए हैं, उनमें से एक प्रस्ताव श्रीराम जन्मभूमि पर मन्दिर के निर्माण का है। आपने मुझे उस पर अपने विचार रखने का मौका दिया, इसके लिए मैं हृदय से आपका धन्यवाद करना चाहता हूँ।

मान्यवर, मैं देश की 140 करोड़ जनता की ओर से भी आसन का, स्पीकर साहब का धन्यवाद करना चाहता हूँ क्योंकि यह सदन नियम से तो चलता ही है, हर चर्चा नियमों से बंधी हुई होती है, संविधान से बंधी हुई होती है। परन्तु एक मायने में यह सदन जन-चेतना का, जनता की आकांक्षाओं का और जनता की इच्छाओं का प्रवक्ता बनने का भी इस सदन का दायित्व है और आज वही हो रहा है। 140 करोड़ जनता के देश में और दुनिया भर में बैठे हुए राम भक्तों के लिए, जो 22 जनवरी के बाद अद्भुत आध्यात्मिक चेतना का अनुभव कर रहे हैं, उनको वाचा देने के लिए आपने मुझे समय दिया, इसके लिए देश हमेशा आपका आभारी रहेगा।

(1425/CS/SNT)

मान्यवर, मैं आज किसी का जवाब नहीं दूँगा। आज मैं मेरे मन की बात और देश की जनता की आवाज को इस सदन के सामने रखना चाहता हूँ, जो सालों से कोर्ट के कागजों में दबी हुई थी। नरेन्द्र मोदी जी के प्रधानमंत्री बनने के बाद उसको आवाज भी मिली, अभिव्यक्ति भी मिली।

मान्यवर, यह 22 जनवरी का दिन, भले ही कुछ लोग कुछ भी कहें, मैं स्पष्ट रूप से देख रहा हूँ कि 22 जनवरी का दिन दस सहस्त्र सालों के लिए ऐतिहासिक दिन बनने वाला है, यह सबको समझकर चलना चाहिए।

मान्यवर, जो इतिहास को पहचानते नहीं हैं, ऐतिहासिक पलों को पहचानते नहीं, वे अपने अस्तित्व को, अपने वजूद को कहीं न कहीं खो देते हैं। मैं आज फिर से एक बार कहने वाला हूँ कि 22 जनवरी का दिन दस सहस्त्र से भी अधिक सालों तक इस देश का ऐतिहासिक दिन रहने वाला है।

मान्यवर, 22 जनवरी का दिन, 1528 से शुरू हुए एक संघर्ष और अन्याय के सामने लड़ाई के एक आन्दोलन के अंत का दिन है। 1528 से चालू हुई यह न्याय की लड़ाई यहाँ पर समाप्त हो गई है।

मान्यवर, 22 जनवरी का दिन करोड़ों भक्तों की आशा, आकांक्षा और सिद्धि का दिन है। आज उनकी आशाएं, आकांक्षाएं सिद्ध हुई हैं।

मान्यवर, यह 22 जनवरी का दिन भारत की, समग्र भारत की, मैं चाहूँगा कि समग्र भारत पर पूरा सदन गौर करे, 22 जनवरी का दिन समग्र भारत की आध्यात्मिक चेतना के पुनर्जागरण का दिन आज इतिहास में बन चुका है।

मान्यवर, 22 जनवरी का दिन महान भारत की यात्रा की शुरूआत का दिन है। 22 जनवरी के दिन माँ भारती को विश्व गुरु के मार्ग पर ले जाने को प्रशस्त करने वाला दिन बनने वाला है।

मान्यवर, इस देश की कल्पना राम और राम चरित्र के बगैर कर ही नहीं सकते हैं। जो इस देश को पहचानना चाहते हैं, जानना चाहते हैं, जीना चाहते हैं, राम और रामचरित मानस के बगैर वे जी ही नहीं सकते। राम का चरित्र और राम, ये देश के जनमानस का प्राण है, यह सबको समझना चाहिए, सबको स्वीकारना चाहिए।

मान्यवर, इसीलिए हमारे संविधान की पहली प्रत से लेकर महात्मा गाँधी के आदर्श राज्य की कल्पना को राम राज्य का नाम दिया गया, संविधान में भी राम दरबार को स्थान दिया गया।

मान्यवर, जो लोग राम के अलावा भारत की कल्पना करते हैं, वे भारत को नहीं जानते हैं, वे हमारे गुलामी के काल का प्रतिनिधित्व करते हैं।

मान्यवर, राम व्यक्ति नहीं हैं, राम प्रतीक हैं, राम करोड़ों लोगों के प्रतीक हैं कि आदर्श जीवन कैसे जीना चाहिए। इसीलिए उनको मर्यादा पुरुषोत्तम कहा गया है। राम का राज्य किसी एक धर्म, एक संप्रदाय विशेष के लिए नहीं है, आदर्श राज्य कैसा होना चाहिए, राम का राज्य इसका प्रतीक है, न केवल भारत, बल्कि समग्र दुनिया के देशों के लिए बना हुआ है। इसलिए मैं मानता हूँ कि राम और राम के चरित्र को फिर से प्रस्थापित करने का काम 22 जनवरी को हुआ है, मोदी जी के हाथ से हुआ है, यह इस देश के लिए सौभाग्य का विषय है।

मान्यवर, हम सब उन सौभाग्यशाली लोगों में से हैं, जो 1528 से वहाँ पर राम मंदिर देखना चाहते हैं। पीढ़ियाँ चली गईं, हजारों-लाखों लोगों शहीद हुए, संघर्ष किया, आन्दोलन किए, मगर यह दिन देखना स्वप्न में नहीं आया, आज हम सब बहुत सौभाग्यशाली हैं कि इस दिन को हम देख सकते हैं।

मान्यवर, भारत की संस्कृति और रामायण को अलग करके देखा ही नहीं जा सकता है। कई भाषाओं में, कई प्रदेशों में और कई प्रकार के धर्मों में भी रामायण का जिक्र, रामायण

का अनुवाद, रामायण से बनी परम्पराएं और रामायण को अपनी राष्ट्रीय चेतना का एक आधार बनाने का काम हुआ है।

(1430/IND/AK)

अध्यक्ष जी, कई सारी रामायणों का उल्लेख है। संस्कृत में वाल्मीकि रामायण, आध्यात्म रामायण, आनंद रामायण, अवधी में रामचरित मानस, उड़िया में 13 प्रकार की रामायण, तेलुगु में रंगनाथ रामायण, रघुनाथ रामायण, कन्नड में कुमुन्देदु रामायण, तोरवे रामायण, बतलेश्वर रामायण, असमिया में कथा रामायण, सप्तकांड रामायण और शंकरदेव ने भी बोरगीत के अंदर रामायण का वर्णन किया है। बांग्ला में भी रामायण मिलेगा। कश्मीर में भी राम अवतार चरित मिलेगा। बौद्ध परम्पराओं में भी अनामक जातक में रामायण का जिक्र मिलेगा। मैथिली में भी रामायण है। पंजाबी में भी गोविंद रामायण है और इतना ही नहीं, ओवैसी साहब चले गए मुल्ला मसीही ने भी रामायण मसीही लिखकर सबके लिए इस आदर्श को प्रस्थापित किया है। कई सारे देशों में भी रामायण को स्वीकारा है और एक आदर्श ग्रंथ के रूप में प्रस्थापित किया है। विदेशों में नेपाल, जावा, इंडोनेशिया, कम्बोडिया, तिब्बत, इन सभी देशों की भाषाओं में रामायण का अनुवाद भी हुआ है और उनसे प्रेरणा भी ली जाती है। हमारे यहां आदिवासी जीवन भी एक प्रकार से अलग संस्कृति, अलग परम्पराओं से रचा-बसा है। ऊरांव में, बोडो में, संथाल में, संकाल में, बिरहोर में और छोटा नागपुर में, सभी जगह स्थानीय भाषाओं में रामायण का अनुवाद भी हुआ और रामायण के आधार पर अपने जीवन को आदर्श बनाने का काम भी हुआ।

मान्यवर, राम और रामायण से अलग इस देश की कल्पना हो ही नहीं सकती है। राष्ट्र की इच्छा की परिपूर्ति सम्माननीय मोदी जी के हाथ से 22 जनवरी को अभिजीत मुहूर्त में हुई है। ये लड़ाई वर्ष 1528 से लड़ी जा रही है। दशकों तक यह लड़ाई चली। लगभग-लगभग वर्ष 1858 से कानूनी लड़ाई चल रही है, जब से अंग्रेजों का शासन था। 330 साल के बाद कानूनी लड़ाई का आज अंत हुआ है और रामलला अपने गर्भ गृह के अंदर विराजमान हुए हैं। वर्ष 1528 से अब तक जो लम्बा आंदोलन चला, उसकी समाप्ति हुई है और देश की आध्यात्मिक चेतना की जागृति हुई है। मैं इतना ही कहना चाहता हूं कि इस आंदोलन से अनभिज्ञ होकर कोई इस देश के इतिहास को पढ़ ही नहीं सकता है। आज से नहीं, वर्ष 1528 से हर पीढ़ी ने इस आंदोलन को किसी न किसी स्वरूप से वाचा दी और यह मामला लम्बे समय तक अटका रहा, भटका रहा, लटकता रहा। आज मोदी जी के समय में ही इसे परवान चढ़ना था, इस स्वपन को सिद्ध होना था और आज देश स्वपन सिद्ध होता देख रहा है।

मान्यवर, राम जन्म भूमि का जो इतिहास है, यह बहुत लम्बा है। अनेक राजाओं, संतों, निहंगों, अलग-अलग संगठनों और कानूनी विशेषज्ञों ने इस लड़ाई में योगदान दिया है। मैं आज वर्ष 1528 से 22 जनवरी, 2024 तक की सम्पूर्ण कानूनी, युद्धों की और आंदोलनों की लड़ाई

को और सभी योद्धाओं को बहुत विनम्रता से स्मरण करना चाहता हूं और उनकी लड़ाई आज जब समाप्त हुई है, तब मुझे विश्वास है कि वे जहां भी होंगे, वे बड़े आनंद की अनुभूति करते होंगे, अपनी श्रद्धा को चरितार्थ करने की अनभूति करते होंगे। गिलहरी के समान कई लोगों ने अपना योगदान दिया और मान्यवर ये राम सेतु जो बनना था, वर्ष 1528 से 22 जनवरी, 2024 तक का इस सेतु का भूमि पूजन भी नरेन्द्र मोदी जी ने किया और प्राण प्रतिष्ठा भी नरेन्द्र मोदी जी के हाथ से हुई।

मान्यवर, 1990 में जब इस आंदोलन ने गति पकड़ी, उससे पहले से ही भारतीय जनता पार्टी का देश की जनता को यह वायदा था। हमने पालमपुर कार्यकारिणी के अंदर एक प्रस्ताव पारित करके कहा था कि राम मंदिर का निर्माण हो, इसे किसी धर्म के साथ नहीं जोड़ना चाहिए, यह देश की चेतना की पुनर्जागृति का आंदोलन है, इसलिए हम राम जन्म भूमि को मुक्त कराकर, कानूनी रूप से मुक्त कराकर वहां राम मंदिर की स्थापना करेंगे।

(1435/RV/UB)

महोदय, अब इस देश में प्रॉब्लम क्या है? जब चुनाव के घोषणा-पत्र में हम इसे लेते हैं तो वे कहते हैं कि चुनावों में वोट प्राप्त करने के लिए हमने लिया, यह चुनावी वादा है, यह भाजपा ऐसे ही वादे करती है। चाहे अनुच्छेद 370 हो, राम जन्मभूमि हो, यूनिफॉर्म सिविल कोड हो, ट्रिपल तलाक समाप्त करना हो, ये कहते हैं कि आप ऐसे ही वादे करते हैं और यह वोट प्राप्त करने का जरिया होता है। जब हम इसे पूरा कर देते हैं तो वे इसकी बड़ी खिलाफत करते हैं। मैं आज भी कहता हूं कि भारतीय जनता पार्टी और हमारे नेता नरेन्द्र मोदी जी जो कहते हैं, वह करते हैं। यह हमारी पार्टी का चरित्र है और यह कोई छिपी हुई बात नहीं है।

किस चीज का आक्रोश है? हम वर्ष 1986 से यह कह रहे हैं कि वहां एक भव्य राम मन्दिर बनना चाहिए, संवैधानिक तरीके से बनना चाहिए। कुछ लोगों ने यहां और बाहर भी, मीडिया के सामने प्रतिक्रिया व्यक्त की। वे कानून की दुहाई देते हैं। मैं उनसे पूछना चाहता हूं कि क्या सुप्रीम कोर्ट की पाँच जजों की खण्डपीठ के जजमेंट से आप वास्ता रखते हैं या नहीं रखते हैं? क्या आप भारत के संविधान से वास्ता रखते हैं या नहीं रखते हैं? अगर किसी ने सुप्रीम कोर्ट की अवहेलना करके वहां पर मन्दिर बनाया होता तो आप कुछ भी कह सकते थे, मगर जब देश की सर्वोच्च अदालत के पाँच जजों की खण्डपीठ ने, और जिसकी अध्यक्षता स्वयं चीफ जस्टिस ऑफ इंडिया और आने वाले चार चीफ जस्टिस कर रहे थे, ऐसी महत्वपूर्ण बेंच ने जब यह निर्णय लिया, तब आप इससे कैसे कन्नी काट सकते हैं? अगर निर्णय पसन्द हो तो स्वीकार कर लेना, सुप्रीम कोर्ट का सम्मान करना और अगर कोई निर्णय पसन्द न आए तो सुप्रीम कोर्ट को भी भला-बुरा कहना, यह ठीक नहीं है। सुप्रीम कोर्ट के निर्णय ने आज पूरी दुनिया में भारत के पंथ-निरपेक्ष चरित्र को उजागर किया है। दुनिया में एक भी देश ऐसा नहीं है जहां के बहुसंख्यक समाज ने अपनी आस्था का निर्वहन करने के लिए

इतनी लम्बी कानूनी लड़ाई लड़ी। हमने राह देखी है, सुप्रीम कोर्ट में लड़ाई लड़ी है और सुप्रीम कोर्ट का जजमेंट आने के बाद वहां पर आज भव्य राम मन्दिर बना है।

मान्यवर, जो ऐसा बोल रहे हैं, उन्हें भी सब मालूम है कि क्यों बोल रहे हैं। मैं आज फिर से यह कहना चाहता हूं, हमारे गुजरात में एक कहावत है कि 'हवन में हड्डी नहीं डालनी चाहिए।' जब पूरा देश आनन्द में डूबा है, पूरे देश में जब आध्यात्मिक चेतना की जागृति का अनुभव हो रहा है तो आप इसका स्वागत कर लीजिए, इसके साथ जुड़ जाइए। इसी में सबका भला है और देश का भी भला है।

मान्यवर, एक लम्बी लड़ाई के बाद स्थगित पड़े हुए मामले को नरेन्द्र मोदी जी ने सुलझाया। लम्बे समय के बाद और कांग्रेस के बगैर किसी दल को पहली बार, जब देश की जनता ने युग परिवर्तन करने के लिए पूर्ण बहुमत के साथ मोदी जी को प्रधान मंत्री बनाया, तब से यह लड़ाई शुरू हुई।

मान्यवर, वर्ष 2014 से वर्ष 2019 तक राम जन्मभूमि मन्दिर की लड़ाई चली। इसमें बहुत साल लगे। उसमें उसके लाखों पेजेज का अनुवाद हुआ। अनुवाद होकर वह कोर्ट के सामने गया। बीच में चुनाव आ गया। कोर्ट ने माना कि चुनाव के वक्त अगर फैसला देंगे तो शायद इसे अलग दृष्टि से देखा जाएगा। कोई बात नहीं। चुनाव के बाद फिर से मोदी जी आ गए और फिर केस चला। अंततोगत्वा, जब कोर्ट ने न्याय किया, तब 5 अगस्त, 2020 को मोदी जी ने इसकी नींव रखकर इसकी शुरुआत की।

मान्यवर, यह जो वर्ष 2020 से वर्ष 2024 तक की यात्रा है, उस यात्रा को भी समझना चाहिए। यह राम जन्मभूमि का आंदोलन ऐसे ही नहीं चला। इसके साथ हर गांव, हर घर में करोड़ों रामभक्त, भारतीय जनता पार्टी, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ समेत अनेक संगठन घर-घर गए, शिला लेकर गए, पूजा की और उस पत्थर को राम मन्दिर की शिला बनाकर अयोध्या तक पहुंचाने का काम किया। करोड़ों लोगों ने अपनी श्रद्धा, अपनी इच्छा संवैधानिक तरीके से, शांतिपूर्ण तरीके से अयोध्या पहुंचायी और सुप्रीम कोर्ट ने जब जजमेंट दे दिया, निर्णय दे दिया, तब जाकर राम मन्दिर के निर्माण की शुरुआत हुई।

आडवाणी जी ने सोमनाथ से अयोध्या तक की यात्रा भी की। इसके साथ-साथ निहंगों द्वारा शुरू की हुई लड़ाई को अशोक सिंघल जी चरम सीमा पर ले गए, आडवाणी जी ने जन-जागृति की और मोदी जी ने जन आकांक्षा की पूर्ति करके एक आध्यात्मिक चेतना का जागरण कर दिया।

(1440/GG/SRG)

मान्यवर, यह पूरा आंदोलन, जब भी दुनिया का इतिहास लिखा जाएगा, एक डेमोक्रेटिक वेल्यू के रूप में देखा जाएगा कि कोई एक देश, अपने बहुसंख्यक समाज की धार्मिक विश्वास की पूर्ति के लिए इतने समय धैर्य रख कर, सुप्रीम कोर्ट में गुहार लगाता रहे

और सुप्रीम कोर्ट का जजमेंट आने के बाद सौहार्दपूर्ण वातावरण में उसकी पूर्ति हो। मान्यवर, यह बहुत बड़ी बात है और मैं मानता हूँ कि यह मोदी जी के नेतृत्व के बगैर संभव नहीं था

मान्यवर, मैं इतना ही कहना चाहता हूँ कि जब राम मंदिर का निर्माण हो रहा था, तब और जब जजमेंट आया तब, कई लोग कयास लगा रहे थे, कई लोग अनुमान लगा रहे थे कि इस देश में रक्तपात हो जाएगा, इस देश में दंगे हो जाएंगे, इस देश में धर्म-धर्म के बीच में बड़े विवाद होंगे। मगर मैं आज इस सदन को कहना चाहता हूँ कि यह भारतीय जनता पार्टी की सरकार है, नरेंद्र मोदी जी इस देश के प्रधान मंत्री हैं। कोर्ट के जजमेंट को भी जय-पराजय की जगह सबके मान्य न्यायालय के आदेश में परिवर्तित करने का काम मोदी जी के दूरदर्शी विचार ने किया है। उसके बाद जब समय आया, निर्माण के बाद समय आया, जब उनको न्योता मिला कि वे आ कर भूमि पूजन करें। वे 130 करोड़ जनता के जनप्रतिनिधि हैं। न्यास ने उनको जनता के प्रतिनिधि के नाते शिलान्यास करने का जब मौका दिया, तब मोदी जी का जो पूरा आचरण था, इसको ध्यान से देखना चाहिए। वह आचरण आने वाले अनेक सैकड़ों सालों तक दुनिया के सामने रहेगा और दुनिया के सामने इससे कई लोगों को प्रेरणा भी मिलेगी। मान्यवर, हम सबने, आचार्य गोविंद देव गिरी जी ने जो वक्तव्य दिया, वह सुना है। मोदी जी को जब मौका मिला तब उन्होंने रामानंदी संप्रदाय और वैष्णव संतों से पूछा कि प्राण प्रतिष्ठा करनी है, किसी संसारी को करनी है तो इसके यम-नियम, इसके लिए किस प्रकार की उपासना करनी चाहिए। जो संतों की ओर सुझाया गया, उससे भी अनेक गुना कठोर, 11 दिनों का व्रत इस देश के प्रधान मंत्री ने किया। मान्यवर, 11 दिनों तक शय्या पर नहीं सोना, 11 दिनों तक केवल नारियल पानी के साथ उपवास करना, 11 दिनों तक पूरा समय रामभक्ति में रचे बसे रहना और हर सांस को राम के साथ जोड़ कर, राममय बनकर प्राण प्रतिष्ठा करना।

मान्यवर, उन 11 दिनों में माँ शबरी, गिलहरी, वानर, भालू, जटायु, इन सब के साथ जुड़े हुए देश भर में जो राम के स्थान थे, वहां जा कर राम के काज के लिए गिलहरी जैसा भी योगदान देने वालों को श्रद्धापूर्वक प्रणाम करने का काम प्रधान मंत्री जी ने किया। जब राम मंदिर की भूमि पूजन का समय आया, कोई पॉलिटिकल नारे नहीं लगाए गए। न मोदी जी ने इसका नेतृत्व पॉलिटिकली किया और न हमारी पार्टी ने किया। हर रोज राम का एक भजन अलग-अलग भाषा में ट्वीट कर के एक भक्ति का आंदोलन शुरू किया।

मान्यवर, इस देश में कई सारे भक्ति के आंदोलन खड़े हुए। ढेर सारे आंदोलन खड़े हुए। इस देश में भक्ति का आंदोलन कोई नया नहीं है। मीरा ने चलाया, गुजरात में नरसी मेहता ने चलाया, रामानंद ने चलाया, एकनाथ और ज्ञानेश्वर ने चलाया, शंकरदेव और माधवदेव ने असम में चलाया, चैतन्य महाप्रभु ने चलाया, समर्थ रामदास ने चलाया। इन सभी भक्ति आंदोलनों ने समय-समय पर देश को मजबूत करने का काम किया है।

(1445/MY/RCP)

सनातन धर्म को टिकाने का काम किया है। सनातन धर्म के प्रति सबकी आस्था को बढ़ाने का काम किया है। घनघोर अंधेरी रात में एक ध्रुवतारे के तरह भक्ति आंदोलन ने देश के जनमानस का नेतृत्व किया। भारत के ही छोर में 10 सिख गुरुओं ने अनेक प्रकार के बलिदान दिये हैं। एक दशम पिता ने तो अपना सर्वस्व दान कर दिया। इस प्रकार की त्याग की भी इस देश की परंपरा रही है। इस समग्र भारत के हजारों साल लंबे सांस्कृतिक और राजनीतिक इतिहास में एक शासक ने, जनता के एक व्यक्ति ने, जनता के एक प्रतिनिधि ने अपने यम, नियम, तप और उपासना से भक्ति चेतना की जागृति की तो इसकी मात्र घटना नरेन्द्र मोदी जी ने की। मैं तो स्वयं अनुभव कर रहा हूं। मैं उस दिन दिल्ली के लक्ष्मी नारायण मंदिर (बिड़ला मंदिर) में बैठा था। वहां जो जनता थी, जो लोग थे, उन सबकी आँखों में आँसू थे। पूरा देश राममय हो गया था और जय श्री राम के नारे लगा रहा था।

मान्यवर, मोदी जी ने बड़ी शालीनता के साथ विजय-पराजय के किसी भाव के बगैर जय श्री राम के युद्ध के नारों से, पूरी दुनिया जानती है, 'जय श्री राम', श्रीराम की वानर सेना का युद्ध का घोष था, इसे पूरी दुनिया जानती है। जब संघर्ष चला, तब 'जय श्री राम' चला और मंदिर बना तो 'जय सियाराम' हो गया। संघर्ष से भक्ति की यात्रा पूरे देश को आगे ले जाने वाली यात्रा है।

मान्यवर, इतने चेतनामय वातावरण के अंदर भी विभाजन की बात करने वाले लोगों से मेरा करबद्ध निवेदन है कि आप समय को पहचानो, एकता के संदेश को स्वीकारो और आगे देख कर चलना शुरू करो, इसी में भारत की और हम सब की भलाई है।

मान्यवर, यह बहुत बड़ा संदेश मोदी जी ने दिया है। मैं फिर से एक बात कहना चाहता हूं कि जिसने संन्यास नहीं लिया है, जो संन्यासी नहीं है, जो किसी पंथ-संप्रदाय का उपदेशक नहीं है, ऐसा व्यक्ति और जो देश का शासक है, वह प्रधानमंत्री है, प्रधान सेवक है, ऐसे व्यक्ति की भक्ति और आध्यात्मिक चेतना को लेकर, पूरी दुनिया में ऐसी मिशाल शायद ही कहीं मिलेगी।

मान्यवर, मैं यह जरूर कहना चाहता हूं। इस सदन में खड़े होकर गौरव के साथ कहना चाहता हूं कि मोदी जी मेरी नेता हैं, मेरी पार्टी के नेता हैं, मेरी पार्टी के प्रमुख नेता हैं। मोदी जी ने एक ऐसा नेतृत्व दिया, जिसने अनेक समय पर नेतृत्व के गुण क्या होते हैं, इसका परिचय देने का काम किया। अच्छे समय में भी किस प्रकार से संयम रखना चाहिए, इसका एक उदाहरण स्थापित करने का काम किया और हर समय पर निर्भयता के साथ, संवेदनशील, सजग और जन भावनाओं को समर्पित नेतृत्व कैसा होता है, इसका उदाहरण दिया। इनके 10 साल के कालखंड के अंदर अनेक प्रकार के पड़ाव आए हैं। यह भी राम जन्मभूमि के आंदोलन

जैसा ही पड़ाव रहा है। क्योंकि, जो गड्डा ये खोद कर गए थे, उस गड्डे को भर कर उसमें महान भारत की इमारत बनाना इस राम मंदिर की यात्रा से कोई कम यात्रा नहीं है।

मान्यवर, सबसे पहले मैं कहता हूं कि आर्थिक क्षेत्र के अंदर इन्होंने जो बदहाली की थी, जो पॉलिसी पैरालाइसिस वाली गवर्नमेंट थी, सैंकड़ों पॉलिसीज बनाकर आज हम 11वें नंबर से 5वें पर हमारे अर्थतंत्र को ले जाकर, एक नीति के आधार पर चलने वाला राज्य, नीति बनाने वाला नेता कैसा होता है, उसका उदाहरण दिया। जब कोविड आया तो भयभीत हुए बगैर सरकार की मशीनरी कम पड़ जाएगी, जब तक यह आंदोलन पूरा देश नहीं लड़ेगा, इससे हम नहीं लड़ पाएंगे। इसे जानते हुए, एक मोर्चे पर वैक्सीन के इनोवेशन का काम चालू रहा, दूसरे मोर्चे पर हेल्थ इंफ्रास्ट्रक्चर का अपग्रेडेशन का काम चालू रहा, तीसरे मोर्चे पर हर गरीब के घर में अनाज पहुंचाने का काम चालू रहा, चौथे मोर्चे पर कोविड के रोगियों की जो सेवा कर रहे थे, उनका नेतृत्व करने का काम चालू रहा और पाँचवें मोर्चे पर जनता कर्फ्यू, दीया जलाना, थाली बजाना, इस पर हँसने वाले आज रोड पर घूमते हैं, लेकिन उनको मालूम नहीं है कि पूरी दुनिया मोदी जी के संवेदनशील और समग्रता से से भरे हुए नेतृत्व को आज स्वीकार कर रही हैं।

(1450/CP/PS)

मान्यवर, इसी समय में कोविड का संकट भी आया, इसी समय में 62 की तरह चीन ने अपना मुंह दिखाना शुरू किया। दृढ़ता के साथ नेतृत्व छाती, सीना तानकर खड़ा रहा, हिंदुस्तान की एक इंच जमीन नहीं गई, पहले कई बार हुआ था। इसी समय में पुंछ और पुलवामा में हमला हुआ। सर्जिकल स्ट्राइक और एयर स्ट्राइक करके नेतृत्व की वीरता का भी परिचय दिया और घर में घुसकर जवाब देने का काम किया। हजारों बच्चे परीक्षा के वक्त जब आत्महत्या करते थे, स्ट्रेस में आते थे, मनोरोग के शिकार बनते थे। एक पिता की तरह एक प्रजा वात्सल्य नेतृत्व का परिचय देते हुए परीक्षा पर चर्चा की भी बात की। जब मौका राम मंदिर का आया, तब एक संन्यासी की तरह, एक भक्त की तरह गौरवपूर्ण तरीके से आध्यात्म को जाग्रत करते हुए, आध्यात्मिक चेतना का जागरण करने का काम भी नरेन्द्र मोदी जी ने किया। मैं इसलिए कहता हूं कि बहुत लंबे समय से इस देश को ऐसे नेतृत्व की जरूरत थी। 68-70 साल तक देश ऐसे नेतृत्व में भटकता रहा, लटकता रहा, 130 करोड़ की जनता ने मोदी जी को चुनकर, एक सर्वगुण सम्पन्न नेता को चुनकर देश की सभी चुनौतियों को समाप्त किया।

मान्यवर, मैं आज आपके माध्यम से यह कहना चाहता हूं कि राम मंदिर का निर्माण और राम मंदिर में रामलला की बाल प्रतिमा, मनोहारी दृश्य, आंख बंद कर देते हैं तो सामने वह प्रतिमा दिखाई पड़ती है। इतनी मनोहारी प्रतिमा बनाने का काम हुआ और उसकी प्राण-प्रतिष्ठा भी हुई। एक प्रकार से समग्र भारतीय संस्कृति का मोदी जी के माध्यम से एक

अभिव्यक्ति का काम हुआ। राम का जीवन ही अपने आप में परिपूर्ण था। बचपन में ही शिक्षा संस्थानों की रक्षा के लिए विश्वामित्र के यहां राक्षसों का का वध किया, अहिल्या को सम्मान दिया, मां शबरी को गले लगाकर इस देश के गिरिजन और पिछड़े लोगों को गले लगाने का काम किया, महिलाओं का सम्मान किया। गिलहरी, गिद्ध, वानर, रीछ, वनवासी सबको जोड़कर असत्य पर सत्य की विजय का झंडा श्रीराम ने फहराया। जब यह अयोध्या बन रही है, तब ढेरों लोगों के प्रस्ताव आए, मैं सबके बीच में कहने से अपने आपको रोक नहीं सकता कि अयोध्या के इंटरनेशनल एयरपोर्ट को श्रीराम का नाम दिया जाए। बड़ा लोक लुभावन प्रस्ताव था, परन्तु मोदी जी ने महर्षि वाल्मीकि का नाम देना उचित समझा। सारे मौकों पर दशरथ का, सीता माता का चौराहे पर नाम देने का प्रस्ताव आया था। मोदी जी ने कहीं जटायु को रखा, कहीं गिलहरी को रखा, कहीं हनुमान को रखा। मान्यवर, समग्र समाज को साथ में लेने का काम किया।

मान्यवर, यह जो मंदिर बना है, उसके निर्माण में भी पूरे समाज को साथ में रखने का काम किया गया है। मैं आपको जरूर बताना चाहता हूं कि इसमें देश के हर हिस्से को स्थान देने का काम मंदिर के निर्माताओं ने किया है। एक भी प्रदेश ऐसा नहीं है, जहां से कुछ नहीं आया है। हर प्रदेश और आसपास के सभी देशों से रामकाज के लिए कुछ न कुछ समर्पित हुआ है, सबकी भूमिका रही है। पूरे समाज को जोड़कर यह मंदिर बना है। सामाजिक एकता का एक अद्भुत उदाहरण यह मंदिर है। सांस्कृतिक पुनर्जागरण का अद्भुत उदाहरण यह मंदिर है।

मान्यवर, अयोध्या में राम मंदिर विध्वंस के सामने विकास की विजय है। अयोध्या में राम मंदिर धर्मान्धता के सामने आध्यात्मिकता और भक्ति की विजय है। भारत के गौरवमय युग की यह शुरुआत है। आत्मनिर्भर भारत और विकसित भारत के रास्ते का प्रशस्तीकरण का यह पॉइंट है। भारत माता को विश्व गुरू बनाने के रास्ते की यह शुरूआत है।

(1455/NK/SMN)

मैं जरूर मानता हूं कि भगवान राम सालों से, सदियों से इस देश के प्रेरणा पुरुष रहे, जिनके चरित्र से न केवल यह देश बल्कि पूरी दुनिया संदेश लेती है। ऐसे प्रभु श्रीराम की मूर्ति की निज घर में स्थापना से इस देश में जो नया युग शुरू हुआ है, वह बहुत शुभंकर होगा। आने वाले दिनों में 2024 में भी मोदी जी के नेतृत्व में यहां सरकार बनेगी और यह शुभंकर शुरुआत हुई है, इसको गंतव्य स्थान तक ले जाने का काम करेगी।

मान्यवर, मेरे शब्द और विचार रखने का अवसर देने के लिए आपको बहुत-बहुत धन्यवाद।

(इति)

1455 बजे (श्री राजेन्द्र अग्रवाल पीठासीन हुए)

1455 बजे

**श्री बी. बी. पाटील (जहीराबाद):** सभापति महोदय, मुझे सदन में बोलने का अवसर देने के लिए धन्यवाद। जैसे-जैसे भारत विकास और आध्यात्मिकता के जादुई पथ की ओर बढ़ रहा है, यहां हम अयोध्या में राम मंदिर के उद्घाटन के साथ आध्यात्मिक सद्भाव के एक नए युग में प्रवेश कर रहे हैं। 22 जनवरी, 2024 को अयोध्या में राम मंदिर के ऐतिहासिक उद्घाटन समारोह को लेकर पूरे देश में जबरदस्त उत्साह है। अयोध्या में राम मंदिर का निर्माण भारत के इतिहास की एक ऐतिहासिक घटना है। इसे हिंदुओं के लिए सबसे महत्वपूर्ण तीर्थ स्थलों में से एक माना जाता है। ऐसा माना जाता है कि भगवान राम का जन्म यहीं हुआ था। इस प्रकार, अयोध्या राम मंदिर आस्था, एकता और सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक है।

अयोध्या राम मंदिर का आर्थिक महत्व भी है। उम्मीद है कि राम मंदिर अयोध्या को एक प्रमुख धार्मिक और सांस्कृतिक केंद्र के रूप में विकसित करने में योगदान देगा। भारत, आध्यात्मिकता के क्षेत्र में हमेशा विश्व गुरु रहा है। अंतरिक्ष और प्रौद्योगिकी जैसे विभिन्न क्षेत्रों में नयी बुलंदिया पर पहुंचने के साथ, हम विकास और आध्यात्मिकता के बीच महान संतुलन का सबसे अच्छा उदाहरण बन गए हैं। इसी संदर्भ में 22 जनवरी, 2024 ने विविधता के हमारे गौरवशाली इतिहास में एक और अध्याय जोड़ा। अयोध्या में राम मंदिर न केवल हिंदुओं के लिए एक महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल है, बल्कि उन्नत वास्तुकला का एक नमूना भी प्रस्तुत करता है। अयोध्या को एक पवित्र स्थान माना जाता है क्योंकि यह महाकाव्य रामायण में वर्णित धर्मात्मा राजकुमार भगवान श्रीराम का जन्मस्थान माना जाता है। अयोध्या राम मंदिर वास्तुकला की नागर शैली में बनाया गया है। ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व के अलावा, जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, अयोध्या राम मंदिर का बहुत बड़ा आर्थिक महत्व भी है। हमें उम्मीद है कि यह बड़ी संख्या में आगंतुकों को आकर्षित करेगा और अयोध्या के आध्यात्मिक पर्यटन को बढ़ावा देगा।

यह न केवल स्थानीय लोगों के लिए रोजगार पैदा करेगा बल्कि मंदिर के आसपास नए व्यवसायों को भी आकर्षित करेगा। इस प्रकार, हम कह सकते हैं कि अयोध्या राम मंदिर सिर्फ एक मंदिर नहीं है, यह प्राचीन और आधुनिक दोनों मूल्यों वाले नए भारत का एक महान उदाहरण है। एक ओर राम मंदिर आस्था, एकता और सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक है, दूसरी ओर, यह राष्ट्र के आर्थिक विकास और वृद्धि में योगदान दे रहा है।

मैं यहां एक और भी उल्लेख करना चाहूंगा कि मेरे लोक सभा क्षेत्र जहीराबाद में और तेलंगाना में कई मंदिर हैं, उनमें जहरासंगम में केतकी संगमेश्वर मंदिर माना जाता है, जिसे दक्षिण काशी के नाम से जाना जाता है। कई प्राचीन मंदिर हैं, जैसे मिर्जापुर का हनुमान मंदिर, दुर्की में श्री सोमलिंगेश्वर स्वामी मंदिर, रामारेड्डी में काल भैरव स्वामी मंदिर। ऐसे अलग-अलग महत्व रखने वाले मंदिरों का विकास के लिए केन्द्र सरकार की तरफ से काम होना चाहिए।

माननीय अध्यक्ष के माध्यम से मेरा विनम्र अनुरोध है कि कृपया इस पर ध्यान दें। इन प्राचीन मंदिरों को विकसित करके उन्हें उचित महत्व दें क्योंकि विकसित होने पर ये मंदिर तेलंगाना और मेरे लोकसभा संसदीय क्षेत्र में आध्यात्मिक पर्यटन को भी बढ़ावा देंगे। इससे आसपास के राज्यों से बड़ी संख्या में आगंतुकों को आकर्षित करेगा और स्थानीय लोगों के लिए रोजगार पैदा करेगा। बहुत-बहुत धन्यवाद।

(इति)

1459 बजे

**श्री नव कुमार सरनीया (कोकराझार):** अध्यक्ष महोदय, राम मंदिर के लिए सुप्रीम कोर्ट द्वारा जजमेंट दिया गया है और उसके दिशा-निर्देश में राम मंदिर बना है। 22 जनवरी को हिस्टोरिकल डे है, उसमें प्राण प्रतिष्ठा हुआ। उसके लिए देशभर के करोड़ों राम भक्तों और सनातनी को बहुत-बहुत बधाई।

मैं सिर्फ एक बात बोलना चाहता हूं, ये हमारे आदिवासी लोग प्रकृति पुजारी हैं। वे लोग भी चाहते हैं, चाहे सरना वाला हो, बाठवा वाला हो, वह लोग भी चाहते हैं कि उनके धर्म को भी उतना ही सम्मान मिले। मैं मोदी जी और अमित शाह जी से चाहूंगा कि उन लोगों को भी सुना जाए और उन लोगों को भी इसमें शामिल किया जाए।

(1500/SK/SM)

श्री राम जी की हिस्ट्री का संबंध हमसे भी है क्योंकि आदिवासियों ने लड़ाई के समय साथ दिया। शंकरदेव और महादेव जी के भक्ति आंदोलन का प्रसार भी हुआ था। लास्ट टाइम मुझे भी वहां विजिट करने का मौका मिला था, यहीं से ही सीता मैय्या का अपहरण हुआ था।

लोग सोचते हैं कि रामराज्य सपनों का राज्य है, न्याय मिलेगा, शांति होगी और भाईचारा होगा। हम उम्मीद करते हैं कि आने वाले समय में भारत में न्याय, शांति और अमन हो। मेरे प्रदेश के लोगों ने मुझे दो बार चुनकर भेजा है, मैं उनको यहीं से धन्यवाद देता हूं। मैं अपनी तरफ से सबको बहुत बधाई देता हूं। कौन जीतेगा, कौन आएगा, पता नहीं, लेकिन लोग जिस पर आस्था और भरोसा रखेंगे, वही आएगा। मेरी तरफ से संसद में लोगों को बधाई हो। मुझे उम्मीद है कि हम देश को आगे ले जाएंगे। हम चाहते हैं कि हमारी तरफ से कोई बात न हो और देश में अमन हो, शांति हो। धन्यवाद।

(इति)

1501 बजे

**श्री धैर्यशील संभाजीराव माणे (हातकणंगले):** माननीय सभापति जी, आपने मुझे इस पावन अवसर पर अपनी बात रखने का मौका दिया। मैं सर्वप्रथम सभागृह में उपथित सभी भाइयो और बहनों का अभिनंदन करता हूं। यह एक ऐसी इकलौती संसद है, जहां 500 सालों में पहली बार ऐसा दिन आया है कि जहां प्रभु रामचन्द्र जी का आगमन अयोध्या में होने के कारण उनका सम्मान करने का भाग्य मिला है। इसके लिए मैं सर्वप्रथम आप सबका अभिनंदन करना चाहता हूं।

महोदय, अभी माननीय अमित शाह जी का भाषण हो रहा था, मैं सोच रहा था कि कितनी कठिनाइयों के बाद इसी काल में ही क्यों रामलला जी की स्थापना हुई या प्राण प्रतिष्ठा हुई? तब मुझे निश्चित रूप से महसूस हुआ कि किनके हाथों से, कर कमलों से प्राण प्रतिष्ठा हो या स्थापना हो, यह जनता या कोर्ट ने तय नहीं किया, यह प्रभु रामचन्द्र जी ने तय किया था। इसका चुनाव किसके आधार पर हुआ? यह धर्म के आधार पर हुआ चुनाव नहीं था, माननीय मोदी जी के कर्मों के आधार पर हुआ चुनाव था और प्रभु रामचन्द्र जी ने इस देश में उनके कर कमलों से स्थापित होने का निर्णय लिया।

महोदय, आज एक भाग्यशाली दिवस है, जिसमें हम सभी लोग लोकतंत्र के माध्यम से आगे बढ़ रहे हैं। माननीय प्रधान मंत्री जी के हाथों से दो मंदिरों का उद्घाटन हुआ। रामजन्म भूमि में प्रभु रामचन्द्र जी के मंदिर का उद्घाटन तो हुआ ही है और साथ ही लोकतंत्र के सबसे बड़े मंदिर, आज जहां हम बात कर रहे हैं, उसका भी उद्घाटन सम्माननीय प्रधान मंत्री जी के हाथों से ही हुआ। यह इतिहास में लिखा जाएगा। इस सभागृह में जो सदस्य हैं, वे सब ऐतिहासिक क्षण में उपस्थित हैं। देश भर में ऐसी बहुत प्रासंगिक चीजें हुई होंगी, लेकिन यह ऐसा प्रसंग है, जिसे इतिहास में स्थान मिलने वाला है। मैं भाग्यशाली हूं कि आज आप सबके बीच मुझे बात करने का मौका मिल रहा है।

महोदय, मैं राजनीतिक परिवार से आता हूं और मेरे दादाजी भी संसद सदस्य थे। पांच साल पूरे होने को आए हैं और आज आखिरी दिन है। जैसे क्लास का आखिरी दिन होता है, ऐसी ही हर एक की मन की स्थिति है क्योंकि कल एग्जाम में वापिस जाना है। हमेशा हमें एग्जाम में जाने से पहले कोसा जाता था कि राम के नाम पर राजनीति करते हैं। मैं कहना चाहता हूं कि हम राजनीति नहीं करते, हम नीति में राज ढूंढते हैं और राजधर्म का पालन करते हैं। माननीय मोदी जी द्वारा यहां सेंगोल की स्थापना की गई है, यह भारत देश की आस्था का प्रतीक है।

(1505/MK/RP)

राजमार्ग पर चलने के लिए और राजधर्म का पालन करने के लिए यह हमें हमेशा चेतना देता रहता है। मैं आपसे कहना चाहूंगा कि यहां परिवारवाद के बारे में बात की गई। मैं निश्चित रूप से यह कहना चाहूंगा कि जो अपने कर्मों से आगे बढ़ता है, उसको परिवारवाद का नाम नहीं देना चाहिए। यह कल माननीय मोदी जी ने कहा था। राजा का बेटा राजा नहीं बनेगा, जो काबिल है वही बनेगा। निश्चित रूप से यहां जो काबिल लोग बैठे हैं, उन्होंने अपने कर्मों से यह सिद्ध किया है। आज मैं कुछ चीजों के साथ अपनी वाणी को विराम दूंगा। बहुत सारे लोगों को राम नहीं दिखते हैं। राम झूठे हैं,

राम थे ही नहीं, ऐसा एफिडेविट करके कुछ लोगों ने लिखवा दिया था। हमें तो राम दिखते हैं, लेकिन कहां दिखते हैं, यह मैं उनको जवाब देना चाहूंगा-

"कण-कण में हमें राम नजर आता है,
बचती धुएं से जो उज्ज्वला माता,
कण-कण में हमें राम नजर आता है,
गरीब का जन-धन में खुला खाता,
कण-कण में हमें राम नजर आता है,
सर्वशिक्षा से बच्चा जो स्कूल जाता,
कण-कण में हमें राम नजर आता है,
जो किसान सम्मान का बीज बोता,
कण-कण में हमें राम नजर आता है,
युवा स्वयं रोजगार मुद्रा से पाता,
कण-कण में हमें राम नजर आता है,
आयुष्मान से चिरायु निर्धन होता,
कण-कण में हमें राम नजर आता है,
ग्राम जल जीवन का स्वच्छ जल पीता,
कण-कण में हमें राम नजर आता है,
हर कण में हमें राम नजर आता है।"

हमें हर दौर में ध्यान आया है। पूर्व में था, आज भी है और कल भी राम राज्य की स्थापना करने के लिए मोदी जी ने हमें जो दिशा दिखाई है, निश्चित रूप से हम राम के चरणों को स्पर्श करते हुए उनके मार्ग पर चलते रहेंगे। मैं आप सभी को आने वाले चुनाव के लिए बहुत सारी शुभकामनाएं देते हुए अपने शब्दों को विराम देता हूं। बहुत-बहुत धन्यवाद।

(इति)

**माननीय सभापति (श्री राजेन्द्र अग्रवाल):** सियाराम मय सब जग जानी, करहु प्रणाम जोरी जुग पानी।

श्री गिरीश चन्द्र जी।

1507 बजे

**श्री गिरीश चन्द्र (नगीना):** सभापति महोदय, आज आपने मुझे नियम 193 के तहत ऐतिहासिक राम मंदिर निर्माण के तहत सदन में हो रही चर्चा में बोलने का मौका दिया है, इसके लिए मैं आपका आभार व्यक्त करना चाहता हूं। साथ ही, मैं बहुजन समाज पार्टी की राष्ट्रीय अध्यक्ष आदरणीय बहन जी का भी आभार व्यक्त करता हूं।

महोदय, हमारा देश भारत के संविधान के अनुसार चलता है और भारत के संविधान की प्रस्तावना में लिखा है - "हम भारत के लोग, भारत को एक संपूर्ण प्रभुत्व संपन्न, समाजवादी, पंथ निरपेक्ष, लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनाने के लिए तथा उसके समस्त नागरिकों को सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय, विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता, प्रतिष्ठा और अवसर की समता प्राप्त कराने के लिए तथा उन सबमें व्यक्त गरिमा और सुनिश्चित करने वाली बन्धुता बढ़ाने के लिए दृढ संकल्प होकर इस संविधान सभा में आज तारीख 26 नवम्बर 1949 ईस्वी को इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं"। यह हमारे देश भारत की संविधान की प्रस्तावना, जो संविधान की मूल आत्मा है। हमारी बहुजन समाज पार्टी अपने भारत देश के संविधान के मुताबिक एक धर्म निरपेक्ष पार्टी है। माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने देश की सम्प्रभुता, एकता और अखण्डता को ध्यान में रखकर चाहे हिन्दू भाई हो या मुस्लिम भाई हो, दोनों की भावनाओं का ध्यान में रखकर संविधान में दी गयी व्यवस्था के अनुसार डिसप्यूटेड जमीन 2.77 एकड़ राम मंदिर को दी तो वहीं दूसरी तरफ मुस्लिम भाइयों के लिए 5 एकड़ जमीन मस्जिद बनाने के लिए भी देने का काम किया।

हमारी पार्टी की राष्ट्रीय अध्यक्षा आदरणीय बहन कुमारी मायावती जी ने सर्वोच्च न्यायालय के इस फैसले का स्वागत किया और अयोध्या में राम मंदिर का जो प्रतिष्ठा कार्यक्रम हुआ, उसका भी बहन कुमारी मायावती ने समर्थन करने का काम किया है। इतना ही नहीं, बल्कि आगे चलकर जब मस्जिद को लेकर भी ऐसा कोई प्रोग्राम होता है, तो हमारी पार्टी उसका भी स्वागत करती है। चूंकि हमारी पार्टी धर्मनिरपेक्ष पार्टी है, इसलिए हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, बौद्ध, पारसी तथा अन्य सभी धर्मों का पूरा-पूरा सम्मान करती है। बहुजन समाज पार्टी इस प्रस्ताव का समर्थन करती है। आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

(इति)

(1510/SJN/NKL)

1510 बजे

**श्री अनुभव मोहंती (केन्द्रपाड़ा) :** महोदय, जय जगन्नाथ, जय श्रीराम।

महोदय, श्रीराम हमारे लिए आस्था का प्रतीक हैं। जब मनुष्य गलतियां करता हैं, तो उन गलतियों को सुधारना भी मनुष्य की ही जिम्मेदारी होती है। जैसा कि हम अपने देश में बोलते हैं कि "अतिथि देवो भवः।" हमेशा से हम हिन्दुस्तानियों ने अतिथियों का दिल खोलकर स्वागत किया है और आगे भी करते रहेंगे, पर कुछ ऐसे अतिथि थे, जिनका हमने अपना दिल खोलकर स्वागत तो किया, लेकिन उन्होंने न सिर्फ हमारी आस्था के साथ खिलवाड़ किया, न ही हमारे साथ खिलवाड़ किया, बल्कि उन्होंने हमारे भगवान को भी अपमानित किया था।

मैं यह बोलना चाहूंगा कि किसी एक जगह पर एक बार नहीं, बल्कि उन्होंने पूरे हिन्दुस्तान में कई जगहों पर उनका बार-बार अपमान किया था। जब आज हम उसके बदले में भगवान श्रीराम के मंदिर की स्थापना की बात करते हैं, प्राण प्रतिष्ठा की बात करते हैं, तब हमारा सीना गर्व से चौड़ा हो जाता है और हम अपना सिर उठाकर बोल पाते हैं कि हां, ये हमारे भगवान हैं, इनमें हमारी आस्था है। हम सबने जिस राम राज्य का सपना देखा है, तब हम पैदा भी नहीं हुए थे, हमारे पूर्वजों ने इतना सारा त्याग और बलिदान दिया, जिसकी वजह से आज हमें इतने सुंदर देश में रहने का मौका मिला है। हमें राम मंदिर की स्थापना करने और मंदिर के दर्शन करने का मौका मिला है।

महोदय, मैं इसके साथ ही साथ यह भी बोलना चाहूंगा कि जब हम ओडिशा में राम की बात करते हैं, तब मैं कृष्ण की भी बात करना चाहूंगा। मैं उस जगह से आता हूं, जिसे जगन्नाथ धाम यानी पुरी धाम बोला जाता है। चार धामों में से एक धाम पुरी/जगन्नाथ धाम है। प्रभु श्री जगन्नाथ जी को हम श्रीराम जी के समान ही मानते हैं, वह एक ही हैं। भगवान के कई अवतार हैं। उन्होंने कई बार अवतार लिए हैं। जगन्नाथ जी भी श्रीराम हैं, कृष्ण भी वही हैं। मैं आपकी इजाजत से ओड़िया में कुछ बोलना चाहूंगा।

*[Sir I would like speak something in Odia with your permission. A few days back, on 17th January, the Government of Odisha under the leadership of Shri Naveen Patnaik our Chief Minister, celebrated the Parikrama Utsav of Lord Jagannatha temple. It was a grand celebration of Lord Jagannath temple complex, which truly looks heavenly. Right from my childhood days I am visiting Puri but this time it took my breath away. Nobody could have imagined that the ancient temple can be this grand. It is a matter of pride for all of us. Sir, the tagline of Odisha Tourism is "India's best kept secret'. It is really the truth. I invite all of you to visit Puri or Srikshetra. Please visit the Jagannath Dham, do the Darshan and taste the divine Prasad. I want to emphasize - He is

* [ ] Original in Odia

Jagannath, the Lord of the Universe. Whoever comes to him, gets the divine blessings; no harm will ever come his way; he will never be defeated in the battle of life. Lord Jagannath is an Avatar of lord Rama. Sir, I want to request hon. Minister of Railways to start a train from Puri to Ayodhya soon on a daily basis.]

महोदय, मैं माननीय रेल मंत्री जी से यह अनुरोध करना चाहूंगा कि उन्होंने एक घोषणा की थी कि पुरी से अयोध्या तक के लिए एक ट्रेन चलाई जाएगी। मैं चाहूंगा कि तुरंत से तुरंत उस ट्रेन को चालू किया जाए और वह ट्रेन रोज चले। पुरी से अयोध्या तक तथा पुरी से कटरा तक भी एक ट्रेन चले। मैं आपके माध्यम से माननीय रेल मंत्री जी से दो ट्रेन चलाने की मांग रखना चाहूंगा।

महोदय, मैं आखिरी में यह बोलना चाहूंगा कि भगवान श्रीराम सबसे प्यार करते थे। जैसा कि मान्यवर गृह मंत्री अमित शाह जी ने भी कहा है कि वे छोटी से गिलहरी से लेकर, वानर, भालू और गरुड़ इत्यादि से प्यार करते थे। मैं इतना कहना चाहूंगा कि हम उस संस्कृति से हैं, हिन्दु सिर्फ एक धर्म नहीं है, यह जीने का एक तरीका है। It is a way of living. जहां पर हमें सिखाया जाता है कि हम हर धर्म का सम्मान करें, हम हर धर्म की इज्जत करें। हम उसी में जीते हैं, उसी में आस्था रखते हैं।

महोदय, मैं सभी से यह विनती करना चाहूंगा कि अभी पूरे देश में जिस तरह से प्यार और शांति का वातावरण चल रहा है, वह बना रहे। इसमें किसी ने राम का नाम लेकर कभी राजनीति करने की कोशिश नहीं की है। अगर वे कर रहे हैं, तो भगवान श्रीराम उनके बारे में विचार करेंगे।
(1515/SPS/VR)

हम सब को पता है, मैं उनका नाम नहीं लेना चाहूंगा, वे उन आक्रांताओं की तरह न बनें। देश में एकता बनी रहे, आस्था बनी रहे, भगवान पर विश्वास बना रहे, यही प्रार्थना करना चाहूंगा। मैं अपनी बात अभी खत्म करूंगा। चूंकि, आज इस सदन में इस 17वीं लोक सभा का आखिरी दिन है। आशा करता हूं कि सब का फिर से 18वीं लोक सभा में यहीं पर मिलन होगा।

सर, मैं इस बात से भी गर्वित हूं कि हमें पुराने पार्लियामेंट की बिल्डिंग में भी बैठने का मौका मिला और हमें नई बिल्डिंग में भी बैठने का मौका मिला। मुझे तो इतना आशीर्वाद मिला कि पुरानी बिल्डिंग, जिसे हम कॉन्स्टीट्यूशन हाउस बोलते हैं, वहां पर राज्य सभा में भी बैठने का मौका मिला और लोक सभा में भी बैठने का मौका मिला तथा अब नए सदन में बैठने का मौका मिला है। मेरा सभी को धन्यवाद है। मैं इतना चाहूंगा कि सब बहुत खुश रहें, एक साथ रहें और हमेशा हमारे देश में भाई-चारा बना रहे। जगन्नाथ, श्री राम और इन सब में हम अपना विश्वास बनाएं रखें। जय हिंद, जय जगन्नाथ, जय भारत, बंदे उत्कल जननी।

(इति)

1516 बजे

**श्रीमती नवनीत रवि राणा (अमरावती) :** सभापति महोदय, राम-राम। सभी को राम-राम। सभी कई वर्षों से सुन रहे हैं और हम लोगों का तो जन्म भी नहीं हुआ होगा, इतने वर्षों से राम जी का वनवास है। इस देश के प्रत्येक नागरिक ने और हमने पिछले कई वर्षों से सोशल मीडिया के माध्यम से राम जी के मंदिर के बारे में, उनके इतिहास के बारे में पढ़ना-लिखना शुरू किया। मोदी जी पिछले दस वर्षों से देश में एज ए प्रधान मंत्री जी काम कर रहे हैं। कई अपोज़िशन के लोग उनको हमेशा राम जी का नाम लेकर चिढ़ाते थे कि आपने राम भगवान के नाम से अपने एजेंडे में डाला था, लेकिन अब क्या हुआ? आप कब तारीख बताएंगे और कब राम भगवान का मंदिर बनाएंगे। मुझे लगता है कि दुनिया में ऐसे बदनसीब लोग बहुत कम होते हैं, जिनके पास 50-60 वर्ष होने के बावजूद भी वे रामलला का मंदिर नहीं बना सके और न ही राम भगवान को उनकी जगह पर स्थापित कर सके। हमारे देश के प्रधान मंत्री जी जैसे भी लोग हैं, जिन्होंने दस वर्षों में तारीख भी बताई, भव्य मंदिर भी बनाया और पूरे विश्व में हमारी आस्था को कहीं मरने नहीं दिया। मंदिर को स्थापित किया और राम भगवान के मंदिर में उनकी पूजा आस्था भी हुई।

सर, मैं यह बताना चाहती हूं कि राजा कैसा होना चाहिए, राजा भगवान राम जी जैसा होना चाहिए, भाई कैसा होना चाहिए, भाई लक्ष्मण जी जैसा होना चाहिए, लोकतंत्र का राजा कैसा होना चाहिए, हमारे देश के प्रधान मंत्री जी जैसा होना चाहिए। इस देश का बच्चा-बच्चा कह रहा है, यह हमारी आवाज नहीं है, इस देश में रहने वाला हर व्यक्ति, जो भगवान में आस्था रखता है, जिसका विश्वास है, राम भगवान जी के लिए जिनकी आंखों में आस थी कि कोई ऐसा आएगा, जिसके हाथ से यह होगा। लोकतंत्र को मजबूत करने वाले भाई कैसे होने चाहिए, वह इस देश के गृह मंत्री अमित शाह जी जैसे होने चाहिए।

सर, अभी मैंने पुरुषोत्तम मर्यादा राम जी के बारे ओवैसी जी को बोलते हुए सुना कि हम उनका आदर करते हैं, सत्कार करते हैं, सम्मान करते हैं। आपको करना पड़ेगा, इस देश में रहना है तो जय श्री राम बोलना पड़ेगा। इस देश के लोग पिछले कई वर्षों से राम भगवान जी के मंदिर के लिए आस्था लगाकर बैठे थे, वह इनके नसीब में नहीं था। ये राम भगवान के मंदिर और राम भगवान जी के समय क्या निश्चित करेंगे। इसके लिए तो भगवान ने खुद हमारे देश के प्रधान मंत्री को चुना है, जिनके हाथ से यह होना था और देश में हुआ है। यह पूरे विश्व ने देखा है। मैं चार लाइन कहना चाहूंगी :-

“तब राम मिले थे, लक्ष्मण को सेवा में,
अब राम मिलेंगे, राष्ट्र की सेवा करने से।
तब राम मिले थे, भरत को शासन कराने में,
अब राम मिलेंगे, अपना राष्ट्र धर्म निभाने से।

तब राम मिले थे, बजरंग बली के सीने में,
अब राम मिलेंगे, राम के नाम का जप करने से।
तब राम मिले थे, शबरी को झूठे बेर खिलाने में,
अब राम मिलेंगे, भूखों को भोजन कराने से।
तब राम मिले थे, अयोध्या को मर्यादाओं में,
अब भी राम मिलेंगे, भारत की पहचान में।"

(1520/MM/SAN)

महोदय, जिस दिन राम मंदिर की स्थापना हो रही थी। हमारे रामलला जब स्थापित हो रहे थे, उनकी पूजा हो रही थी, तब इस देश में रहने वाले लोगों की आंखों में आंसू थे कि आज तक हम अपने घरों में रह रहे हैं, हिन्दुस्तान में रह रहे है, अपनी छतों के नीचे हैं। लेकिन जिस भगवान की आस्था पर यह पूरा देश चल रहा है, उनको ही हम उनका घर नहीं दे पाए। पिछले दस वर्षों में जो चमत्कार इस देश ने किया है, आने वाले समय में उससे भी बड़ा चमत्कार हमारे देश के प्रधान मंत्री और जिन-जिन का भी योगदान इस मंदिर के लिए है, सभी कार सेवक, सभी संत, सभी महाराज, जिन्होंने भी आस्था बांधकर रखी थी, ऐसे भी कई संत थे, जिन्होंने 35 वर्ष उस टीन के झोंपड़े में रखकर राम जी की पूजा की है। मुझे लगता है कि उन सभी को मैं दिल से नमन करना चाहूंगी। हम इतने बड़े नहीं कि उन्हें नमन भी कर सकें, क्योंकि जिनके रक्तों से वह एक-एक ईंट बनी है, मुझे लगता है कि उनको नमन करने से उनका भुगतान नहीं होगा। लेकिन इस पार्लियामेंट में हमारे देश के प्रधान मंत्री जी, हमारे देश के गृह मंत्री जी और जितने भी पार्लियामेंटेरियन यहां पर बैठे हैं, यह आज का, इस टर्म का, इस समय का आखिरी पार्लियामेंट स्पीच हम सभी की है। हमारे सभी आदरणीय पार्लियामेंटेरियंस से, आपसे, हमारे स्पीकर बिरला साहब, हमारे मंत्री जी से सबसे आशीर्वाद लेंगे कि इस मैदान में उतरे हैं तो जय श्री राम का नारा लेकर, फिर वह मैदान, हमारे देश के प्रधान मंत्री फतह करेंगे। इतनी ही प्रार्थना मैं राम भगवान से करती हूं। सभी से आशीर्वाद लेती हूं। जय श्री राम।

(इति)

1522 बजे

**श्रीमती संगीता आजाद (लालगंज):** धन्यवाद सभापति महोदय। आपने मुझे नियम 193 के तहत रामलला की प्राण प्रतिष्ठा की चर्चा में भाग लेने का मौका दिया, इसके लिए मैं आपकी आभारी हूं। भगवान श्री रामलला 500 साल बाद तिरपाल से निकलकर अपने घर में स्थापित हुए। मैं और मेरा क्षेत्र लालगंज, आजमगढ़ की तरफ से सरकार को और माननीय प्रधानमंत्री जी को ढेर सारी शुभकामनाएं और बधाई देती हूं। उत्तर प्रदेश एक विशाल प्रदेश है और उस विशाल प्रदेश का छोटा सा शहर है आजमगढ़। जहां एक तरफ काशी, एक तरफ अयोध्या, एक तरफ गोरखनाथ, तो बीच है आजमगढ़। पूर्वांचल का दिल है आजमगढ़। जहां गंगा जमुना की तहजीब है, मंदिर की घंटी है, मस्जिद की अजान है आजमगढ़। कैफी आजमी की शायरी है और महापंडित राहुल सांस्कृत्यायन की नगरी है आजमगढ़। सती अनुसूईया के तीनों पुत्रों चंद्रमा ऋषि, दत्तात्रेय ऋषि और दुरवासा ऋषि की तपोभूमि है आजमगढ़। यह वो धरती है जहां महाभारत काल में सांपों को मारने का यज्ञ राज जन्मजय ने किया। ये पवन अवंतिकापुरी धाम है आजमगढ़। यहां सिक्खों के आठवें गुरू श्री गुरू गोबिंद साहब की चरण पादुका है। माता सती की जंघा जहां गिरी है, वह पावन पल्मेश्वरी शक्तिपीठ है आजमगढ़। कहते हैं जब राम जी वनवास गए तो यहीं टौंस नदी के कोलघाट पर गणेश जी की मूर्ति बनाकर गणेश पूजन कर अपने वनवास को प्रारंभ किया। ऐसा बड़ा गणेश मंदिर है आजमगढ़। बाबा भंवरनाथ का पावन मंदिर है आजमगढ़। कुछ काफिरों ने मेरे शहर को बदनाम भी किया, पर उस बदनामी में भी आबाद है आज़मगढ़। यहां अमन है, प्यार है, भाईचारा है, खुशहाली का नाम है आज़मगढ़। मुझे गर्व है कि मैं ऐसी उपजाऊ धरती से आती हूं जिसने देश को साइंटिस्ट दिए, आईएएस दिए, इंजिनियर्स दिए, डॉक्टर्स दिए, मंत्री दिए और यहां तक कि उत्तर प्रदेश का मुख्यमंत्री तक दिया। जय हो आज़मगढ़। यह सत्रहवीं लोक सभा का अंतिम सत्र है, लेकिन एक नयी शुरूआत है आजमगढ़। मैं एक विनती के साथ अपनी बात खत्म करूंगी जो विकास की गंगा काशी से सरयू तक जा रही है उसमें तमसा और घाघरा को भी शामिल करें। मेरे शहर को काशी और अयोध्या सर्किट से जोड़ा जाए ताकि पर्यटन और रोजगार के दरवाजे खुलें, लोगों का पलायन रुके और मेरे शहर की तरक्की हो।

मैं सरकार को एक ओर बधाई भी देना चाहती हूं कि हाल ही में किसानों के नेता माननीय चौधरी चरण सिंह जी, पी.वी. नरसिम्हा राव जी और हरित क्रांति के जन्मदाता स्वामीनाथन जी को भारत रत्न दिया गया है। साथ ही मैं मांग करती हूं कि मान्यवर कांशी राम जी और मुलायम सिंह जी को भी भारत रत्न दिया जाए। क्योंकि बाबा साहब ने संविधान में एक वोट का अधिकार तो दिया, लेकिन करोड़ों-करोड़ दलितों, शोषितों, गरीबों एवं सर्व समाज को उस एक वोट की कीमत समझाने का काम मान्यवर कांशीराम साहब और मान्यवर श्री मुलायम सिंह जी ने किया।

(1525/YSH/SNT)

अपने वोट से प्रधान से लेकर प्रधान मंत्री पद तक कैसे पहुंच सकते हैं तथा समाज में चेतना जगाने का काम इन दोनों महापुरुषों ने किया। इसलिए मैं सरकार से मांग करती हूँ कि मान्यवर कांशीराम साहब को और माननीय मुलायम सिंह जी को भी भारत रत्न दिया जाए। आपने मुझे बोलने का मौका दिया, उसके लिए मैं आपको धन्यवाद देती हूँ। मैं अपने लोक सभा क्षेत्र लालगंज की जनता का भी आभार व्यक्त करती हूँ, जिसने मुझे अपनी आवाज बनाकर यहां तक भेजने का काम किया है।

(इति)

1526 बजे

**वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्रीमती अनुप्रिया पटेल):** सभापति महोदय, 17वीं लोक सभा के अंतिम दिन आपने मुझे श्रीराम मंदिर निर्माण एवं भगवान राम के विगृह रूप की प्राण प्रतिष्ठा की इस महत्वपूर्ण चर्चा में अपनी भावनाएं व्यक्त करने का अवसर दिया, उसके लिए मैं आपको धन्यवाद देती हूँ।

सभापति महोदय, कोई भी देश अपनी सांस्कृतिक पहचान के बिना अधूरा है, क्योंकि हमारी सांस्कृतिक पहचान हमें हमारे अतीत पर गौरव करने का अवसर देती है और हमारे अतीत पर गौरव करके ही हमारा देश सम्पूर्ण होता है। भगवान श्रीराम भारत की संस्कृति के प्रतीक हैं। भारत की राष्ट्रीय चेतना के प्रतीक हैं। जैसे भगवान बुद्ध, महावीर, कबीर, गुरुनानक, इन सभी विभूतियों से हमारे देश की सांस्कृतिक पहचान है। बीते 10 वर्षों में हमारी सरकार ने सांस्कृतिक चेतना के सभी प्रतीकों को उभारा है और उनका संरक्षण किया है। माननीय सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय के उपरांत अयोध्या में श्रीराम मंदिर का निर्माण हुआ और भगवान श्रीराम के विगृह रूप की प्राण प्रतिष्ठा हमारी सरकार ने की। आज अयोध्या विश्व के मानचित्र पर एक पर्यटन स्थल के रूप में स्थापित हो चुका है और दुनिया के कोने-कोने से दर्शनार्थी और श्रद्धालु बड़ी संख्या में वहां पर पहुंच रहे हैं।

हमारी सरकार ने करतारपुर कॉरिडोर से लेकर, बौद्ध सर्किट, विंध्याचल कॉरिडोर और यहां तक की कबीर की विरासत को भी सहेजने का काम किया है। हम देखें तो हमारी सांस्कृतिक उत्थान की यात्रा आज देश की उन्नति का मार्ग भी प्रशस्त कर रही है, क्योंकि धार्मिक पर्यटन भी अपने आप में देश की अर्थव्यवस्था को मजबूत करने वाला एक सेक्टर बनकर उभरा है।

सभापति महोदय, अयोध्या में प्राण प्रतिष्ठा का कार्यक्रम हुआ और माननीय प्रधान मंत्री जी ने देश को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि मंदिर तो बन गया, लेकिन अब आगे क्या? अब आगे का जो रास्ता है, वह राष्ट्र निर्माण का है। जब हम राष्ट्र निर्माण की बात करते हैं तो सही मायनों में यह एक संकल्प के रूप में तभी पूरा होता है, जब देश में कोई शोषित, वंचित, पीड़ित और दबा-कुचला न कहलाए। जब हम भगवान श्रीराम की बात करते हैं तो माता शबरी का उल्लेख होता है। निषादराज का उल्लेख होता है। यह इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसमें कुछ संदेश छिपे हैं। संदेश यह छिपा है कि सब समान है। संदेश यह छिपा है कि सभी अपने हैं और संदेश यह छिपा है कि जो विकास की दौड़ में सबसे पीछे रह गया है, जो अलग-थलग पड़ा है, उसके कल्याण की चिंता करनी है और तभी सही मायनों में राष्ट्र निर्माण होगा। बीते 10 वर्षों में हमारी सरकार ने ऐसे ही हाशिए पर पड़े हुए गरीबों की, वंचितों की चिंता की है। हर गरीब को रहने के लिए पक्का मकान दिया है। उसके घर तक पीने का शुद्ध जल पहुंचाया है। उसके घर तक बिजली का कनेक्शन पहुंचाया है। 80 करोड़ गरीबों को मुफ्त इलाज दिया है और 50 करोड़ से ज्यादा गरीबों को मुफ्त इलाज की सुविधा दी है।

सभापति महोदय, सही मायनो में हमारी सरकार के 10 वर्षों का कार्यकाल माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में ऐसे ही दबे-कुचले गरीबों के कल्याण और उनके उत्थान के प्रति समर्पित रहा है।

(1530/RAJ/AK)

आज देश में सरकार के प्रयासों के कारण 25 करोड़ लोग गरीबी से बाहर निकल कर आए हैं, यह सामान्य उपलब्धि नहीं है। यही राष्ट्र निर्माण की वह दिशा है, जिसमें हमें आगे बढ़ना है।

सभापति महोदय, राष्ट्र निर्माण का यह भी महत्वपूर्ण पहलू है, जिस पर आज के इस संसद को जरूर चिंता करनी चाहिए कि आजादी के 75 वर्षों के बाद भी देश के अंदर ऊंच-नीच भेदभाव असमानता की खाई बहुत गहरी है। सही मायनों में हमारा यह संकल्प होना चाहिए कि देश का यह संसद लोकतंत्र का मंदिर है, जहां हमारे लोकतंत्र की आत्मा का वास है। आने वाले समय में हमारे देश की यह संसद असमानता की ऊंच-नीच की भेदभाव की इस गहरी खाई को पाटने के लिए और भी कितने सार्थक ले और भी कितने बेहतरीन फैसले करे। बाबा साहेब अम्बेडकर ने इस देश के संविधान की रचना की। उन्होंने कहा कि

> “Political democracy is incomplete without social and economic democracy”.

राजनैतिक लोकतंत्र के साथ-साथ आर्थिक और सामाजिक समानता सही मायने में देश को सशक्त करेगी। हम देश के लिए जिस कल्पना के साथ आगे बढ़ रहे हैं, अगले 25 वर्षों में विकसित भारत बनाने का प्रयास कर रहे हैं, उसमें इसका बहुत बड़ा महत्व है। इसलिए आज के इस अवसर पर जहां एक ओर अपनी सरकार का अभिनंदन करना चाहती हूं, वहीं माननीय प्रधान मंत्री जी ने इस अवसर पर जो संदेश दिया है, उसके संदर्भ में मैं अपनी पार्टी, ‘अपना दल’ की ओर से यह जरूर आग्रह करना चाहती हूं कि आने वाले समय में जब हम राष्ट्र निर्माण की दिशा पर आगे बढ़ें तो समाजिक और आर्थिक असमानता की जो यह खाई है, इसको पाटने की दिशा में हमारे देश की संसद के सारे फैसले होने चाहिए। इन्हीं शब्दों के साथ मैं पुन: आपको बहुत-बहुत धन्यवाद देती हूं। जय हिंद, जय भारत।

(इति)

1532 बजे

**श्री मोहन मंडावी (कांकेर):** सभापति महोदय, धन्यवाद।

सिया राम मय सब जग जानी,
करहु प्रणाम जोरी जुग पानी।

आज मैं राम मंदिर के पक्ष में बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं। लोग कहते हैं कि राम कपोल कल्पित हैं। राम अभी के नहीं हैं। राम 22 हजार करोड़ साल पहले के हैं।

*रचि* महेस निज मानस *राखा।*
*पाइ सुसमउ सिवा सन भाषा॥*

एक करोड़ श्लोक में सतयुग में पार्वती को राम कथा अमरनाथ की गुफा में सुनाई गई थी। इसी कथा को वाल्मीकि ने

उल्टा नाम जपा जग जाना।
बाल्मीकि भये ब्रह्म समाना।।

वे लिखते गए और घटना होती गई। इसके बाद आज से 500 साल पहले बाबा तुलसी दास

*रचि* महेस निज मानस *राखा।*
*पाइ सुसमउ सिवा सन भाषा॥*

वे मन में रचे थे। आज रामायण रामचरित मानस से ज्यादा लोकप्रिय है। मैंने अपने क्षेत्र में 51 हजार रामायण बांटा हूं। मुझे गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड से नवाजा गया है। मेरे क्षेत्र में हजारों रामायण मंडलियां हैं। राम का विरोध करने वाले,

जिसके लिए राम नाम उनका जीना सार है,
जिसने नहीं लिया राम नाम उनका जीना ही बेकार है।

राम जिसको देते हैं, तो छप्पड़ फाड़ के देते हैं और लेते है तो झाड़ू मार कर लेते हैं। देखिए, विपक्ष को झाड़ू मार कर ले लिए। राम अभी के नहीं हैं।

उमा कहऊँ मैं अनुभव अपना,
सत हरि भजन जगत सब सपना।

भगवान उनको मिलते हैं,

निर्मल मन जन सो मोहि पावा,
मोहि कपट छल छिद्र न भावा।।

जिसका भाव निर्मल होता है, भगवान उसी को मिलते हैं। यह तो माननीय प्रधान मंत्री मोदी जी की कृपा है। इनका मन निर्मल है।

निर्मल मन जन सो मोहि पावा,
मोहि कपट छल छिद्र न भावा।।

मोदी जी निर्मल भाव के हैं। राम राज का पतन कभी नहीं हो सकता है। रामचंद्र जी ने 14 वर्ष की तपस्या करके राम राज की स्थापना की है।

तापस वेश विशेष उदासी

चौदह वर्ष श्री राम वनवासी।

हमारे प्रधान मंत्री जी राम राज में रहने लायक बेटा तैयार कर रहे हैं। उस राम राज में रहने लायक मानव तैयार कर रहे हैं। आप रामायण सुनिए। रामायण में नौ प्रकार की भक्ति है। उसमें आज भी रामचंद्र जी प्रकट हो जाएंगे। वह गुह्यराज निषाद राज और जटायू के पास प्रकट हुए। भक्ति क्या है?

बारि मथे घृत होइ बरु सिकता ते बरु तेल।
बिनु हरि भजन न तव तरिअ यह सिद्धांत अपेल॥

कल्युग में समुद्र को पेर दो, तो घी निकल जाएगा, रेत को पेर देंगे, तो तेल निकल जाएगा। (1535/KN/UB)

लेकिन भक्ति के बगैर मुक्ति नहीं मिल सकती है। भक्ति क्या है? 'प्रथम भक्ति संतन कर संगा है', जिसमें यदि एक भी प्रकार की भक्ति है तो वह आदमी है और यदि एक भी नहीं है तो वह राक्षस है। प्रथम भक्ति संतन कर संगा– पहले संतों के साथ रहो, अच्छे लोगों के साथ रहो। दूसरी 'रति मम कथा प्रसंगा' – भगवान की कथा में ध्यान लगाना। 'गुर पद पंकज सेवा तीसरी भगति मान' – माता, पिता और गुरु की सेवा जिसके घर में हो गया, वह तीसरी भक्ति है। चौथी भक्ति 'मम गुन गन करइ कपट तज गान'– छल-कपट त्याग के माता-पिता और गुरु की सेवा करनी चाहिए। 'मंत्र जाप मम दृढ़ बिस्वासा, पंचम भजन सो बेद प्रकासा।' … (व्यवधान) छठी भक्ति 'दम सील बिरति बहु करमा, निरत निरंतर सज्जन धर्मा'– आदमी को जीवन में नम्र बोलना चाहिए। नम्र बोलने से बड़े-बड़े काम हो जाते हैं। मैं विपक्ष वालों को कहना चाहता हूं कि आप सुंदर कांड का दोहा नंबर 37 को सुनिये।

"सचिव बैद गुर तीनि जौं प्रिय बोलहिं भय आस।
राज धर्म तन तीनि कर होइ बेगिहीं नास॥"

जो स्वार्थवश, भयवश और नम्रवश बोलता है, यदि सचिव बोलता है तो राज का पतन होता है। यदि गुरु भयवश या स्वार्थवश बोलता है तो धर्म का पतन होता है। यदि वैद्य स्वार्थवश या भयवश प्रिय बोलता है तो शरीर का नाश होता है। सातवीं भक्ति है– 'सातव सम मोहि मय जग देखा, मोते संत अधिक करि लेखा'– भगवान राम कहते हैं कि मुझे मत मानो। संत कौन हैं, जिसके जीवन में दु:ख का अंत न हो, वह संत है।

"संत मिलन को जाइए तज माया मोह अभिमान,
ज्यों-ज्यों पग आगे बढ़े कोटि यज्ञ समान।"

जब हनुमान जी विभीषण के पास साधु के रूप में लंका में गए तो विभीषण क्या बोले– 'अब मोहि भा भरोस हनुमंता, बिनु हरि कृपा मिलहि नहि संता।' जब भगवान की कृपा होती है तो सब संत मिलते हैं। आठवीं भक्ति है– 'जथा लाभ संतोषा, सपनेहु नहिं देखहि परदोषा।' आदमी को जीवन में कभी दूसरों में दोष नहीं देखना चाहिए। जो दूसरों के दोष देखता है, उस आदमी का कोई ठिकाना नहीं रहता है। नौवीं भक्ति है– 'सरल सब सन छनहीना, मम भरोस हिय हरष न दीना।' भगवान को अंतरात्मा में धारण करके काम करिये। आपकी हर मनोकामना पूरी होगी। 'नव महुं एकउ जिन्ह कें होई, नारि पुरूष सचराचर कोई' – यदि नौ भक्ति में से कोई एक भक्ति भी है, तो

'सोइ अतिसय प्रिय भामिनि मोरें, सकल प्रकार भगति दृढ तोरें।' सबसे पहले शिवजी, बूढ़ादेव हमारे छत्तीसगढ़ में आए थे।

"एक बार त्रेता जुग माहीं, संभु गए कुंभज ऋषि पाहीं।
संग सती जगजननि भवानी। पूजे रिषि अखिलेश्वर जानी।"

एक बार त्रेता युग में शिवजी हमारे छत्तीसगढ़ में आए थे। उस क्षेत्र का नाम आज भी शिवआवा है। शिवआवा कहते-कहते सिहावा पड़ गया, जिसमें सप्त ऋषि का आश्रम है। सती ने रामकथा में ध्यान नहीं लगाया, तो उनको अपने माता-पिता के कुंड में जलना पड़ा। उनकी छोटी बहन प्रसूति थी। उनके सभी बच्चे योग्य थे। इसलिए आज जहां डिलिवरी होती है, उस रूम का नाम प्रसूति गृह रखा गया है। मैं ट्राइबल हूं। हमारे क्षेत्र में दादा, परदादा के नाम के आगे-पीछे गोरहु राम, मोहर राम, टटकू राम हैं। मोदी जी चाहते हैं कि गांव-गांव में अच्छा बेटा तैयार हो।

"*सुन जननी* सोई *सुत* बड़भागी जो पितु मातु वचन अनुरागी
तनय मातु पितु दोष निहारा दुर्लभ जननि सकल संसारा॥"

सभापति महोदय, मैं ऑल राउंडर, हारमोनियम बेंजो का मास्टर हूं। मैं छत्तीसगढ़ का एक स्व-रचित गीत गाना चाहता हूं–

नदिया, नरवा लह लहावयं, चिरई चिरगुन चह-चहावयं
ले के राम नाम आबे रे मयारु मोरे हे राजा राम
बिन पानी मछली जैसे, जीव मोर तरसत हे,
तोला देखे बिना मन मोर तरसत है।
नदिया, नरवा लह लहावयं, चिरई चिरगुन चह-चहावयं
ले के राम नाम आबे रे मयारु मोरे हे राजा राम।
सबल पुचछत रही थव, जोहत रहि थव ठाव ला।
मन नही माड़े मोर लेवथ रहिथो नाव॥
जोहत नै ना तरस जाथे, अन पानी नय सुहावय लेथो राम नाम
आबे रे मयारु मोरे हे राजा राम

1539 बजे (माननीय अध्यक्ष पीठासीन हुए)

**श्री मोहन मंडावी (कांकेर):** माननीय अध्यक्ष जी, धन्यवाद। जय हिन्द, जय भारत।

(इति)

## ADDRESS BY THE HON. SPEAKER
## ON CONSTRUCTION OF SHRI RAM TEMPLE IN AYODHYA

1539 बजे

**माननीय अध्यक्ष** : माननीय सदस्यगण, प्राचीन पावन नगरी अयोध्या में प्रभु श्रीराम की जन्मस्थली पर उनके भव्य, दिव्य मंदिर का निर्माण देश के लिए एक ऐतिहासिक और गौरवशाली उपलब्धि है।

(1540/VB/SRG)

हम सभी सांसद पूरी एकता, श्रद्धा और भक्ति-भाव से इस अवसर पर देशवासियों के उल्लास और उमंग में शामिल हैं।

इसके साथ ही, इस प्रस्ताव के जरिये, हम इसकी सराहना करते हैं। देश की विकास यात्रा में यह एक अविस्मरणीय क्षण है, जो भारत के लिए सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक रूप से अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

भारतीय सभ्यता और संस्कृति के कण-कण में प्रभु श्रीराम, माता सीता और रामायण रचे-बसे हैं। हमारे लोकतांत्रिक मूल्यों और सभी के लिए न्याय को समर्पित हमारा संविधान रामराज्य के आदर्शों से प्रेरित रहा है।

रामराज्य का आदर्श पूज्य बापू के हृदय में बसा था। यह हमारा परम सौभाग्य है कि हम सभी अयोध्या के मनोहारी मन्दिर में रामलला के विग्रह की प्राण-प्रतिष्ठा के साक्षी बने हैं।

अयोध्या में बना प्रभु श्रीराम का मन्दिर सिर्फ पत्थरों का ढाँचा भर नहीं है, बल्कि यह आस्था और भक्ति के अनन्त भावों से परिपूर्ण है। 22 जनवरी, 2024 पूरे भारतवर्ष के लिए एक ऐसी ही ऐतिहासिक तिथि है, जिसने देश के कोने-कोने को अद्भुत आनन्द और उत्साह से भर दिया है। दुनिया भर की अलग-अलग संस्कृतियों में भी राम मन्दिर की खूब चर्चा रही है। हर ओर आस्था का सागर उमड़ता दिखा। यह एक राष्ट्रीय पर्व का दिन बन गया है, जिसको लेकर युग-युगांतर तक हमारी पीढ़ियाँ अभिभूत होती रहेंगी।

हमारे माननीय प्रधानमंत्री जी ने भगवान राम से जुड़े इस पावन अवसर पर पूरे देश को एक सूत्र में पिरोने में अतुलनीय भूमिका निभाई है। उन्होंने श्री रामलला के विग्रह की प्राण-प्रतिष्ठा के अनुष्ठान के लिए पूरे समर्पित भाव से कठिन यम-नियमों का पालन किया। इस दौरान वे नासिक से लिपाक्षी और त्रिप्रयार से लेकर रामेश्वरम तक प्रभु श्रीराम से जुड़े महत्वपूर्ण तीर्थस्थानों पर भी गये और उन्होंने राष्ट्रीय एकता का संदेश दिया। इस यात्रा ने देशवासियों को एक बार फिर विविधता में एकता की अपनी शक्ति का अनुभव कराया है। इससे समग्र जन-मानस में एक अद्भुत आध्यात्मिक चेतना की जागृति हुई है।

22 जनवरी को प्राण-प्रतिष्ठा के कार्यक्रम में, माननीय प्रधानमंत्री जी ने बहुत विस्तार से देश की आध्यात्मिक चेतना के जाग्रत होने की बात कही। इस अवसर ने यह भी सिद्ध किया है कि एक राष्ट्र के रूप में हमारी चेतना निरंतर सशक्त हो रही है। समाज के हर वर्ग ने पूरी एकता और सद्भावना का परिचय देते हुए प्रभु श्रीराम का हृदय से स्वागत किया है।

अयोध्या में प्रभु श्रीराम का मन्दिर 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की भावनाओं का प्रत्यक्ष प्रतीक है। इस अवसर ने यह भी दिखाया है कि समाज में समरसता बढ़ाने में हमारे सामूहिक प्रयासों का कितना बड़ा योगदान है।

(1545/CS/RCP)

इस पल के साकार होने में हमारी न्यायपालिका और समाज के एक बड़े हिस्से की भूमिका भी उतनी ही अहम रही है। जनमानस का हमारे कानून और लोकतंत्र पर विश्वास यह दिखाता है कि हमारी लोकतांत्रिक संस्थाओं की नींव कितनी सशक्त और गहरी है।

जब सुप्रीम कोर्ट का फैसला आया, तब माननीय प्रधानमंत्री जी ने अपने वक्तव्य से समग्र देश में एक नया संदेश दिया और जय-पराजय की भावना की जगह शांति बनाए रखने की अद्भुत प्रेरणा भी समाज को दी। कोर्ट के आदेश पर चलते हुए सरकार ने तुरन्त ही श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट का गठन किया। इससे मंदिर निर्माण का कार्य तेजी से चला और 4 वर्ष में ही प्राण प्रतिष्ठा का आयोजन सम्पन्न हुआ। सदियों की तपस्या के बाद अयोध्या में बने भगवान श्रीराम के मंदिर से देश में सुशासन और जनकल्याण के नए युग का शुभारम्भ हुआ है। भगवान श्रीराम ने हमेशा समाज के सभी वर्गों का सम्मान किया और लोगों के कल्याण के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया। जन आकांक्षाओं को पूरा करना उनके लिए सदैव सर्वोपरि रहा। माननीय प्रधानमंत्री जी ने कहा है कि इस ऐतिहासिक अवसर ने आने वाली कई सदियों के लिए भारत में हमारी परम्पराओं के पुनर्जागरण और विकसित भारत की नींव को सशक्त किया है। उन्होंने कहा है कि 'राम से राष्ट्र' और 'देव से देश' तक हमारे लिए अपनी चेतना को विस्तार देना जरूरी है। निश्चित रूप से इससे वर्ष 2047 तक एक विकसित और समावेशी भारत बनाने के हम सभी के संकल्प को बल मिलने वाला है। आज यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि भारतवर्ष प्रभु श्रीराम के पदचिन्हों का अनुसरण कर रहा है।

आज समाज का हर वर्ग यह देख रहा है कि उसके जीवन को बेहतर बनाने के लिए कैसे निरन्तर एक के बाद एक प्रयास किए जा रहे हैं। आज हर किसी की आकांक्षाओं को न केवल प्राथमिकता मिल रही है, बल्कि उन्हें पूरा भी किया जा रहा है ताकि विकास में कोई पीछे न छूट जाए।

अयोध्या में जन-जन की भावनाओं का प्रतीक बने प्रभु श्रीराम के भव्य मंदिर से जुड़े इस प्रस्ताव को पारित करते हुए हम सभी बहुत गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं। हमें विश्वास है कि यह ऐतिहासिक उपलब्धि आने वाली पीढ़ियों को आशा, एकता और सामूहिकता के मूल्यों का संदेश देगी। इसके साथ ही यह हमारे देश की विविधता में एकता की भावना को भी प्रगाढ़ करेगी। धन्यवाद।

(इति)

## VALEDICTORY REFERENCES

1549 बजे

**माननीय अध्यक्ष :** अब हम समापन की ओर बढ़ रहे हैं। कुछ दलों के नेता अपने-अपने विचार व्यक्त करेंगे।

श्रीमती सुप्रिया सुले जी।

SHRIMATI SUPRIYA SADANAND SULE (BARAMATI): Sir, I take this opportunity to thank the hon. Speaker, the Treasury Benches and the entire Opposition.

(1550/IND/PS)

अध्यक्ष जी, ये पांच साल कैसे चले गए, पता ही नहीं चला। ऐसा लग रहा है कि कल ही रिजल्ट आया था और आज पांच साल इतनी जल्दी बीत गए। इसमें दो साल तो कोविड के कारण सबका ही नुकसान हो गया, लेकिन उससे उभर कर पांच साल में बहुत सारे नए रिश्ते, नई दोस्ती, और बहुत कुछ सीखने को मिला। जिस तरह आप और आपके पूरे ऑफिस ने काम किया, वह भी सराहनीय है। इन पांच सालों में कई बार झगड़े भी हुए, कभी आप हमसे नाराज, कभी हम आपसे नाराज, लेकिन रिश्ता बना रहा। मैं मेघवाल जी, प्रहलाद जोशी जी और स्पीकर साहब की पूरी टीम की बहुत-बहुत आभारी हूं। आपस में थोड़ी सी नोक झोंक, थोड़े हंसी मजाक में पांच साल सबके अच्छे निकल गए। हमारा यह बैच एक ऐसा बैच रहेगा जिसने पुरानी और नई बिल्डिंग, दोनों में काम किया है। उस बिल्डिंग में बहुत यादें हैं। जिन्होंने इस देश का इतिहास लिखा है और यह देश 70 सालों में विकास के जिस स्थान पर पहुंचा है, उसमें सबकी मेहनत रही है। Our entire fight for Independence and framing of Constitution by Dr. B.R. Ambedkar - हमारी सारी यादें उस बिल्डिंग में हैं और इस नई बिल्डिंग में हम आपकी छत्रछाया में आए, वे पुरानी यादें तो छूट नहीं रही हैं, लेकिन यहां धीरे-धीरे हम संभल रहे हैं।

अध्यक्ष जी, मैं आप सभी का तहेदिल से आभारी हूं कि आप सबने हम सबका साथ दिया। मैं अपने क्षेत्र के सारे लोगों की बहुत आभारी हूं, पार्टी का आभार अभी नहीं मान सकती, क्योंकि पार्टी थोड़ी डाइलेमा में है। थोड़ी इधर है, थोड़ी उधर है। कोर्ट ही डिसाइड करेगा कि किसकी पार्टी होगी। वह समय बताएगा, जब हम अगली बार आएंगे लेकिन आप सभी का साथ रहना चाहिए। पॉलिटिकली लड़ाई तो चलती रहेगी, लेकिन हमारे रिश्तों में कभी अंतर और कटुता न आए, यही लोकतंत्र की सबसे अच्छी बात है। मैं स्पीकर साहब, सारी ट्रेजरी बैंचेज और विपक्ष के लोगों की आभारी हूं। सब हमारे दोस्त चुनकर आएं और इस देश को सशक्त करने के लिए और विकास में साथ देते रहें। इस साइड या उस साइड की बात नहीं, लेकिन हमारा देश बड़ा होना चाहिए। जय हिंद।

**वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्रीमती अनुप्रिया पटेल):** अध्यक्ष जी, नए संसद भवन में 17वीं लोक सभा का यह अंतिम दिन है। हम लोगों के पांच साल कैसे गुजर गए, पता ही नहीं चला। किसी ने सही कहा है 'वक्त गुजरते वक्त नहीं लगता।' जो वक्त हमने पुरानी संसद से लेकर, जिसे आज हम संविधान सदन कह रहे हैं, वहां से लेकर यहां नई संसद में गुजारा वक्त हम सबकी यादों में कैद है। वर्ष 2024 के चुनाव परिणामों के बाद इस संसद की तस्वीर कैसी होगी, बदली होगी, हम इसके बारे में बहुत कुछ इस अवसर पर नहीं कहेंगे, लेकिन इतना जरूर कहेंगे कि हम सारे सांसद जिन्होंने संविधान सदन से लेकर इस नए सदन में अपने पांच सालों का वक्त बिताया है, वह हम सभी के लिए जीवन के अविस्मरणीय यादगार पल हैं, जो हमेशा के लिए हम सबकी यादों में कैद हो गए हैं। आज के इस अंतिम दिन पर मैं आपको हृदय-तल से आभार व्यक्त करना चाहती हूं। मेरी पार्टी की ओर से, हम दो सांसद हैं और हमारी छोटी-सी पार्टी है, हमारे दोनों सदस्यों की तरफ से आपको हृदय-तल से कृतज्ञता ज्ञापित करती हूं। आपका हमें स्नेह मिला, आशीष मिला, संरक्षण मिला। कभी-कभी थोड़ी डांट-फटकार भी मिली। एक अभिभावक के रूप में हमारा भी यह अधिकार है और आपका भी कि आपके स्नेह के साथ आपकी डांट, आपकी फटकार भी हम स्वीकार करें।

अध्यक्ष जी, आपके अपने अध्यक्षीय कार्यकाल में आपने अनेक अभिनव पहल सांसदों की कार्यकुशलता को बढ़ाने के लिए की हैं, खास तौर से जो सांसद पहली बार चुनकर आते हैं। आपके नए प्रयोगों से, आपकी नई अभिनव पहल से उनकी बहुत सहायता हुई। जब हम सदन में चुनकर आते हैं, यह हमारे लिए सौभाग्य तो है ही, लेकिन सौभाग्य से बढ़कर एक बहुत बड़ा दायित्व है। लाखों लोगों की अपेक्षाएं हमसे होती हैं और आपने उन अपेक्षाओं के अनुरूप उनकी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए हमें इस सदन में अवसर प्रदान किया है, उसके लिए मैं बहुत-बहुत आभारी हूं।
(1555/RV/SMN)

अध्यक्ष जी, यह मेरा दूसरा कार्यकाल है। मेरी एक छोटी-सी पार्टी है। इस सदन में आकर मैंने बहुत सारे अनुभव प्राप्त किए। इस सदन में देश के तमाम राज्यों से बड़े-छोटे अनेक राजनीतिक दलों के प्रतिनिधि चुनकर आते हैं। बहुत सारे वरिष्ठ सांसद हैं, जो इस संसद में अपने कई कार्यकाल पूरे कर चुके हैं। अलग-अलग विचारधाराओं को जानना, देश के कोने-कोने में रहने वाली जनता की अपेक्षाओं को समझना, उनके दृष्टिकोण को समझना, और अनेकों अनेक अनुभवी नेताओं के विचारों से लाभान्वित होना, यह एक ऐसा अनुभव है, जिसकी शब्दों में व्याख्या करना कठिन है। किन्तु, मेरे जीवन का यह सचमुच एक अविस्मरणीय कार्यकाल रहा। अब तो मैं इसे दस वर्ष कहूंगी। मैंने बहुत कुछ सीखा।

महोदय, मैं आज इस अवसर पर अन्य राजनीतिक दलों के नेता, हमारे राष्ट्रीय दलों, क्षेत्रीय दलों के बड़े-बड़े नेता, जो यहां पर मौजूद हैं, जिनसे हमने बहुत कुछ सीखा है, उनके प्रति भी मैं अपना आभार व्यक्त करना चाहती हूं। युवा सांसदों को संसद के अन्दर अपने मसले को कैसे

सही ढंग से रखना है, इसे हमारे वरिष्ठ सांसद ही हमें सिखाते हैं। मैं उन सबके प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करना चाहती हूं।

अध्यक्ष जी, वक्त दिखाई तो नहीं देता, लेकिन बहुत कुछ दिखा जाता है। सत्रहवीं लोक सभा में हमारी इस संसद ने सरकार के बहुत सारे ऐतिहासिक निर्णयों को भी देखा। अभी हाल ही में हमारे सदन ने एक बहुत ऐतिहासिक कार्य किया। आई.पी.सी., सी.आर.पी.सी., इंडियन एविडेंस एक्ट, जो अंग्रेजों की गुलामी के प्रतीक थे, वर्ष 1860 से उनका बोझ उठाए भारत के करोड़ों-करोड़ नागरिक चल रहे थे। हमसे पहले किसी सरकार ने यह चिंता नहीं की थी। मुझे गर्व है कि माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की सरकार ने इस ओर अपनी दृष्टि दौड़ायी। अंग्रेजों के जमाने से बने हुए इस कानून के उद्देश्य में भारत के नागरिकों को दंड देना प्राथमिकता थी, भारत के नागरिकों के साथ न्याय करना उनकी प्राथमिकता नहीं थी। उसको बदलने का काम इस संसद ने इस सत्रहवीं लोक सभा में की है।

अध्यक्ष जी, जब हमने 'संविधान सदन' से अपने इस नए सदन में प्रवेश किया, तब भी हमारी सरकार ने एक इतिहास रचा। सालों से लम्बित इस देश की आधी आबादी को न्याय और भागीदारी सुनिश्चित कराने के उद्देश्य से महिला आरक्षण विधेयक को पारित करने का काम हमारी एन.डी.ए. की सरकार ने प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में किया और यह सदन उसका साक्षी है।

अध्यक्ष जी, इस सत्रहवीं लोक सभा के कार्यकाल के दौरान हमने भयावह त्रासदी को देखा, कोविड-19 को देखा। मुझे गर्व है कि जब पूरी दुनिया कोविड-19 की महामारी से जूझ रही थी, उस वक्त भारत ने 'वसुधैव कुटुम्बकम' की अपनी भावना को सर्वोपरि रखते हुए 'वैक्सीन मैत्री' इनिशिएटिव के अन्तर्गत 100 से अधिक देशों को वैक्सीन और दवाएं सप्लाई करने का काम किया। यह सब कुछ सत्रहवीं लोक सभा के कार्यकाल में हमने देखा।

महोदय, यह सत्रहवीं लोक सभा बहुत सारे ऐतिहासिक निर्णयों की साक्षी रही। मैं इस अवसर पर एक और चिंता को व्यक्त करना चाहती हूं। एक युवा सांसद, युवा मंत्री के रूप में सदन का एक-एक क्षण मूल्यवान होता है। करोड़ों-करोड़ लोगों की अपेक्षाओं के साथ हम इस सदन में चुनकर पहुंचते हैं और एक-एक क्षण जब हंगामे की भेंट चढ़ता है, जिसका उपयोग सार्थक चर्चाओं के लिए होना चाहिए, जिसका उपयोग जन भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए होना चाहिए, तो हमारे जैसे युवा सदस्यों को कष्ट होता है। यह अवसर बार-बार नहीं मिलता। बहुत कम लोग इतने सौभाग्यशाली होते हैं जो अनेक बार चुनकर आते हैं। लेकिन, जो एक या दो बार चुनकर आते हैं, उनके लिए पाँच सालों में एक-एक क्षण की कीमत होती है।

(1600/GG/SM)

अध्यक्ष महोदय, मैं इतना ही कहना चाहूंगी कि कम से कम 18वीं लोक सभा में, विभिन्न राजनैतिक दलों के जो भी सदस्य यहां चुन आए हैं, हम सबकी यह कोशिश होनी चाहिए कि सदन के एक-एक क्षण का सदुपयोगा हो। सदन को हंगामे की भेंट चढ़ाने से बेहतर है कि सरकार को कटघरे में खड़ा किया जाए। सरकार से सवाल पूछे जाएं। मीडिया की हेड लाइन यह बने कि सदन

की कार्रवाई स्थगित हो गई, सदन नहीं चला, इससे बेहतर यह हो सकता है कि सरकार विपक्ष के उक्त सवाल से असहज हो गई। यह शायद एक बेहतर हेडलाइन हो सकती है। यह एक ऐसी व्यवस्था है, जिस पर सभी दलों को सामूहिक रूप से मंथन करने की जरूरत है और जो हमारी संसदीय परंपराएं पटरी से उतर गई हैं, उनको पुन: पटरी पर लाने की जरूरत है और इसके लिए सामूहिक चिंतन और सामूहिक संकल्प की आवश्यकता है। अध्यक्ष महोदय, मैं इतना ही कहना चाहूंगी कि पांच सालों के लिए जब हम यहां आते हैं तो लाखों लोगों के प्रति हमारी जवाबदेही होती है। इसलिए जब हम अपने समय का उपयोग सार्थक चर्चाओं के लिए करते हैं, जनता से जुड़े हुए उनके हित के मसलों को उठाते हैं, तो हम अपने उस दायित्व के साथ न्याय कर पाते हैं।

अध्यक्ष महोदय, जब सदन में प्रश्न काल चलता है, कई बार हमने देखा है कि प्रश्न काल भी हंगामें की भेंट चढ़ गया। मैं आज 17वीं लोक सभा के अंतिम दिन अपनी भावना इस गरिमामयी सदन के सभी सदस्यों के बीच रखना चाहती हूँ कि अगर सदन में हंगामे पूरी तरह खत्म नहीं हो सकते तो कम से कम यह संकल्प जरूर होना चाहिए कि प्रश्न काल किसी भी कीमत पर स्थगित न हो, क्योंकि प्रश्न काल एक ऐसा समय होता है, जो मंत्री से ले कर, विभाग के, मंत्रालय के छोटे-बड़े हर अधिकारी के माथे पर चिंता की लकीरें लाने का काम कर सकता है। मैं तो समझती हूँ कि विपक्ष के पास सबसे बड़ा हथियार प्रश्न काल है। सरकार देश की जनता के प्रति जवाबदेह होती है। सरकार और बेहतर काम करे इसका भी बहुत बड़ा हथियार प्रश्न काल है। इसलिए कम से कम 18वीं लोक सभा में हम सभी को यह चिंता जरूर करनी चाहिए कि प्रश्न काल स्थगित न हो। मुझे नहीं मालूम कि मेरी इस बात से कितने लोग सहमत होंगे, किंतु यह मेरी भावना थी, जो मैं निष्पक्ष रूप से व्यक्त कर रही हूँ।

अध्यक्ष महोदय, मैं पुन: इस अवसर पर आपको धन्यवाद देती हूँ, आपका आभार व्यक्त करती हूँ। आपके मार्गदर्शन में हम सभी को इस गौरवशाली सदन में अपनी बात रखने का अवसर मिला।

धन्यवाद।

**श्री रितेश पाण्डेय (अम्बेडकर नगर):** आदरणीय अध्यक्ष जी, 17वीं लोक सभा का यह अंतिम दिन और कुछ अंतिम क्षण हैं। मेरे लिए यह लोक सभा अत्यंत ही अविस्मरणीय समय रहा है। इन पांच सालों में आपके मार्गदर्शन में बहुत कुछ सीखने को मिला। इतनी देर तक कभी सदन चलता था, मैं विधान सभा में भी रहा हूँ, ऐसा मैंने नहीं देखा था। अभी अनुप्रिया जी और सुप्रिया जी ने बातें रखीं कि बड़े-बड़े मुद्दों पर, जैसे महिला आरक्षण बिल, उसके साथ-साथ धारा 370 हटाई गई, ये तमाम बड़े मुद्दे, जो बाबा साहब बी.आर. अंबेडकर जी ने कहा था कि एक देश और दो अलग-अलग निशान नहीं रह सकते, इन सारी चीज़ों को हटाया गया। बड़े मुद्दों पर चर्चा हुई। हम लोगों को यहां से बहुत कुछ सीखने को मिला।

अध्यक्ष महोदय, आपके संरक्षण में हमने, यहां पर तमाम उन बेहतरीन क्षणों को याद करना पड़ेगा, चाहे वह पुराने सदन में रहा हो, चाहे अब इस नए सदन में। मैं हरेक चीज़ के लिए, यहां पर हमारे सत्ता पक्ष के सदस्यगण, विपक्ष के हमारे जितने साथी हैं, उन सभी का मैं धन्यवाद देना चाहता हूँ। हम लोग पहली बार इस लोक सभा में आए थे, कम उम्र में आए हैं। सबने अंगुली पकड़ कर इस सदन में यहां की जो परिपाटी रहती है, उसको समझाया-सिखाया। हम लोगों का भाईचारा सदन के अंदर ही नहीं, बल्कि पूरे देश में आप कहीं पर भी चले जाते हैं, तो सांसदों का, उनके क्षेत्र में जो बल मिलता है, उससे भी बहुत सारी समस्याओं का समाधान हो जाता है।

(1605/MY/RP)

इसके लिए मैं आपका बहुत आभारी हूं। अंत में, मैं एक शेर कहूंगा, क्योंकि हम सभी लोग चुनाव में जा रहे हैं। जाहिर सी बात है कि हम में से हो सकता है कि कुछ लोग दोबारा न आएं। मैं चाहता हूं कि सभी लोग वापस चुन कर आएं। हम सभी के लिए एक शेर है-

सबको मिल जाएगी मंजिल यह जरूरी तो नहीं
जिंदगी राह सफर हैं, यूं ही चलते रहना
तुम चिरागों की तरह राह में जलते रहना
हर अंधेरे को उजालों में बदलता रहना।

अध्यक्ष जी, आपके नेतृत्व में 17वीं लोक सभा के अंतर्गत हम लोगों को अपने आप में निखारने का अवसर मिला है। यहां पर हमारा जो स्टाफ बैठा है, जिनके जरिए हम लोगों को तमाम अवसर मिलें, उन्होंने भी उंगुली पकड़ कर हमें गाइड करने का काम किया है, मैं सभी को धन्यवाद देता हूं। यह मेरे लिए अपने जीवन का एक बहुत ही अविस्मरणीय समय रहा है। मुझे पूरी उम्मीद है कि हम सब पुन: 18वीं लोक सभा में इसी सदन में मिलेंगे और अपने-अपने मुद्दों को लेकर मजबूती से संघर्ष करेंगे। मैं अंबेडकर नगर की जनता के लिए और आप सभी अपने-अपने क्षेत्र की जनता के लिए पूरी ताकत से लड़ने का काम करेंगे। इसीलिए, हमें यहाँ चुनकर भेजा जाता है, ताकि हम अपनी जनता-जर्नादन का एक अच्छी तरह से प्रतिनिधित्व कर सकें और उनके हक-हकूक की लड़ाई देश की सबसे बड़ी पंचायत, लोक तंत्र के सबसे बड़े मंदिर में पूरी ताकत से लड़ने का काम करें। इसके लिए मैं आपको धन्यवाद देना चाहता हूं। मैं अपने सभी साथियों को भी धन्यवाद देना

चाहता हूं। लोक सभा के हमारे जो कार्यरत साथी हैं, उनको भी मैं धन्यवाद देना चाहता हूं। बहुत-बहुत धन्यवाद। जय भीम-जय भारत।

**श्री प्रिंस राज (समस्तीपुर) :** अध्यक्ष महोदय, आज आखिरी दिन मुझे बोलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। जब मैं इस 17वीं लोक सभा का सदस्य बनकर आया और जब मेरी मेडेन स्पीच हो रही थी, उस वक्त भी आप चेयर पर थे और आज भी हैं। मैंने अपने प्रथम भाषण में बताया था कि मुझे इस सदन में कैसा अनुभव मिला। जब हमारे परिवार के लोग, दोस्त और कई सारे लोग मुझसे पूछते थे कि जब आप सांसद बन कर गए तो सदन में कैसा अनुभव रहा। मैंने पहली स्पीच में कहा था कि मेरा अनुभव बिल्कुल उस एक नए विद्यार्थी की तरह रहा, जब वह स्कूल की नई कक्षा में जाता है। जब वह बैठता है तो देखता है कि बाएं हाथ एवं दाएं हाथ में जो उसके साथी होते हैं, कोई पढ़ने में अव्वल होता है, कोई नटखट होता है, कोई शरारती होता है, कोई दूसरे को पढ़ने नहीं देता है, इस तरह क्लास में कई तरह के बच्चे होते हैं, उसी तरह से यह सदन भी हमें अनुभव देता है। जहां एक तरफ हमारे मंत्रिमंडल के साथी बैठते हैं, काफी अनुभवी लोग बैठते हैं और दूसरी तरफ, हमारे विपक्ष के साथी बैठते हैं। कई ऐसे भी होते हैं, जो चुपचाप बैठते हैं, किसी चीज में पार्टीसिपेट नहीं करते हैं। वे चुपचाप सुनते हैं और अनुभव लेते हैं। इस तरीके का अनुभव हमारा रहा है।

महोदय, यह तो हमारे सौभाग्य की बात कहिए, फख्र की बात कहिए कि ऐसे वक्त में हमें सदन का सदस्य बनने का मौका मिला है, जब सदन ने इतने ऐतिहासिक निर्णय लिये हैं, इसमें स्वदेशी संसद का निर्माण हुआ, अनुच्छेद 370 हटाई गई, ट्रिपल तलाक जैसे चीजों को हटाया गया। कोविड के दौरान स्वदेशी वैक्सीन बनी, महिला आरक्षण पर अहम निर्णय लिया गया और उसका हिस्सा बनने का हमें सौभाग्य प्राप्त हुआ। यहां सभी माननीय सदस्यों के साथ बैठने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मैं सभी को तहे दिल से धन्यवाद देता हूं। आप सभी हमारे सीनियर सदस्य हैं और अभिभावक भी हैं। आप सभी का मेरे ऊपर आशीर्वाद रहा है। आपने हमें गाइड किया, रास्ता दिखाया कि सदन में कैसे बोलना चाहिए, व्यवहार कैसा रखना चाहिए, सदन की प्रक्रिया कैसी होनी चाहिए। यहां हमारे कई दोस्त भी बने हैं। कई सदस्यों का मुझे साथ मिला और कई सदस्यों का प्यार मिला। यहाँ पार्लियामेंट के जितने भी स्टाफ्स हैं, उनको भी मैं धन्यवाद देना चाहूंगा। इनसे भी एक घरेलू संबंध बन जाता है। वे भी हमारे घर आते हैं और हम उन्हें आमंत्रित करते हैं। इससे एक पारिवारिक वातावरण बन जाता है। मैं अपने माननीय सदस्या सुप्रिया सुले जी का समर्थन करता हूं।

(1610/CP/NKL)

उन्होंने कहा कि मतभेद राजनीतिक होना चाहिए, व्यक्तिगत नहीं होना चाहिए। हम इसका बिल्कुल समर्थन करते हैं और हम भी इसी विचारधारा पर चलते हैं कि आपका जो भी मतभेद है, वह राजनीतिक होना चाहिए। व्यक्तिगत सम्बन्ध अलग होता है और हमें लगता है कि व्यक्तिगत सम्बन्ध हमने यहां पर सबके साथ बनाया है, सबके साथ जुड़ाव बना है। इस सदन का यह आखिरी दिन है, काफी भावुक क्षण है। हम अपने अध्यक्ष महोदय जी को धन्यवाद देते हैं। आपसे जब मुलाकात होती थी, आप अक्सर हमें मोटीवेट करते थे और कहते थे कि सदन में कुछ बोलो। चीजें

सीखते-सीखते हम लोग आगे बढ़े और हौसला बढ़ा। जिस तरीके से देश हित में हम लोगों ने अपने मुद्दे उठाए, जन हित में अपने मुद्दे उठाए, हमें पूर्ण विश्वास है कि जो नया सदन बना है, उससे कई और कीर्तिमान स्थापित किए जाएंगे। अंत में, मैं समस्तीपुर लोक सभा क्षेत्र को रिप्रेजेंट करता हूं। मैं वहां की जनता को तहे-दिल से धन्यवाद देता हूं कि उन्होंने अपने आशीर्वाद से मुझे इस सदन का हिस्सा बनने का मौका दिया। आप सभी, 200 पार होने के बाद जितने बचते हैं, आप लोग दोबारा आएं और इस सदन का हिस्सा बनें। इन्हीं चंद बातों के साथ मैं आप सभी को धन्यवाद देता हूं, सभी को शीश झुकाकर नमस्कार करता हूं, प्रणाम करता हूं। बहुत-बहुत धन्यवाद, जय हिंद।

**श्री राहुल रमेश शेवाले (मुम्बई दक्षिण-मध्य):** अध्यक्ष महोदय, 17वीं लोक सभा के अंतिम सत्र का आज अंतिम दिन है और आज अंतिम दिन के अवसर पर आपने मुझे बोलने का मौका दिया है, इसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूं।

अध्यक्ष महोदय, स्पीकर के नाते आपने सभी को न्याय देने का काम किया। मैं बताना चाहता हूं कि हर बार आपने मुझे व्यक्तिगत रूप से बहुत सहयोग किया, मार्गदर्शन किया, इसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूं। इस लोक सभा में आने के पहले हम एनडीए के माध्यम से चुनाव लड़े थे और एनडीए के माध्यम से हम सभी सांसद चुनकर आए थे। लेकिन दुर्भाग्य से हमारे नेतृत्व ने लोक सभा चुनाव के बाद अलग निर्णय लिया और महाविकास अघाड़ी को जॉइन किया। हम एनडीए के माध्यम से चुनकर आए थे और राज्य में महाविकास अघाड़ी के साथ शामिल हुए, उस वक्त से ही हमें वह निर्णय पसंद नहीं था। बाद में महाराष्ट्र राज्य के मुख्यमंत्री आदरणीय एकनाथ शिंदे साहब ने एक बार फिर एनडीए जॉइन करने का निर्णय लिया। हमने बाला साहब ठाकरे जी के विचारों को आगे लेकर जाने का निर्णय लिया था। हमें पूर्णत: विश्वास है कि माननीय प्रधान मंत्री मोदी जी बाला साहब ठाकरे जी के विचारों को आगे लेकर जाने में पूरा सहयोग करेंगे और बाला साहब ठाकरे जी का सपना पूरा करने का काम करेंगे। वह विश्वास उन्होंने पूरा करके दिखाया। अनुच्छेद 370 को रद्द करने का जो बाला साहब ठाकरे जी का सपना था, वह उन्होंने किया। अयोध्या में भव्य श्री राम मंदिर का निर्माण करने का बाला साहब ठाकरे जी का सपना भी उन्होंने पूरा किया। मुझे बहुत ही आनंद है कि हमने माननीय मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे साहब जी के नेतृत्व में जो निर्णय लिया, उस निर्णय में हमें सफलता आई। 17वीं लोक सभा हमारे लिए एक ऐतिहासिक लोक सभा है। शिवसेना प्रमुख बाला साहब ठाकरे जी का सपना पूरा करने के लिए पांच साल का कार्यकाल भी यह लोक सभा है। हम खुद को भाग्यशाली समझते हैं कि हमें पुराने लोक सभा भवन में भी भाषण करने का मौका मिला और अभी नए लोक सभा भवन में भी भाषण करने का मौका मिला। जो पुरानी लोकसभा है, वहां का एक अलग इतिहास है। नई लोक सभा में आपने पूरा माडर्नाइजेशन करके आधुनिक तंत्रज्ञान के माध्यम से सदस्य को कैसे सहयोग मिलेगा, इसका आपने पूरा इंप्लीमेंटेशन यहां पर किया, पेपरलेस सिस्टम यहां पर शुरू किया, इसके लिए भी मैं आपको धन्यवाद देता हूं। पांच साल के कार्यकाल में अनुच्छेद 370, महिला आरक्षण का नारी सम्मान का विधेयक, अपनी अर्थव्यवस्था आज पांचवें रैंक पर है इसका और एनडीए के माध्यम से हमने लोगों को जितने भी वचन दिए थे, सभी वचनों की पूर्ति की है।

मैं एक बार फिर आपको धन्यवाद देता हूं और शिवसेना पार्टी की तरफ से आपको धन्यवाद देता हूं। मैं सभी सदस्यों को आने वाले लोक सभा चुनाव की हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं। साउथ सेंट्रल मुंबई के मतदाता, जिन्होंने मुझे यहां चुनकर भेजा, इसके लिए मैं उनको भी धन्यवाद देता हूं।

(1615/NK/VR)

**श्री अनुभव मोहंती (केन्द्रपाड़ा):** अध्यक्ष महोदय, आज सत्रहवीं लोक सभा का अंतिम दिन है, बीजू जनता दल की तरफ से, मेरे नेता नवीन पटनायक, मेरी पार्टी के सभी सांसदों की तरफ से और फ्लोर लीडर पिनाकी जी की तरफ से आपको बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूं। जिस तरह से आपने सभी को बोलने का मौका दिया, सत्रहवीं लोक सभा के पांच साल कैसे बीत गए, पता भी नहीं चला। आपने इतने अच्छे से सभी को बोलने और भाग लेने में मदद की, आपने बहुत आशीर्वाद भी दिया है। उसके साथ-साथ, सदन के लीडर ऑफ द पार्टी, लीडर ऑफ द हाउस माननीय प्रधानमंत्री जी, लीडर ऑफ अपोजिशन और लोक सभा में उपस्थित सभी पार्टी के लीडर को धन्यवाद देना चाहूंगा।

लोक सभा सचिवालय के सभी सदस्यों, लोक सभा के सेक्रेटरी जनरल, सिक्योरिटी डिपार्टमेंट, मीडिया, रिपोर्टर्स और जनर्लिस्ट, सभी को धन्यवाद। पुरानी पार्लियामेंट बिल्डिंग से लेकर नये पार्लियामेंट बिल्डिंग तक जो हमारा यह सफर ऐतिहासिक रहा। हमने इतने ऐतिहासिक बिल पास होते हुए यहां देखा। चाहे ट्रिपल तलाक की बात हो, धारा 370 हटने की बात हो, वूमेन रिजर्वेशन की बात हो, जो ब्रिटिश लॉज थे, आजादी के इतने सालों बाद पहली बार सारे लॉज को हटाकर हमारे देश में हिन्दुस्तानी लॉज आए, यह हमारे लिए बहुत गर्व की बात है।

कई सेशन्स ऐसे भी रहे हैं, जिसमें बहुत सारी तैयारी करके आते हैं। हमें लाखों लोग वोट देकर जीताते हैं, बहुत आस्था रखते हैं, बहुत उम्मीद रखते हैं कि हम इधर आकर उनकी आवाज उठाएं। कई बार तैयारी से आने के बाद भी, आपकी अच्छी कोशिश के बावजूद भी सदन डिसरप्ट होता है तो उससे बड़ी दिक्कत होती है, दिल को ठेस पहुंचती है। जनता को इसके माध्यम से जो मैसेज पहुंचता है, खासकर युवा और छोटे बच्चों को जो गैलरी में आकर बैठते हैं, स्कूल के छोटे बच्चे-बच्चियां उनके सामने भी हम इस तरह के व्यवहार करेंगे तो बड़ा दुख लगता है।

आज के दिन इस बारे में ज्यादा चर्चा न करते हुए इतनी उम्मीद रखूंगा कि आगे चलकर 18वीं और 19वीं लोक सभा, जितनी भी इतिहास में आती रहेंगी, आगे चलकर इतिहास बनेंगे, उसके लिए मैं सभी से अनुरोध करना चाहूंगा, संसद कैसे अच्छे से चले, डिबेट हो, डिस्कशन हो, कलैक्टिव एफर्ट सबकी लगे, मेरी पार्टी हमेशा विश्वास करती है कि कोई वेल में न आए, हम हमेशा डिबेट और डेलिब्रेशन्स में यकीन रखते हैं।

मैं अपने नेता नवीन जी को धन्यवाद देता हूं। बीजू जनता दल के सभी नेता और कार्यकर्ता जिन्होंने हमें यहां चुन कर भेजा, मैं केन्द्रपाड़ा वासियों को धन्यवाद देना चाहूंगा। ओडिशा के सारे लोग जो हमसे इतनी उम्मीद रखे हैं, मैं सभी को विश्वास दिलाना चाहूंगा कि आने वाले वक्त में भी

हम उतनी ही मेहनत और शिद्दत से काम करेंगे, जितनी मेहनत और शिद्दत से आज तक काम करते आए हैं।

कोविड-19 हम सभी के लिए एक उदाहरण था। हमने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि उसका सामना करना पड़ेगा। जिस हिम्मत और साहस से उसका सामना किया और हिन्दुस्तान आज पूरे विश्व में अपना नम्बर वन स्थापति कर पाया, इसके लिए मैं सभी सांसदों, माननीय प्रधानमंत्री जी और मुख्यमंत्री नवीन जी को धन्यवाद देना चाहूंगा। भगवान महाप्रभु श्री जन्नाथ का आशीर्वाद सभी पर बना रहे, सभी को लंबी उम्र मिले।

अंत में, मैं आपकी इजाजत से एक छोटी सी कविता पढ़ना चाहूंगा जो युवा सांसद यहां आते हैं, सभी से सीखते हैं, सीखने के लिए साथ मुझे क्रिकेट खेलने का भी मौका मिला है। जो वक्त हमने साथ बिताया है, उसे भूल नहीं सकते। यह हम सबके लिए बहुत भावुक पल है। खासकर मेरे लिए पहली बार लोक सभा में चुनकर आने का अहसास रहा, आप लोगों का आशीर्वाद रहे, अच्छा काम करूं। नेता अच्छा बनूं या न बनूं, अच्छा इंसान बनकर इस दुनिया को छोड़ू, यह आपका आशीर्वाद रहे, अच्छा इंसान होने के नाते जाना जाऊं।

(1620/SK/SAN)

नन्हीं चींटी जब दाना लेकर चलती है,
और चढ़ती दीवारों पर सौ बार फिसलती है।
मन का विश्वास रगों में साहस भरता है,
चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना न अखरता है।
आखिर उसकी मेहनत बेकार नहीं जाती,
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।

महोदय, मैं सभी को हृदय से प्रणाम करते हुए धन्यवाद देते हुए आशीर्वाद की प्रार्थना करता हूं। बीजू जनता दल हमेशा कलेक्टिव एफर्ट्स में विश्वास रखती आई है और आगे भी रखती रहेगी। जय जगन्नाथ, जय हिंद।

**श्री सुनील कुमार पिन्टू (सीतामढ़ी):** माननीय अध्यक्ष जी, जनता दल यूनाइटेड के 16 मैम्बर्स आपके प्रति कृतज्ञ हैं। हम माननीय नीतीश जी को धन्यवाद देते हैं कि हम सब में से कुछ सदस्यों को पहली बार सदन में आने का मौका दिया।

माननीय अध्यक्ष जी, माननीय प्रधान मंत्री जी के नेतृत्व में हम 17वीं लोकसभा के सदस्य बने। माननीय प्रधान मंत्री जी, माननीय मुख्यमंत्री जी और आपके सौजन्य से इतिहास में हमारा नाम दर्ज हुआ क्योंकि हम पुराने सदन में आखिरी मैम्बर थे और नए सदन में पहले सदस्य के रूप में अपने क्षेत्र की जनता की आवाज़ बन सके।

महोदय, मैं मां सीता की प्रकट स्थली सीतामढ़ी से आता हूं। मैं आपके माध्यम से सीतामढ़ी की जनता को सादर प्रणाम करता हूं कि उन्होंने मुझे मौका दिया कि मैं आपके समक्ष अपने क्षेत्र की समस्याओं को उठा सकूं और आपके माध्यम से सरकार से अपने क्षेत्र का विकास करा सकूं या उनकी समस्याओं का समाधान करा सकूं। हमें यह मौका आपके माध्यम से ही मिला है।

महोदय, जब हम सदन में आए थे, तब हम जीरो ऑवर में लॉटरी में अपना नाम नहीं पाते थे और हमारा नाम क्वैश्चन ऑवर में भी नहीं आता था। उस समय आपके प्रति थोड़ी नाराजगी होती थी, तब हमें लगता था कि अध्यक्ष जी, हमारे साथ कुछ भेदभाव कर रहे हैं। हम आपको धन्यवाद देते हैं कि आपने हमें शाम को एक्स्ट्रा ऑवर में अपने क्षेत्र की समस्याएं उठाने का मौका दिया। अपनी बात कहने का मौका देने के लिए हम आपके प्रति कृतज्ञ हैं कि देर शाम तक ही सही, हमें अपने क्षेत्र की समस्याएं उठाने का मौका मिला। इस सबके कारण ही हमारे क्षेत्र की समस्याओं का निदान हो सका क्योंकि सरकार ने संज्ञान लेकर कुछ काम किया।

महोदय, मैं आपके प्रति, लोकसभा सचिवालय और सुरक्षाकर्मियों के प्रति भी आभार प्रकट करता हूं। मैं आपसे और सदन के सभी लोगों से कहना चाहता हूं कि माननीय प्रधान मंत्री जी के नेतृत्व में जब हमारे क्षेत्र की जनता 18वीं लोकसभा में हमें चुनकर भेजेगी तो जिस प्रकार से हम 17वीं लोकसभा में आर्टिकल 370, ट्रिपल तलाक, महिला आरक्षण और राम मंदिर के गवाह बने हैं, उसी तरह से हम 18वीं लोकसभा में सीता जी के भव्य मंदिर के गवाह बन सकें, हम सब इस सदन में उनके नाम पर संकल्प लें।

महोदय, मैं एक बार पुन: हमारे नेता आदरणीय नीतीश कुमार जी और माननीय प्रधान मंत्री जी के प्रति आभार व्यक्त करता हूं। मैं माननीय अध्यक्ष जी के प्रति स्पेशल आभार प्रकट करता हूं कि हम सबको इस सदन में सीखने और अपने क्षेत्र की आवाज बनकर बोलने का अवसर दिया।

महोदय, मैं मां सीता से यही प्रार्थना करूंगा कि यहां मौजूदा सभी सदस्य दोबारा आएं और इसी प्रकार लोकतंत्र के मंदिर में जनता की आवाज़ बनें और सरकार के माध्यम से अपने क्षेत्र की समस्याओं का निदान कराएं।

मैं आपका कृतज्ञ हूं और मैं आपके प्रति दोबारा धन्यवाद ज्ञापित करता हूं। बहुत-बहुत धन्यवाद।

(1625/SNT/MK)

SHRI MAGUNTA SREENIVASULU REDDY (ONGOLE): Thank you very much, Sir, for giving me some time to speak.

This is an auspicious occasion for me to speak on this subject. When I entered into the 12th Lok Sabha, I felt very happy. That was about 26 years back. It is the temple of democracy. There are 140 crore people in this country. There are only 543 Members in this House. I feel proud that I am one amongst them. I should be thankful to the God always. The 17th Lok Sabha is now coming to an end. There will be the 18th Lok Sabha soon. Everybody expects that after getting elected and coming here to this Parliament, we have to come again. For that, God's blessings are required.

You are a lovely Speaker, always smiling Speaker. I have not come across someone like you in my life. I have seen so many Speakers. We should

be proud of that also. You were not angry any time. You look so cheerful. You encouraged all the Members to speak here in this House. That is a grateful thing.

Sir, I must appreciate our hon. Prime Minister how he has conducted affairs and he has actually brought India into the world map during the COVID-19 period. People should always remember it. Everybody praises India because our hon. Prime Minister has done so much of work during the COVID-19 period. But some Members used to say that due to COVID-19 two years were lost, that they have lost MPLADS also. Their feeling is why do you not extend the 17th Lok Sabha by another two years. You may have to bring some new legislation for this. We have to look into how we can recover lost things.

Sir, it is a grateful event. To tell you frankly, our Parliament staff, especially, security staff and marshals, and everybody were all cooperative. We have worked like a family in this Parliament. The greatest opportunity for this 17th Lok Sabha's Members is the shift from old Parliament to new Parliament. Nobody will have this kind of an experience later because everybody has to continue from here in this new Lok Sabha.

Sir, there is no Central Hall here. That is the experience we had there earlier. I request you once again to create a Central Hall here. Otherwise, people are not connecting themselves. We have to call in the morning and ask them that at what time we should meet in Rajya Sabha canteen or Lok Sabha canteen. So, the feeling of everybody is that a Central Hall has to be created. In these five years of Lok Sabha period, the Government has brought a lot of valuable Bills also. I must thank our hon. Prime Minister for that. He has done a wonderful thing. My leader also, Y.S. Jagan Mohan Reddy garu always used to say that we have got an excellent Prime Minister for our country. Then, there is Ayodhya Rama Temple. People from South, everybody is saying that Modi ji has created a wonderful Rama Temple. People have started visiting the temple also.

Sir, it was a good experience in the 17th Lok Sabha under your Speakership. I cannot forget this in my lifetime. I actually compliment my colleagues and everybody. When we used to meet outside the Parliament also generally, like a family we used to celebrate very happily everything.

With God's blessings and with your affection, everybody should come back to the 18th Lok Sabha. This is my only prayer to the God.

Thank you, Sir.

**श्री वीरेन्द्र सिंह (बलिया):** अध्यक्ष महोदय, यह संसद की अंतिम बैठक है। भारत सरकार के माननीय प्रधान मंत्री जी ने जो फैसला किया है, उसके लिए मैं उनकी सरकार को और उनको प्रणाम करता हूं। उन्होंने चौधरी चरण सिंह जी को भारत रत्न दिया है। वे एक किसान नेता थे। स्वामीनाथन, जिन्होंने भारत को कृषि क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाया, उनको भी 'भारत रत्न' दिया है। मैं उनको भी प्रणाम करता हूं। आज मुझे पिछली संसद के मेरे साथी मुलायम सिंह जी याद आ रहे हैं।

(1630/SJN/AK)

उन्होंने पिछले सत्र में कहा था कि मोदी जी को पुनः प्रधानमंत्री बनाया जाना चाहिए। अगर आज वह संसद में होते, तो वे पुनः इस बात को दोहराते कि मोदी जी को पुनः इस देश का प्रधानमंत्री बनाया जाना चाहिए। वह संसद में भले ही नहीं हैं, लेकिन स्वर्ग से माननीय मुलायम सिंह जी कहते होंगे कि भारत का प्रधानमंत्री पुनः मोदी जी को इसलिए बनाया जाना चाहिए, क्योंकि चौधरी चरण सिंह साहब जी किसान नेता थे, मुलायम सिंह जी जिनके शिष्य थे, उनको 'भारत रत्न' दिया गया है।

स्वामीनाथन जी ने कृषि के क्षेत्र में भारत को आत्मनिर्भर बनाया था, उनको भी 'भारत रत्न' दिया जा रहा है। इसलिए मैं प्रधानमंत्री जी और उनकी सरकार को प्रणाम करता हूं। मैं अपने साथी मुलायम सिंह जी को भी बहुत-बहुत बधाई देता हूं। वह दिवंगत हो गए, लेकिन वे स्वर्ग से भी यह पुकार कर रहे हैं कि मोदी जी को पुनः इस देश का प्रधानमंत्री बनना चाहिए।

**श्री बी. बी. पाटील (जहीराबाद) :** अध्यक्ष महोदय, 17वीं लोक सभा के आखिरी दिन के अवसर पर मैं सबसे पहले हमारे आदरणीय भूतपूर्व मुख्यमंत्री के. चन्द्रशेखर राव साहब को धन्यवाद देना चाहता हूं। उसी के साथ ही साथ मैं माननीय प्रधानमंत्री जी, केन्द्र सरकार के सभी मंत्रिगण और सभी मेंबर्स को भी धन्यवाद देना चाहता हूं।

पिछले पांच साल के कार्यकाल में हम सब लोगों ने मिलकर कई ऐतिहासिक काम किए हैं। 17वीं लोक सभा एक यादगार लोक सभा होगी और हम इसको याद रखेंगे। आने वाले दिनों में इससे भी अच्छे काम लोक सभा में होंगे, मैं ऐसी उम्मीद भी रखता हूं।

अध्यक्ष महोदय, इस पांच साल के कार्यकाल में आपने सभी लोगों को अच्छी तरह से काम करने का मौका दिया है। जितने भी नए मेंबर्स थे, महिला मेंबर्स थीं, उन सभी लोगों को शून्य काल में 12-12 बजे तक काम करने के लिए एवं उनके संसदीय क्षेत्रों के सवालों को उठाने में मदद की है, इसलिए मैं खासकर से अध्यक्ष महोदय को धन्यवाद देता हूं।

पिछले पांच सालों में राज्य सरकार को केन्द्र सरकार की तरफ से बहुत सारी मदद मिली है, इसलिए मैं एक और बार केन्द्र सरकार के सभी मंत्रियों और माननीय प्रधानमंत्री साहब को धन्यवाद देना चाहता हूं।

**श्री गिरीश चन्द्र (नगीना) :** माननीय अध्यक्ष जी, आपने इस लोकतंत्र के मंदिर में एवं 17वीं लोक सभा के अंतिम दिन में मुझे बोलने का मौका दिया, उसके लिए मैं आपका आभार व्यक्त करना चाहता हूं।

माननीय अध्यक्ष जी, मुझे बहुजन समाज पार्टी की राष्ट्रीय अध्यक्ष आदरणीय बहन जी के आशीर्वाद से यहां आने का मौका मिला है। मेरी नगीना लोक सभा (उत्तर प्रदेश) के मतदाताओं के आशीर्वाद से मुझे इस लोकतंत्र के मंदिर में आने का मौका मिला है। मैं सबसे पहले इस देश के ओजस्वी प्रधानमंत्री जी का भी आभार व्यक्त करना चाहता हूं, जिन्होंने इस देश के लिए अच्छे कदम उठाकर इस देश को आगे बढ़ाने में अपना योगदान दिया है।

सभी आदरणीय मंत्रिगण और सभी दलों के जो फ्लोर लीडर्स हैं, मैं उन सबका भी आभार व्यक्त करना चाहता हूं। हमारे जो सभी माननीय सांसदगण हैं, मैं उनका भी आभार व्यक्त करना चाहता हूं।

माननीय अध्यक्ष जी, आपके नेतृत्व में जिस तरीके से हम जैसे नए सदस्य को अगर शून्य काल में बोलने का समय नहीं मिला, तो हमने आपसे रिक्वेस्ट की और आपने हम लोगों को अपने क्षेत्र की जनता की समस्याओं और विकास के मुद्दों को उठाने के लिए रात के 11 या 12 बजे भी मौका दिया है। आपका जो नेतृत्व था, पूरे सदन को चलाने में आपकी अहम भूमिका रही है। अगर पक्ष और विपक्ष में कहीं तल्खी है, तो आपके सौम्य व्यवहार ने उसको शांत कराकर सदन की प्रक्रिया को चलाने में अपना योगदान दिया है, उसके लिए मैं आपका आभार व्यक्त करना चाहता हूं।

महोदय, मैं आपके माध्यम से यह कहना चाहता हूं कि आज जो साथी यहां से जा रहे हैं, मैं आज उनको बधाई देता हूं कि आप लोग अपने क्षेत्रों में जाइए और आप पुनः 18वीं लोक सभा में जीतकर आएंगे। ऐसा मैं चाहता हूं। आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

**श्री पिनाकी मिश्रा (पुरी) :** माननीय अध्यक्ष जी, मेरे ख्याल से इस हाउस के सभी मेंबर्स एक ही सेंटीमेंट व्यक्त करना चाहेंगे कि आपने अपने नेतृत्व में 17वीं लोक सभा में सभी मेंबर्स को अपना मत रखने के लिए बहुत सहयोग और मौका दिया है। मैं विशेष रूप से मेरे नेता श्री नवीन पटनायक जी को धन्यवाद अर्पण करना चाहता हूं, क्योंकि उनकी वजह से आज बीजू जनता दल के सारे साथी यहां पर हैं। मेरे साथी अनुभव मोहंती जी ने पहले ही आपको धन्यवाद दिया है।

यहां पर सरकार की तरफ से आदरणीय राजनाथ सिंह जी और आदरणीय अमित शााह जी बैठे हुए हैं। उन्होंने माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में यहां पर सभी सांसदों को जितनी सुविधाएं देने का उद्यम किया है, उसके लिए मैं विशेष रूप से सत्ताधारी पक्ष को धन्यवाद देना चाहता हूं। इस संसद में कोई भी सांसद कम से कम यह तो नहीं कह सकता है कि सरकार की तरफ से सुविधाओं की कमी हुई है। इसलिए मैं विशेष रूप से सरकार को धन्यवाद देता हूं।

एक और बार सभी सांसदों को श्री नवीन पटनायक जी और बीजू जनता दल की तरफ से मेरा अभिनंदन है। हम आशा करते हैं कि निर्वाचन होंगे, निर्वाचन में लड़ाई अच्छी होगी। बहुत से लोग चुनकर आएंगे। कुछ लोग रह जाएंगे, वे फिर से चुनकर आएंगे। आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

(1635/SPS/UB)

**माननीय अध्यक्ष :** क्या और कोई माननीय सदस्य बोलने के लिए बचे हैं?

**कुंवर दानिश अली (अमरोहा) :** अध्यक्ष महोदय, धन्यवाद। आज इस 17वीं लोक सभा के अंतिम दिन हम सब लोग यहां विदाई के लिए इकट्ठे हैं। 17वीं लोक सभा में जहां सरकार ने अपने एजेंडे और बिल्स पास किए, वहीं आपके नेतृत्व में ज़ीरो आवर बहुत पॉपुलर हुआ। आपने सभी को जीरो आवर में अपने-अपने मुद्दे उठाने का मौका दिया। मैं अपने क्षेत्र की जनता, अमरोहा की जनता, जिनके आशीर्वाद से मैं यहां पर आया हूं, धन्यवाद देता हूं। यहां पर जितने हमारे कुलीग्स हैं, चाहे वे सत्ता पक्ष के हों, चाहे विपक्ष के हों, एक बात हमारे वरिष्ठ सांसद कह रहे थे कि इस पूरे पांच साल के टेन्योर में एक कमी रही है। इसमें दो साल कोविड के दौरान निकल गए और अब हम नए सदन में आए हैं तो सेंट्रल हॉल की वाकई आवश्यकता महसूस होती है। कई बार यह होता है कि राज्य सभा वाले तो छोड़िए, इधर से उधर वालों से भी कई-कई दिन हो जाते हैं, लेकिन मुलाकात नहीं होती है।

अध्यक्ष महोदय, मैं आपका धन्यवाद करते हुए ऊपर वाले से यही दुआ करता हूं कि जिस मकसद के लिए यह देश आजाद हुआ, हमारे संविधान के निर्माताओं ने जो संविधान बनाया, यह लोकतंत्र मजबूत रहे, जिंदा रहे, आने वाले वक्त में लोकतंत्र जिंदा रहे। इसी आशा के साथ मैं सबको एक बार फिर से धन्यवाद देता हूं।

**श्री हाजी फजलुर रहमान (सहारनपुर) :** अध्यक्ष महोदय, शुक्रिया। आपने मुझे 17वीं लोक सभा के आखिरी सदन में अंतिम दिन बोलने का मौका दिया। मैं इसलिए भी शुक्रिया अदा करता हूं कि मेरे जैसे न्यू कमर जब चुनकर आए तो आपके व्यवहार के कारण यह भी महसूस नहीं हो पाया कि हम फर्स्ट टाइम चुनकर आए हैं। इसके लिए हम आपका बहुत ज्यादा आभार व्यक्त करते हैं और उम्मीद करते हैं कि आपने जिस तरीके से न्यू कमर्स को बार-बार बोलने का मौका दिया, यहां तक सदन को रात के 12 बजे तक चलाया और सब लोगों को मौका मिला। खास तौर से कोविड के दौरान जिस तरीके से आपने सदन को चलाया, वह भी काबिल-ए-तारीफ है। आपके व्यवहार को देखकर तो ऐसा लगता है कि पार्लियामेंट की हिस्ट्री में एज ए स्पीकर सब लोग आपको याद रखेंगे। मैं इसी से मुताल्लिक एक शेर कहना चाहता हूं और आपकी नजर करना चाहता हूं।

हज़ारों साल नर्गिस अपनी बे-नूरी पे रोती है,
बड़ी मुश्किल से होता है चमन में दीदावर पैदा।

**श्री भर्तृहरि महताब (कटक) :** सर, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। आज इस 17वीं लोक सभा का अंतिम दिन है, अंतिम क्षण है। जैसे परीक्षा में जाने से पहले बच्चों के बीच स्कूल में हो या कॉलेज में हो, एक एंग्जायटी रहती है कि परीक्षा में क्या होगा और अगली श्रेणी में हम सब इकट्ठा होंगे या नहीं। अभी यही माहौल यहां बना हुआ है।

मैं आपको विशेष स्तर पर धन्यवाद देना चाहता हूं, क्योंकि आज हमारी पार्टी की एक बुजुर्ग महिला प्रमिला बिसाई, जो अस्का लोक सभा क्षेत्र से चुनाव लड़कर जीती थीं। वह सेल्फ हेल्फ ग्रुप चलाती हैं। हमारे मुख्य मंत्री नवीन जी ने उनको सेलेक्ट किया था। वह लोक सभा चुनाव लड़कर यहां आईं। उनकी यह दिक्कत थी कि वह यहां पर किस भाषा में बोलें। आपने खुद अपने चैम्बर में उनको बुलाया और कहा कि ओडिया भाषा में जो भी आपको बोलना है, आप बोलिए, मैं आपको पर्याप्त समय दूंगा।

(1640/MM/SRG)

यह जो साहस आपने दिखाया और उनको आपने जो साहस दिया, यह सबसे बड़ी बात है। मैं वहां खड़ा था। जब वे निकलकर यहां आईं और बोलीं कि स्पीकर साहब ने तो बोलने के लिए बोल दिया है, लेकिन मैं क्या बोलूं? मैंने कहा कि आपकी सेल्फ हेल्प ग्रुप के बारे में जो भी बात है, वही कहिए। उन्होंने वही कहा। वह बार-बार यही कहती रहीं कि मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि इतने बड़े सदन में मैं खड़े होकर बोल पाऊंगी। मैं अपनी महिलाओं को प्रेरित करने के लिए थोड़ा भाषण दे देती हूं। इस तरह की प्रेरणा आपने दी है। 17वीं लोक सभा में, मुझे जितनी जानकारी है, शायद सबसे ज्यादा नये मैम्बर चुनकर आए हैं। करीब 300 नये मैम्बर इस 17वीं लोक सभा में आए हैं। किसी को भी यह अहसास नहीं हुआ कि हम नये चुनकर आए हैं और हम कैसे अपने लोगों की बात रखेंगे और क्या कहेंगे। इसलिए मैं आपको बहुत-बहुत धन्यवाद देना चाहता हूं कि कई ऐतिहासिक चीजें इस 17वीं लोक सभा में हुई हैं। जैसे कहा जाता है कि हर एक दिन इतिहास के पन्ने में जुड़ जाता है। उस हिसाब से `History is in the making.' 17वीं लोक सभा में आपकी अध्यक्षता में कई इतिहास के पन्ने जुड़े हैं जो हमारे देश को और भव्य बनाएगा।

**श्री मलूक नागर (बिजनौर):** अध्यक्ष जी, मैं आपका आभारी हूं कि आपने मुझे बोलने का मौका दिया। मैं एक ही बात कहूंगा कि आपकी लीडरशिप में इतना काम हुआ कि कांस्टिट्युएंट असेंबली के बाद वर्ष 1952 में जो पहली लोक सभा थी, उसमें 677 सीटिंग्स हुईं थीं और 17वीं लोक सभा में 300 के करीब हुई हैं, लेकिन काम आपने उससे भी ज्यादा किया है। सभी ने मिल-जुलकर काम किया है। आपने मुझे बोलने का मौका दिया, बहुत-बहुत धन्यवाद।

**माननीय अध्यक्ष :** श्रीमती नवनीत रवि राणा। आप भी निर्दलीय सदस्यों की तरफ से बोल लीजिए।

**श्रीमती नवनीत रवि राणा (अमरावती):** महोदय, दिल में बटरफ्लाईज़ के जैसा फील हो रहा है कि आज आखिरी दिन है और सभी के दिलों में एक अलग सी धुक-धुक है। मैं सभागृह के बारे में और आपके बारे में जरूर कहना चाहूंगी कि इस पार्लियामेंट में आने के बाद जब पहले दिन हम बोलने की तैयारी कर भी नहीं रहे थे, तब कई सीनियर लीडर्स के आजू-बाजू बैठकर

सुनने की कोशिश कर रहे थे तो उन्होंने कहा कि आप निर्दलीय हैं और पहली बार है तो आप लिखकर अपना नाम दीजिए। तब हमने शुरू किया। लेकिन इस पार्लियामेंट ने और आपने हम लोगों को यह महसूस नहीं होने दिया कि हम पहली बार पार्लियामेंट में आए हैं। अपने क्षेत्र के बारे में बहुत अलग तरीके से और मेरे क्षेत्र की सभी चीजें, जिनकी मेरे क्षेत्र को जरूरत थी, वह सब बहुत अच्छे तरीके से हमने रखीं। जितने भी सीनियर लीडर्स यहां पर हैं, हमारे जैसे जितने भी पहली बार आए पार्लियामेंटेरियंस हैं, हमने बहुत कुछ सीखा और पांच वर्षों में अलग-अलग तरीकों से अपने-अपने राज्य में हमने संघर्ष भी किया। अपने राज्य और क्षेत्र को आगे ले जाने के बारे में बहुत कुछ सीखा। स्पीकर साहब, आपका, हमारे अमित शाह जी का, हमारे देश के प्रधान मंत्री जी का और सभी ग्रेट लीडर्स, जितने भी यहां बैठे हैं, हमारा सौभाग्य है कि उनके साथ यह पार्लियामेंट हम लोगों ने शेयर किया। आप लोगों का आशीर्वाद है और मेरे क्षेत्र अमरावती के लोगों का आशीर्वाद है कि इस पार्लियामेंट में आकर उनकी सेवा में हमने पूरे पांच साल दिए। आप लोगों का आशीर्वाद रहे तो हम आने वाले समय में और ताकत से मैदान में काम करके हम उनको और सेवा दे सकेंगे। धन्यवाद।

SHRI ADHIR RANJAN CHOWDHURY (BAHARAMPUR): Hon. Speaker Sir, Respected Prime Minister, Council of Ministers, UPA Chairperson and my leader Madam Sonia Gandhi, my friends and colleagues: सर, बहुत कुछ बोलने का दिल चाहता है, लेकिन बोलना क्या है, यह भी सोचता हूं। क्योंकि 17वीं लोक सभा के आखिरी चरण पर हम पहुंच चुके हैं।

(1645/YSH/RCP)

पता नहीं पांच साल कैसे गुजर गए, समय और ज्वार किसी का इंतजार नहीं करते हैं। हमने बहुत सारा तजुर्बा हासिल भी किया है और दिल कहना चाहता है कि:

> “जिंदगी में कितने दोस्त आए और कितने बिखर गए, कोई दो रोज के लिए आया तो किसी ने दो कदम चलते ही साँस भर लिया, पर जिंदगी का दूसरा नाम है, दरिया इसलिए बस बहते रहेंगे, चाहे रास्तों पर फूल गिरें या पत्थर।”

The coming to the close of the current Winter Session, which is the last of the Seventeenth Lok Sabha, marks yet an eventful milestone in our Parliamentary history. As witnessed on several occasions in the past, the current Lok Sabha too has had its share of tumultuous and also epoch-making events. We have witnessed the inauguration, opening and shifting of the venue of our Parliamentary business to the new Parliament House from the iconic Parliament House Building which has now been re-named as Samvidhan Sadan. We have got accustomed, or some old timers like

me are still in the process of getting accustomed, to the environs of the new Parliament House. We have commenced the journey of our Parliament from this new Parliament House from 19th September, 2023 onwards.

I would like to recall at this juncture that it was on 19th June, 2019, that is two days following the commencement of the first Session of the current Lok Sabha that Shri Om Birla was elected as the Speaker, Lok Sabha. Right from the day of assuming Office, Shri Birla has been steadfastly taking, and is continuing to take a number of initiatives for smoothening and improving the Parliamentary practices and processes, and providing better amenities and facilities to the hon. Members be it accommodation, medical facilities, transport, or appropriate support mechanism for discharging one's Parliamentary duties.

प्राइम मिनिस्टर साहब, आप उस समय नहीं थे, लेकिन मैंने आपका जिक्र किया था। मैं आपको रिस्पेक्टेड प्राइम मिनिस्टर बोल चुका हूँ। Being the Chairperson of the Public Accounts Committee, I am particularly grateful to the Speaker for his leadership and guidance in holding the centennial celebrations of the PAC on a grand scale in December, 2021. With a two-day Conference of the Chairpersons of PACs of the State and Union Territory Legislatures, where the attendees included Presiding Officers of various Legislative Bodies – holding exhibitions in physical and digital formats and release of the Centenary Souvenir on the "100 Year Journey of the PAC" by the President of India in the Central Hall of Samvidhan Sadan – the event was truly epoch making in the history of the Indian Parliament and its Committees.

While we have discussed, debated and voted upon a number of matters of public importance, we have also had a fair share of adjournments and loss of business time of the House. Those holding alternate or different views tried to get their points across, which ultimately led to disruptions. This is a part and parcel of our democratic process. Debate and discussion are the hallmarks of our Parliamentary system, and

adopting even the remotest method of browbeating or stifling those holding alternate views on policy matters and issues is best avoided.

(1650/PS/RAJ)

Despite the pulls and pressures of the times, the hon. Speaker has always maintained his composure, accommodated or tried to accommodate all sections of the House in expressing their viewpoints, and conducted the proceedings of the House with diligence and dignity.

Hon. Speaker, Sir, in the last 14 Sessions of the current Lok Sabha, which will soon come to a close, we have had a good share of events of immense concern to the people and the nation as a whole as well as those of significance. The Opposition in the House played its role responsibly in raising and debating on issues of immense public interest and concern. To recall, such matters that we raised and debated on included the fall out of COVID pandemic on the common people in particular and the Government's response to the situation, threat posed to our nation's security with the aggression and hostility of our neighbouring countries, problems posed by pollution, rising levels of unemployment and jobless growth, and the effect of increasing inflationary pressures on the lives of common people.

In the previous Session, that is the Fourteenth Session, we witnessed an unfortunate incident of security breach in the Parliament House which obviously is not a good sign and does not augur well. I can see and understand that remedial measures are being taken. With the augmenting of the security apparatus, I am sure that we will not be witnessing such incidents or face any form of security threat in future.

In statistical terms, the 17th Lok Sabha has been very productive with a very significant number of legislations passed, questions posed, matters of public importance raised during the Zero Hour and under Rule 377, and discussions held on matters of public importance. The legislations enacted by us in the current Lok Sabha include the Constitution (One Hundred and Twenty-Eighth Amendment) Bill, 2023 providing for reservation of seats to women in the Lok Sabha and other Legislative Assemblies. Yet, the work

pertaining to empowerment needs to be carried forward as social classes cutting across gender, and the weak and deprived, too deserve a chance for betterment. Also, the process of appropriately and elaborately debating and discussing legislations that have a bearing on the lives of the common people at large cannot and should not be undermined in any way.

Hon. Speaker, Sir, as a responsible Opposition, my Party has in the course of the last few years played its due role meaningfully. सर, मैं दूर-दराज गांव का एक नुमाइंदा हूं। मेरी नेत्री मैडम सोनिया गांधी जी ने मुझे हिन्दुस्तान के नेशनल पार्टी, कांग्रेस का सदन में अगुवाई करने का मौका दिया है, इसके लिए मैं इनके प्रति आभारी हूं और आप सब के प्रति भी आभारी हूं। We have always endeavoured to strengthen our parliamentary system of governance and will continue to do so.

The glory associated with India's freedom struggle is well recorded and is a remarkable chapter in world history. My Party has always stood and fought for preserving, protecting and upholding our hard-earned freedom and democratic rights, and we always continue to do so.

I would at this point like to place on record my appreciation for the immense amount of hard work and labour that the Secretariat staff, who work under the administrative control of the Secretary General, including the Legislative Staff, Reporters, Interpreters and the Security Personnel have put in the last few years of the current Lok Sabha and ensured that the sessions of the House were held with precision and perfection.

As the Leader of the largest Opposition Party in the House, I would take this opportunity to express my thanks and gratitude to the hon. Speaker for his help and support. As I mentioned earlier, the 17$^{th}$ Lok Sabha has been noteworthy and eventful in many ways and will be remembered for its many firsts.

Hon. Speaker, Sir, I wish to conclude by wishing my colleagues in the House the very best for the coming times. Thank you, Sir.

(1655/KN/SMN)

**माननीय अध्यक्ष :** माननीय प्रधान मंत्री जी।

1655 बजे

**प्रधान मंत्री (श्री नरेन्द्र मोदी):** आदरणीय अध्यक्ष जी, आज का यह दिवस लोकतंत्र की एक महान परंपरा का महत्वपूर्ण दिवस है। 17वीं लोक सभा ने 5 वर्ष देश सेवा में जिस प्रकार से अनेक विध महत्वपूर्ण निर्णय किए, अनेक चुनौतियों को सब ने अपने सामर्थ्य से देश को उचित दिशा देने का प्रयास किया। एक प्रकार से आज का दिवस हम सब की उन 5 वर्ष की वैचारिक यात्रा का, राष्ट्र को समर्पित उस समय का, देश को फिर से एक बार अपने संकल्पों को राष्ट्र के चरणों में समर्पित करने का यह अवसर है। ये 5 वर्ष देश में रिफॉर्म, परफॉर्म एंड ट्रांसफॉर्म के हैं। यह बहुत रेयर होता है कि रिफॉर्म भी हो, परफॉर्म भी हो और हम ट्रांसफॉर्म होता अपनी आंखों के सामने देख पाते हों, एक नया विश्वास भरता हो। यह अपने आप में 17वीं लोक सभा से आज देश अनुभव कर रहा है। मुझे पक्का विश्वास है कि देश 17वीं लोक सभा को जरूर आशीर्वाद देता रहेगा। इन सारी प्रक्रियाओं में सदन के सभी माननीय सदस्यों का बहुत महत्वपूर्ण रोल रहा है, महत्वपूर्ण भूमिका रही है। यह समय है कि मैं सभी माननीय सांसदों का इस गृह के नेता के नाते भी और आप सब के एक साथी के नाते भी आप सब का अभिनंदन करता हूं।

विशेष रूप से, आदरणीय अध्यक्ष जी मैं आपके प्रति भी हृदय से बहुत-बहुत आभार व्यक्त करता हूं। पांचों वर्ष, कभी-कभी सुमित्रा जी मुक्त हास्य करती थीं, लेकिन आप हर पल, आपका चेहरा मुस्कान से भरा रहता था। यहां कुछ भी हो जाए, लेकिन कभी भी उस मुस्कान में कोई कमी नहीं आई। अनेक विध परिस्थितियों में आपने बहुत ही संतुलित भाव से और सच्चे अर्थ में निष्पक्ष भाव से इस सदन का मार्गदर्शन किया, सदन का नेतृत्व किया, मैं इसके लिए भी आपकी भूरि-भूरि प्रशंसा करता हूं। आक्रोश के पल भी आए, आरोप के भी पल आए, लेकिन आपने पूरे धैर्य के साथ इन सभी स्थितियों को संभालते हुए और एक सूझ-बूझ के साथ आपने सदन को चलाया, हम सब का मार्गदर्शन किया, इसके लिए भी मैं आपका आभारी हूं।

(1700/VB/SM)

आदरणीय अध्यक्ष जी, इन 5 वर्षों में इस सदी का सबसे बड़ा संकट पूरी मानव जाति ने झेला। कौन बचेगा, कौन बच पाएगा, कोई किसी को बचा सकता है या नहीं बचा सकता है, वह ऐसी अवस्था थी। ऐसे में, सदन में आना, अपना घर छोड़कर निकलना, यह भी संकट का कार्य था। इसके बावजूद, जो भी नयी व्यवस्थाएं आपको करनी पड़ी, आपने उनको किया। आपने देश के काम को रुकने नहीं दिया। सदन की गरिमा भी बनी रहे और देश के आवश्यक कामों को जो गति देनी चाहिए, वह गति भी बनी रहे और उस काम में सदन की जो भूमिका है, वह रत्ती भर भी पीछे न रहे, आपने इसे बड़ी कुशलता के साथ सम्भाला। इसे दुनिया के सामने आपने एक उदाहरण के रूप में रखा।

आदरणीय अध्यक्ष जी, मैं माननीय सांसदों का भी, इस बात के लिए आभार व्यक्त करना चाहता हूँ कि उस कालखंड में देश की आवश्यकताओं को देखते हुए, सांसद निधि छोड़ने का प्रस्ताव माननीय सांसदों के सामने रखा। एक पल का विलम्ब किये बिना, सभी माननीय सांसदों ने सांसद निधि छोड़ दी।

इतना ही नहीं, देशवासियों को एक पाज़िटिव मैसेज देने के लिए अपने आचरण से समाज को एक विश्वास देने के लिए सांसदों ने अपनी सैलरी में से 30 प्रतिशत की कटौती का निर्णय सबने स्वयं किया। इससे देश को भी विश्वास हुआ कि ये सबसे पहले छोड़ने वाले लोग हैं।

हम सभी सांसद बिना कारण साल में दो बार हिन्दुस्तान की मीडिया के किसी न किसी कोने में गाली खाते रहते थे कि इन सांसदों को इतना मिलता है और ये लोग कैंटीन में इतने में खाते हैं। बाहर इतने में मिलता है और कैंटीन में इतने में मिलता है। यानी बाल नोंच लिये जाते थे। आपने निर्णय किया, सबके लिए कैंटीन में समान रेट होंगे। इसके लिए सांसदों ने कभी विरोध नहीं किया, कोई शिकायत भी नहीं की। बिना कारण सांसदों की फजीहत करने वाले लोग मजे लेते थे, उससे भी आपने हम सबको बचा लिया। इसके लिए भी मैं आपका आभार व्यक्त करता हूँ।

आदरणीय अध्यक्ष जी, यह बात सही है कि कई लोक सभा के सदस्य, चाहे वे 15वीं लोक सभा, 16वीं लोक सभा या 17वीं लोक सभा के सदस्य हों, संसद का नया भवन होना चाहिए, इसकी चर्चा सबने की, सामूहिक रूप से की, एक स्वर से की। लेकिन इसका निर्णय नहीं हो पाता था। यह आपका नेतृत्व है, जिसने निर्णय किया, चीजों को आगे बढ़ाया, सरकार के साथ अनेक मीटिंग्स की गईं और उसी का परिणाम है कि आज देश को यह नया संसद भवन प्राप्त हुआ है।

आदरणीय अध्यक्ष जी, संसद के नये भवन में, एक विरासत अंश और आज़ादी की जो पहली पल थी, उसको जीवंत रखने का हमेशा हमारे मार्गदर्शक के रूप में सैंगोल को यहाँ स्थापित करने का काम हुआ। अब प्रतिवर्ष इसे सेरिमोनियल इवेंट का हिस्सा बनाने का एक बहुत बड़ा काम आपके नेतृत्व में हुआ है।

(1705/CS/RP)

जो भारत की आने वाली पीढ़ियों को हमेशा-हमेशा आजादी के उस प्रथम पल के साथ जोड़कर रखेगा। आजादी का वह पल क्यों था, हमें वह याद रहेगा तो देश को आगे ले जाने की वह प्रेरणा भी बनी रहेगी। उस पवित्र काम को आपने किया है।

महोदय, इस कालखंड में जी-20 की अध्यक्षता भारत को मिली। भारत को बहुत सम्मान मिला। देश के हर राज्य ने अपने-अपने तरीके से विश्व के सामने भारत का सामर्थ्य और अपने राज्य की पहचान बखूबी प्रस्तुत की, जिसका प्रभाव आज भी विश्व के मन पर है। उसके साथ आपके नेतृत्व में जी-20 की तरह पी-20 का सम्मेलन हुआ और विश्व के अनेक देशों के स्पीकर्स यहाँ आए और मदर ऑफ डेमोक्रेसी, भारत की इस महान परम्परा को लेकर, किस डेमोक्रेटिक वैल्यूज को लेकर सदियों से हम आगे बढ़े हैं, व्यवस्थाएं बदली होंगी, लेकिन भारत का डेमोक्रेटिक मन हमेशा बना रहा है। इस बात को आपने विश्व के स्पीकर्स के सामने बखूबी प्रस्तुत किया और भारत को लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं में भी एक प्रतिष्ठा प्राप्त कराने का काम आपके नेतृत्व में हुआ।

महोदय, मैं एक बात के लिए आपका विशेष अभिनन्दन करना चाहता हूँ। शायद हमारे सभी माननीय सांसदों का और मीडिया का भी उस तरफ ध्यान नहीं गया है। हम जिसे संविधान सदन कहते हैं, जो पुरानी संसद है, जिसमें महापुरुषों की जन्म जयंती के दिन उनकी प्रतिमा को पुष्प चढ़ाने के लिए हम लोग एकत्र होते हैं। वह एक 10 मिनट का इवेंट होता था और चले जाते थे। आपने देश भर में इन महापुरुषों के लिए वक्तव्य स्पर्धा, निबंध स्पर्धा का एक अभियान चलाया है। उसमें से जो बेस्ट ऑरेटर होते थे और बेस्ट एस्सेज होते थे, हर राज्य से दो-दो बालक उस दिन दिल्ली आते थे और उस महापुरुष की जन्म जयंती के समय, पुष्प वर्षा के समय वे वहाँ मौजूद रहते थे, देश के नेताओं के साथ और बाद में वे पूरा दिन वहाँ रहकर उस महापुरुष पर अपना व्याख्यान देते थे। वे दिल्ली के अन्य स्थानों पर भी जाते थे। वे संसद की गतिविधियों को समझते थे। यानी आपने यह निरन्तर प्रक्रिया चलाकर के देश के लाखों विद्यार्थियों को भारत की संसदीय परम्परा से जोड़ने का एक बहुत बड़ा काम किया है। यह परम्परा आपके खाते में रहेगी और आने वाले समय में हर कोई बड़े गौरव के साथ इस परम्परा को आगे बढ़ायेगा। मैं इसके लिए भी आपका अभिनन्दन करता हूँ।

महोदय, संसद की लाइब्रेरी, जिसको उपयोग करना चाहिए, वे कितना कर पाते थे, वह तो मैं नहीं कह सकता हूँ, लेकिन आपने उसके दरवाजे सामान्य व्यक्ति के लिए खोल दिए थे। ज्ञान का यह खजाना, परम्पराओं की विरासत, उसको आपने जन सामान्य के लिए खोलकर बहुत बड़ी सेवा की है। मैं इसके लिए भी आपका हृदय से अभिनन्दन करता हूँ। पेपरलेस पार्लियामेंट, डिजिटलाइजेशन, आधुनिक टेक्नोलॉजी हमारी व्यवस्था में कैसे बने, शुरू में कुछ

साथियों को दिक्कत रही, लेकिन अब सब इसके आदी हो गए हैं। मैं देखता हूँ कि जब यहाँ बैठते हैं तो कुछ न कुछ करते रहते हैं। यह अपने आपमें एक बहुत बड़ा काम आपने किया है।
(1710/IND/NKL)
आपने स्थायी व्यवस्थाएं निर्माण की हैं, इसके लिए मैं आपका बहुत आभार व्यक्त करता हूं।

आदरणीय अध्यक्ष जी, आपकी कुशलता और माननीय सांसदों की जागरुकता, मैं सबका संयुक्त प्रयास कह सकता हूं जिसके कारण 17वीं लोक सभा की प्रोडक्टिविटी करीब-करीब 97 परसेंट रही है। 97 परसेंट प्रोडक्टिविटी अपने आप में प्रसन्नता का विषय है, लेकिन मुझे विश्वास है कि आज जब हम 17वीं लोक सभा की समाप्ति की तरफ बढ़ रहे हैं तब एक संकल्प लेकर 18वीं लोक सभा प्रारम्भ होगी कि हमेशा शत् प्रतिशत से ज्यादा प्रोडक्टिव वाली हमारी कार्यवाही हो और उसमें भी सात सत्र 100 प्रतिशत से भी ज्यादा प्रोडक्टिविटी वाले हैं। मैंने देखा कि आपने रात-रात भर बैठ कर भी हर सांसद के मन की बात को सरकार के सामने लाने का भरपूर प्रयास किया। मैं इस सफलता के लिए सभी माननीय सांसदों का और सभी फ्लोर लीडर्स का भी हृदय से आभार और अभिनंदन व्यक्त करता हूं। 17वीं लोक सभा के पहले सत्र में दोनों सदनों ने 30 विधेयक पारित किए थे और यह अपने आप में रिकार्ड है। नए-नए बैंच मार्क 17वीं लोक सभा ने बनाए हैं। आजादी के 75 वर्ष पूरा होने का उत्सव, हम सबको कितना बड़ा सौभाग्य मिला है कि ऐसे अवसर पर हमारे सदन ने अत्यंत महत्वपूर्ण कामों का नेतृत्व किया, हर स्थान पर हुआ और शायद ही कोई ऐसा सांसद होगा, जिसने आजादी के 75 वर्ष को लोकोत्सव बनाने में अपने-अपने क्षेत्र में भूमिका अदा न की हो। यानी सचमुच में आजादी के 75 वर्ष को देश ने जी भर कर उत्सव से मनाया और उसमें हमारे माननीय सांसदों की और इस सदन की बहुत बड़ी भूमिका रही है। हमारे संविधान लागू होने के 75 वर्ष, यह भी अवसर इसी समय, इसी सदन को मिला है, हम सभी सांसदों को मिला है और संविधान की जो भी जिम्मेदारियां हैं, उनकी शुरूआत यहीं से होती है और उनके साथ जुड़ना अपने-आप में बहुत बड़ी प्रेरणा है।

आदरणीय अध्यक्ष जी, इस कार्यकाल में बहुत ही रिफार्म्स हुए और गेमचेंजर, 21वीं सदी के भारत की मजबूत नींव उन सारी बातों में नजर आती है। एक बड़े बदलाव की तरफ तेज गति से देश आगे बढ़ा है और इसमें भी सदन के सभी साथियों ने बहुत उत्तम मार्गदर्शन किया है और हिस्सेदारी जताई है। हम संतोष से कह सकते हैं कि हमारी अनेक पीढ़ियां जिन बातों का इंतजार करती थीं, ऐसे बहुत से काम इस 17वीं लोक सभा के माध्यम से पूरे हुए। पीढ़ियों का इंतजार खत्म हुआ। अनेक पीढ़ियों ने एक संविधान, जिसके लिए सपना देखा था, लेकिन हर पल उस संविधान में एक दरार दिखाई देती थी, एक खाई नजर आती थी। एक रुकावट चुभती थी, लेकिन इसी सदन ने आर्टिकल 370 हटाकर संविधान के पूर्ण रूप को, उसके पूर्ण प्रकाश के साथ उसका प्रगटीकरण हुआ। मैं मानता हूं जब संविधान के 75 वर्ष हुए, जिन-जिन महापुरुषों ने

संविधान को बनाया है, उनकी आत्मा जहां भी होगी, जरूर हमें आशीर्वाद देते होंगे, जो काम हमने पूरा किया है।

(1715/RV/VR)

जम्मू-कश्मीर के लोगों को सामाजिक न्याय से वंचित रखा गया था। आज हमें संतोष है कि सामाजिक न्याय का जो हमारा कमिटमेंट है, वह जम्मू-कश्मीर के हमारे भाई-बहनों को भी पहुंचाकर आज हम एक संतोष की अनुभूति कर रहे हैं।

आदरणीय अध्यक्ष जी, आतंकवाद नासूर बन गया था, देश के सीने पर गोलियां चलाता रहता था। माँ भारती की धरा आए दिन रक्तरंजित हो जाती थी। देश के अनेक विद्, होनहार लोग आतंकवाद की बलि चढ़ जाते थे। हमने आतंकवाद के विरुद्ध सख्त कानून बनाए, इसी सदन ने बनाए। मुझे पक्का विश्वास है कि उसके कारण जो लोग ऐसी समस्याओं से जूझते हैं, उनको एक बल मिला है, मानसिक रूप से उनका कॉन्फिडेंस बढ़ा है और भारत को पूर्ण रूप से आतंकवाद से मुक्ति का एक अहसास हो रहा है और वह सपना भी सिद्ध होकर रहेगा।

हम 75 सालों तक अंग्रेजों की दी हुई दंड संहिता में जीते रहे थे। हम देश को गर्व से कहेंगे, नयी पीढ़ी को कहेंगे, आप अपने पोते-पोती को गर्व से कह सकेंगे कि देश ने भले ही 75 साल दंड संहिता में जीया है, लेकिन अब आने वाली पीढ़ी न्याय संहिता में जीएगी और यही सच्चा लोकतंत्र है।

आदरणीय अध्यक्ष जी, मैं आपका एक और बात के लिए अभिनन्दन करना चाहूंगा कि नये सदन की भव्यता वगैरह तो है ही, लेकिन उसका प्रारम्भ एक ऐसे काम से हुआ है, जो भारत की मूलभूत मान्यताओं को बल देता है और वह नारी शक्ति वंदन अधिनियम है। जब भी इस नए सदन की चर्चा होगी तो नारी शक्ति वंदन अधिनियम का जिक्र होकर रहेगा। भले ही वह सत्र एक छोटा सत्र था, लेकिन दूरगामी निर्णय करने वाला सत्र था। इस नए सदन की पवित्रता का अहसास उसी पल शुरू हो गया था, जो हम लोगों को एक नयी शक्ति देने वाला है और उसी का परिणाम है कि आने वाले समय में जब बहुत बड़ी मात्रा में हमारी माताएं-बहनें बैठी होंगी, देश गौरव की अनुभूति करेगा।

तीन तलाक - कितने उतार-चढ़ाव से हमारी मुस्लिम बहनें इंतजार कर रही थीं। अदालतों ने उनके पक्ष में निर्णय दिए थे, लेकिन वह हक उनको प्राप्त नहीं हो रहा था, मजबूरियों के साथ गुजारा करना पड़ रहा था। कोई प्रकट रूप से कहे, कोई अप्रकट रूप से कहे, लेकिन तीन तलाक से मुक्ति का बहुत महत्वपूर्ण और नारी शक्ति के सम्मान का काम सत्रहवीं लोक सभा ने किया है। सभी माननीय सांसद, उनके विचार कुछ भी रहे हों, उनका निर्णय कुछ भी रहा हो, लेकिन कभी न कभी तो वे कहेंगे कि हाँ, इन बेटियों को न्याय देने का काम करते समय हम वहां मौजूद थे। पीढ़ियों से होता हुआ यह अन्याय हमने समाप्त किया और वे बहनें आज आशीर्वाद दे रही हैं।

आदरणीय अध्यक्ष जी, आने वाले 25 वर्ष हमारे देश के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। राजनीति की गहमागहमी अपनी जगह पर है, राजनीतिक क्षेत्र के लोगों की आशाएं-आकांक्षाएं अपनी जगह पर हैं, लेकिन देश की अपेक्षा, देश की आकांक्षा, देश का सपना, देश का संकल्प यह बन चुका है। ये 25 साल वे हैं, जिसमें देश इच्छित परिणाम प्राप्त करके रहेगा।

(1720/GG/SAN)

अध्यक्ष महोदय, सन् 1930 में जब महात्मा गांधी ने नमक के सत्याग्रह के लिए दांडी की यात्रा की थी, तब भी घोषणा होने के पहले लोगों को सामर्थ्य नज़र नहीं आया था। चाहे स्वदेशी आंदोलन हो, चाहे सत्याग्रह की परंपरा हो, चाहे नमक का सत्याग्रह हो, उस समय तो वे घटनाएं छोटी लगती थीं, लेकिन सन् 1947 तक, 25 साल के उस कालखण्ड ने देश के अंदर जज्बा पैदा कर दिया, हर व्यक्ति के दिल में वह जज्बा पैदा कर दिया था कि अब तो आज़ाद हो कर रहना है। मैं आज देख रहा हूँ कि देश में वह जज्बा पैदा हुआ है कि हर गली-मोहल्ले में, हर बच्चे के मुंह से निकला है कि 25 सालों में हम विकसित भारत बनाएंगे। इसलिए ये 25 साल मेरे देश की युवाशक्ति के अत्यंत महत्वपूर्ण कालखंड हैं। हम में से कोई ऐसा नहीं होगा, जो नहीं चाहता होगा कि 25 सालों में देश विकसित भारत न बने। हर किसी का सपना है, कुछ लोगों ने सपने को संकल्प बना लिया है। कुछ लोगों को शायद संकल्प बनाते देर हो जाएगी, लेकिन जुड़ना हरेक को होगा। जो जुड़ भी नहीं पाएंगे और जीवित होंगे, तो फल तो जरूर खाएंगे, यह मेरा विश्वास है।

आदरणीय अध्यक्ष जी, इन पांच वर्षों में युवाओं के लिए बहुत ही ऐतिहासिक कानून भी बने हैं। व्यवस्था में पारदर्शिता ला कर युवाओं को नए मौके दिए गए हैं। पेपर लीक जैसी समस्या हमारे युवाओं को चिंतित करती थी। हमने बहुत ही कठोर कानून बनाया है, ताकि उनके मन में जो सवालिया निशान है और व्यवस्था के प्रति उनका जो गुस्सा था, उसको एड्रेस करने का सभी माननीय सांसदों ने देश के युवाओं के मन के भाव को समझ कर बहुत ही महत्वपूर्ण निर्णय किया है।

आदरणीय अध्यक्ष जी, यह बात सही है कि कोई भी मानव जाति अनुसंधान के बिना आगे नहीं बढ़ सकती है। उसको नित्य परिवर्तन के लिए अनुसंधान अनिवार्य होते हैं और मानव जाति का लाखों सालों का इतिहास गवाह है कि हर काल में अनुसंधान होते गए हैं, जीवन बढ़ता चला गया है, जीवन का विस्तार होता गया है। इस सदन ने विधिवत रूप से कानूनी व्यवस्था खड़ी कर के अनुसंधान को प्रोत्साहन देने का बहुत बड़ा काम किया है। नेशनल रिसर्च फाउंडेशन, यह कानून आम तौर पर रोज़मर्रा की राजनीति की चर्चा का विषय बन नहीं पाता है, लेकिन इसके परिणाम बहुत दूरगामी होने वाले हैं। इतना बड़ा महत्वपूर्ण काम इस 17वीं लोक सभा ने किया है। मुझे पक्का विश्वास है कि देश की युवा शक्ति इस व्यवस्था के कारण दुनिया के रिसर्च का एक हब हमारा देश बन सकता है। हमारे देश के युवा का टैलेंट ऐसा है कि आज भी दुनिया की बहुत सी कंपनियां ऐसी हैं, जिनके इनोवेशन के काम आज भी भारत में हो रहे हैं। इसलिए देश बहुत बड़ा हब बनेगा, यह मेरा विश्वास है।

आदरणीय अध्यक्ष जी, 21वीं सदी में हमारी बेसिक नीडस पूरी तरह बदल रही है। कल तक जिसका कोई मूल्य नहीं था, कोई ध्यान नहीं था, वह आने वाले समय में बहुत अमूल्य बन चुका है। जैसे डेटा है। पूरी दुनिया में चर्चा है कि डेटा का सामर्थ्य क्या होता है। हमने डेटा प्रोटेक्शन बिल ला कर पूरी भावी पीढ़ी को सुरक्षित कर दिया है। एक नया शस्त्र हमने उनके हाथ में दिया है, जिसके आधार पर वह अपने भविष्य को बनाने के लिए इसका सही इस्तेमाल भी करेंगे। डिजीटल पर्सनल डेटा प्रोटेक्शन एक्ट हमारी 21वीं सदी की पीढ़ी को और दुनिया के लोगों को भी भारत के इस एक्ट के प्रति रुचि बनी हुई है। दुनिया के देश उसका अध्ययन कर रहे हैं और अपने-अपने यहां व्यवस्थानुकूल करने के लिए प्रयास कर रहे हैं।

(1725/MY/SNT)

डेटा का उपयोग कैसे हो, उसकी गाइडलाइंस भी उसमें है। अनेक प्रकार से प्रोटेक्शन का पूरा प्रबंध करते हुए, इसका सामर्थ्य कैसे आए, जिस डेटा को लोग आज गोल्ड माइन कहते हैं, न्यू ऑयल कहते हैं, मैं समझता हूं कि वह सामर्थ्य भारत को प्राप्त हो गया है। भारत की शक्ति इसलिए विशेष है, क्योंकि विविधताओं से भरा हुआ यह देश है। हमारे पास जिस प्रकार की जानकारी है, हमारे साथ जुडे हुए जो डेटा जेनरेट होते हैं, सिर्फ हमारे रेलवे पैसेंजर्स के डेटा कोई देख ले, यह दुनिया के लिए बहुत बड़ा संसाधन का विषय बन सकता है। उसकी ताकत को हमने पहचान करके इस कानूनी व्यवस्था को दिया है

आदरणीय अध्यक्ष जी, जल, थल, नभ – सदियों से इन क्षेत्रों की चर्चा चली है, लेकिन अब समुद्री शक्ति, स्पेस की शक्ति और साइबर की शक्ति, ऐसी तीनों शक्तियों का मुकाबला करने की आवश्यकता उठ खड़ी हुई है और विश्व जिस प्रकार के संकटों से गुजर रहा है, विश्व में जिस प्रकार की विचारें प्रभावित करने का प्रयास कर रही हैं तब इन क्षेत्रों में हमें सकारात्मक सामर्थ्य भी पैदा करना है और नकारात्मक शक्तियों से अपने-आप को और चुनौतियों को लेने का सामर्थ्य भी बनाना है। उसके लिए स्पेस से जुड़े आवश्यक रिफॉर्म्स बहुत अनिवार्य हैं। बहुत दूरगामी दृष्टि के साथ स्पेस रिफॉर्म का काम हमारे यहां हुआ है।

आदरणीय अध्यक्ष जी, देश ने जो आर्थिक रिफॉर्म्स किए हैं, उनमें 17वीं लोक सभा के सभी सांसदों की बहुत बड़ी भूमिका रही है। बीते वर्षों में हजारों कम्प्लाएन्सेस बेवजह और जनता-जर्नादन को ऐसी चीजों में उलझाए रखा, गवर्नेंस की एक ऐसी विकृत व्यवस्था विकसित हो गई, उससे मुक्ति दिलाने का बहुत बड़ा काम हमारे यहां हुआ है। इसके लिए भी इस सदन का मैं आभारी हूं। इस प्रकार के कम्प्लाएन्सेस के बोझ में सामान्य व्यक्ति तो दब जाता है। मैंने तो एक बार लालकिले से भी कहा था कि जब हम मिनिमम गवर्नमेंट और मैक्सिमम गवर्नेंस देते हैं, मैं दिल से मानता हूं कि लोगों की जिंदगी में से जितनी जल्द सरकार निकल जाए, उतना ही लोकतंत्र का सामर्थ्य बढ़ेगा। रोजमर्रा की जिंदगी में हर डगर पर एक सरकार टांग क्यों अड़ाए! हाँ, जो अभाव में हैं, उनके लिए सरकार हर पल मौजूद हो, लेकिन सरकार का प्रभाव उसकी जिंदगी को ही रूकावट बना दे, ऐसा लोकतंत्र नहीं हो सकता है। इसलिए, हमारा मकसद है,

सामान्य मानवी की जिंदगी से सरकार जितनी जल्दी हट जाए, कम से कम उसकी जिंदगी में सरकार का नाता रहे, वैसा समृद्ध लोकतंत्र दुनिया के सामने हमें आगे बढ़ाना चाहिए। हम उस सपने को पूरा करेंगे।

आदरणीय अध्यक्ष जी, कंपनीज़ एक्ट, लिमिटेड लायबिलिटी पार्टनरशिप एक्ट, 60 से अधिक गैर-जरूरी कानूनों को हमने हटाया है। ईज ऑफ डूइंग बिजनेस के लिए यह बहुत बड़ी आवश्यकता थी। अब देश को आगे बढ़ना है तो बहुत सारी रुकावटों से बाहर आना पड़ेगा।। हमारे कई कानून तो ऐसे थे, छोटी-छोटी कानूनों से जेल में भर दो, बस। यहाँ तक कि एक फैक्ट्री है और उसने शौचालय को छह में एक बार अगर वाइट वाश नहीं किया है तो उसके लिए जेल थी। वह कितनी बड़ी कंपनी का मालिक क्यों न हो, अब जो एक प्रकार से अपने आप को बड़े लिबरल कहते हैं, उन लोगों की आइडियोलॉजी और देश में एक तिमारशाही का जमाना, उन सारों से मुक्ति दिलाने का हमें भरोसा चाहिए। वह जरूर करेगा। आज लोगों के घरों में लिफ्ट होती है, सोसाइटी और फ्लैट वाले लोग अपने लिफ्ट का रिपेयर करते ही हैं। वे हर चीज कर लेते हैं। यह जो समाज और नागरिक पर भरोसा करने का काम है, बहुत तेजी से बढ़ाने का काम 17वीं लोक सभा ने किया है।

(1730/CP/AK)

जन विश्वास एक्ट, मैं समझता हूं कि 180 से ज्यादा प्रावधानों को डीक्रिमिनलाइज करने का काम किया है। छोटी-छोटी बात में जेल में डाल देना, डीक्रिमिनलाइज करके हमने नागरिक को ताकत दी है। वह इसी सदन ने किया है, यही माननीय सांसदों ने किया है। कोर्ट के चक्कर से जिंदगी बचाने के लिए बहुत महत्वूपर्ण काम, कोर्ट के बाहर विवादों से मुक्ति, उस दिशा में एक महत्वपूर्ण काम, मध्यस्थता कानून, उस दिशा में भी इन्हीं माननीय सांसदों ने बहुत बड़ी भूमिका अदा की है।

जो हमेशा हाशिए पर थे, किनारे पर थे, जिनको कोई पूछता नहीं था, सरकार होने का उनको एहसास हुआ है। हां, सरकार है, हम हैं। जब कोविड में मुफ्त इंजेक्शन मिलता था, उसको भरोसा होता था, चलिए, जान बच गई। सरकार होने का उसको एहसास होता है। यही तो सामान्य मानवी की जिंदगी में बहुत आवश्यक होता है। वह असहायता न अनुभव हो कि अब क्या होगा, यह स्थिति पैदा नहीं होनी चाहिए।

ट्रांसजेंडर समुदाय अपमानित महसूस करता था। जब बार-बार वह अपमानित होता था, तो उसके अन्दर भी विकृतियों की सम्भावनाएं बढ़ती रहती थीं और ऐसे विषयों से सब लोग दूर भागते थे। 17वीं लोक सभा के सभी माननीय सांसदों ने ट्रांसजेंडर्स के प्रति भी संवेदना जताई और उनकी बेहतरीन जिंदगी बनाई। आज दुनिया के अंदर, भारत ने ट्रांसजेंडर्स के लिए जो काम, निर्णय किए हैं, इनकी चर्चा है। इवेन हमारी माता-बहनों के लिए प्रेगनेंसी के लिए 26 वीक की डिलीवरी के समय की छुट्टी मिले तो दुनिया के समृद्ध देशों को भी आश्चर्य होता था। यानी ये प्रोग्रेसिव निर्णय यहीं पर हुए हैं, इसी 17वीं लोक सभा में हुए हैं। हमने ट्रांसजेंडर को एक पहचान दी है। अब तक करीब 16-17 हजार ट्रांसजेंडर्स को उनका आइडेंटिटी कार्ड दिया गया है, ताकि उनके जीवन को और सरल बना सकें। मैंने देखा है कि अब तो मुद्रा योजना से पैसे लेकर वह छोटा-मोटा बिजनेस करने लगी है, कमाने लगी है। हमने 'पद्म एवार्ड' ट्रांसजेंडर को दिया है। एक सम्मान की जिंदगी जीने के लिए दी है। सरकार से

जुड़ी अनेक योजनाओं का लाभ जो अब तक उनको मिलता नहीं था, मिलना प्रारम्भ हुआ है, सम्माननीय जिंदगी मिली है।

आदरणीय अध्यक्ष जी, बहुत विकट काल में हमारा समय गया, क्योंकि डेढ़-दो साल कोविड ने हमारे ऊपर बहुत बड़ा दबाव डाला, लेकिन उसके बावजूद भी 17वीं लोक सभा देश के लिए बहुत उपकारक रही है, बहुत अच्छे काम किए हैं। लेकिन, इस समय हमने कई साथियों को भी खो दिया। हो सकता है, अगर आज वे हमारे बीच होते तो इस विदाई समारोह में मौजूद होते, लेकिन बीच में ही कोविड के कारण हमें अपने बहुत होनहार साथियों को खोना पड़ा। उसका दु:ख हमेशा-हमेशा हमें रहेगा।

आदरणीय अध्यक्ष जी, 17वीं लोक सभा का यह अंतिम सत्र और अंतिम ऑवर ही समझ लीजिए, है। लोकतंत्र और भारत की यात्रा अनन्त है। यह देश किसी परपज के लिए है, उसका कोई लक्ष्य है, वह पूरी मानव जाति के लिए है। चाहे श्री अरविन्दो ने देखा हो, चाहे स्वामी विवेकानन्द जी ने देखा हो, लेकिन उन शब्दों में, उस विजन में सामर्थ्य था, वह हम आंखों के सामने देख पा रहे हैं। दुनिया जिस प्रकार से भारत के महात्म्य को स्वीकार कर रही है, भारत के सामर्थ्य को स्वीकारने लगी है और इस यात्रा को हमें और शक्ति के साथ आगे बढ़ाना है।

(1735/NK/UB)

माननीय अध्यक्ष जी, चुनाव बहुत दूर नहीं है। कुछ लोगों को थोड़ी घबराहट रहती होगी, लेकिन यह लोकतंत्र का सहज आवश्यक पहलू है। हम सब उसको गर्व से स्वीकार करते हैं। मुझे विश्वास है कि हमारे चुनाव देश की शान बढ़ाने वाले होंगे। लोकतंत्र की हमारी जो परंपरा है, वह पूरे विश्व को अचम्भित करने वाली अवश्य रहेंगी, मेरा पक्का विश्वास है।

आदरणीय अध्यक्ष जी, सभी माननीय सांसदों को जो सहयोग मिला है, जो निर्णय हम कर पाए हैं, कभी-कभी हमले भी इतने मजेदार हुए हैं कि हमारे भीतर की शक्ति भी खिल कर निकली है। मेरे ऊपर परमात्मा की कृपा रही है कि मेरे पास जो चुनौती आती है तो आनंद आता है। हर चुनौती का हम सामना कर पाए हैं, बड़े आत्मविश्वास के साथ हम चले हैं।

आज राम मंदिर को लेकर इस सदन ने जो प्रस्ताव पारित किया है, वह देश की भावी पीढ़ी और देश के मूल्यों पर गर्व करने की संवैधानिक शक्ति देगा। यह सही है कि हर किसी में यह सामर्थ्य नहीं होता है कि ऐसी चीजों में काम करे, कोई हिम्मत दिखाता है, कुछ लोग मैदान छोड़ कर भाग जाते हैं। फिर भी भविष्य के रिकार्ड देखेंगे तो आज व्याख्यान हुए, जो बातें रखी गयीं, उनमें संवेदना भी है, संकल्प भी है, सहानुभूति भी है और सबका साथ, सबका विकास के मंत्र को आगे बढ़ाने का तत्व भी है। इस देश के बुरे दिन कितने ही क्यों न गए हों, हम भावी पीढ़ी के लिए कुछ न कुछ अच्छा करते रहेंगे। यह सदन हमें वह प्रेरणा देता रहेगा। हम सामूहिक संकल्प से, सामूहिक शक्ति से उत्तम से उत्तम परिणाम भारत की नौजवान पीढ़ी की आशा और आकांक्षा के अनुसार करते रहेंगे। इसी विश्वास के साथ एक बार फिर आपका आभार प्रकट करता हूं। सभी माननीय सांसदों का आभार प्रकट करता हूं। बहुत-बहुत धन्यवाद।

(इति)

1738 बजे

**माननीय अध्यक्ष**: माननीय प्रधानमंत्री जी और माननीय सदस्यगण, सत्रहवीं लोक सभा के इस सत्र के साथ इस लोक सभा का आज समापन हो रहा है। सत्रहवीं लोक सभा इसलिए भी विशेष है कि भारत के अमृत काल में हमने संसद के पुराने भवन और नए भवन, दोनों भवनों में अपने संसदीय दायित्वों को निभाया। यह अवसर हमें मिला, यह अवसर भी हमेशा हमारी जिन्दगी में स्मरणीय रहेगा। नए भवन में स्थापित पवित्र सेंगोल न्याय, सुशासन, राष्ट्रीय एकता और राजनीतिक शुचिता का प्रतीक है। हमारे महान लोकतंत्र की इस उच्चतम संस्था के पीठासीन अधिकारी के रूप में आप सबके सकारात्मक सहयोग से मैंने दायित्व निभाया।

माननीय प्रधानमंत्री जी ने अभी हमें बहुत सारी बातें प्रेरणा स्वरूप बतायी। हमारे लिए यह पल ऐतिहासिक पल रहेगा, अद्भुत भी रहेगा। हमारी जिन्दगी भी लोकतंत्र की इस यात्रा के लिए हमेशा स्मृतिपूर्ण वाला काल रहेगा।

(1740/SK/SRG)

इन पांच वर्षों के अंदर जनता का लोकतंत्र के प्रति, लोकतांत्रिक संस्थाओं के प्रति विश्वास बढ़े, इसके लिए सभी माननीय सदस्यों ने अपने क्षेत्र की जनता की आशाओं और आकांक्षाओं को पूरा करने का प्रयास किया। उन्होंने यहां अपने क्षेत्र के मुद्दे भी उठाए, देश के मुद्दे भी उठाए और मैं सरकार को भी धन्यवाद देता हूं कि सरकार ने पहली बार शून्य काल जैसे विषय का सकारात्मक उत्तर देकर एक नई परंपरा स्थापित की।

माननीय सदस्यगण, मुझे 19 जून, 2019 को सर्वसम्मति से सभा का अध्यक्ष चुना गया। इसके लिए मैं माननीय प्रधान मंत्री का और सभी सदस्यों को हार्दिक धन्यवाद देता हूं। मेरे लिए भी ये पांच वर्ष जीवन के लिए महत्वपूर्ण हैं और अविस्मरणीय रहेंगे क्योंकि आपके साथ जो पल मैंने गुजारे हैं, वे मुझे हमेशा प्रेरणा देते रहेंगे।

माननीय सदस्यगण, इस सदन की बड़ी उच्च परंपरा और परिपाटीयां रही है। इस सदन की प्रतिष्ठा भी रही है। मुझ से पूर्व, यहां बैठने वाले पूर्ववर्ती अध्यक्षों ने इस सदन की गरिमा, प्रतिष्ठा और मान-मर्यादा को बढ़ाया है। मैंने भी प्रयास किया है कि सभी दलों के नेताओं के सहयोग से इस पद की गरिमा और इस संस्था की सर्वोच्च प्रतिष्ठा बनी रहे और इसके लिए आपका सहयोग भी रहा, इसके लिए भी मैं आपको धन्यवाद देता हूं।

17वीं लोकसभा का कार्यकाल कई अर्थों में ऐतिहासिक रहा है। सभा के पीठासीन अधिकारी के रूप में जब मुझे दायित्व मिला तो मैंने कोशिश की। मैं सदन में दूसरी बार माननीय सदस्य था, मेरा कोई लंबा अनुभव नहीं था, लेकिन आप सबका सहयोग मिला और पहले सत्र में ही बिना व्यवधान के सदन की प्रोडक्टिविटी भी रही और सभी माननीय सदस्यों ने, विशेष रूप से नए और पुराने 540 सदस्यों ने सत्र के पहले सत्र में ही अपनी भागीदारी निभाई और अपने विचार व्यक्त किए, यह अपने आप में ऐतिहासिक उपलब्धि रहेगी।

माननीय सदस्यगण, नए संसद भवन की आवश्यकता की बहुत दिनों से लोग चर्चा कर रहे थे। पूर्ववर्ती अध्यक्षों ने भी इसके लिए प्रयास किया। मैंने और सदन के सभी सदस्यों ने माननीय

प्रधान मंत्री जी से संसद के नए भवन बनाने का आग्रह किया। माननीय प्रधान मंत्री जी ने हमारे दोनों सदनों के आग्रह को स्वीकार किया और इसके निर्माण की स्वीकृति दी। माननीय प्रधान मंत्री जी के विज़नरी नेतृत्व, उनकी अद्भुत कार्यशैली और हमारे श्रमवीरों, जिन्होंने कोविड के समय अथक प्रयास किए, इसके कारण हमारा नया संसद भवन दो वर्ष पांच महीने की अल्प अवधि में पूरा हुआ।

माननीय सदस्यगण, यह कालखंड हमारे लिए बहुत चुनौतीपूर्ण रहा। विशेष रूप से वैश्विक महामारी कोरोना की चुनौती हमारे सामने थी। हमें हमारे संवैधानिक दायित्वों को निभाना था। देश की जनता सुरक्षित रहे, उनके कल्याण में, उनके सहयोग में, हम अपने संवैधानिक दायित्वों को निभाएं। मैं आज यह कह सकता हूं कि सभी माननीय सदस्यों ने उन चुनौतियों के समय में भी देर रात तक बैठकर संवैधानिक दायित्वों को निभाया और 167 परसेंट प्रोडक्टिविटी रही।

(1745/MK/RCP)

जैसा कि माननीय प्रधान मंत्री जी ने बताया कि कोरोना काल गंभीर था, लेकिन मैं माननीय प्रधान मंत्री जी को धन्यवाद देना चाहता हूं कि उन्होंने देश की जनता की भी चिंता की और अपने एक-एक माननीय सदस्यों की भी चिंता की। जब भी उन्हें जानकारी मिलती थी, वे व्यक्तिगत रूप से टेलीफोन करते थे और उनसे बात हो न हो, लेकिन डॉक्टरों से जरूर चिंता व्यक्त करते थे।

माननीय सदस्यगण, सत्रहवीं लोक सभा का यह सत्र अपनी प्रोडक्टिविटी में भी ऐतिहासिक रहा । पिछली पाँच लोक सभा में, सबसे ज्यादा प्रोडक्टिविटी इस लोक सभा में 97 परसेंट रही। इसमें विशेष रूप से महिलाओं की भागीदारी रही है और सदन में उनकी सक्रिय भागीदारी भी रही। मैं देखता था कि देर रात्रि तक महिलाएं यहां बैठती थीं। हमारी माननीय महिला सदस्य यहां बैठती थीं और अपने विचारों को व्यक्त करती थीं। वे अपने क्षेत्र की जनता की भावनाओं को अभिव्यक्त करती थीं।

माननीय सदस्यगण, यह हमारे लिए गौरव का विषय रहा कि नये संसद भवन के अंदर सर्वप्रथम दिन ही नारी शक्ति वंदन विधेयक, 2023 चर्चा के लिए लाया गया। सभी दलों ने इसमें सहयोग किया और यह विधेयक पारित हुआ। इसके लिए मैं माननीय प्रधान मंत्री जी को भी धन्यवाद देता हूं। यह विधेयक महिला सशक्तिकरण की दिशा में एक अभूतपूर्व उपलब्धि रहेगी। वर्षों तक इन सदनों में महिला आरक्षण विधेयक की प्रतीक्षा हो रही थी। लेकिन, यह सौभाग्य आपको ही मिला। आपके समय में ही यह महिला विधेयक पारित हुआ।

इसके अलावा, इस सदन में बहुत महत्वपूर्ण और ऐतिहासिक विधेयक पारित हुए। हम अंग्रेजों के कानूनों को लेकर चल रहे थे। हमने अपनी आजादी के बाद अपने कानून बनाए। भारतीय न्याय संहिता, भारतीय साक्ष्य बिल, भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता और विशेष रूप से इस सदन ने जम्मू-कश्मीर पुनर्गठन विधेयक भी पारित किया। उसके साथ-साथ डिजिटल पर्सनल डेटा, मुस्लिम महिला विधेयक, उपभोक्ता संरक्षण विधेयक, प्रत्यक्ष कर विधेयक, औद्योगिक संबंधी विधेयक, ऐसे कई ऐतिहासिक कानून पारित किए गए। आपकी जिन्दगी में भी यह स्मरण रहे कि आपने बहुत ऐतिहासिक विधेयक पारित किये, जिनसे एक लंबे समय तक देश की आर्थिक और

समाजिक स्थिति में एक बहुत बड़ा परिवर्तन होगा। यह मौका भी आप सबको, हम सबको मिला है। विगत पांच वर्षों में विशेष रूप से भारतीय चिंतन को और भारतीय चिंतन की व्यवस्था को आगे बढ़ाने के लिए कानून पारित किये गये। इस सभा ने पांच वर्षों में, जो बहुत अनुपयोगी कानून थे, उन कानूनों को रिपील करने का काम भी इसी सभा ने किया। इस सभा ने तीन संविधान संशोधन विधेयक भी पारित किये।

माननीय सदस्यगण, सत्रहवीं लोक सभा का गठन 25 मई, 2019 को किया गया था। इस सदन की पहली बैठक 17 जून, 2019 को हुई थी। सत्रहवीं लोक सभा में कुल मिलाकर 274 बैठकें हुईं, जो 1355 घंटे तक चली। हमने सदन में नियत समय में 346 घंटे की अधिक अवधि में बैठकर कार्य किया। इसी लोक सभा में व्यवधान के कारण 387 घंटे का समय भी व्यर्थ हुआ। इन पांच वर्षों की अवधि में हमने गहन चर्चा और संवाद के बाद 222 कानून पारित किये। इस अवधि के दौरान 202 विधेयक पुर:स्थापित किये गए तथा 11 विधेयकों को सरकार द्वारा वापस लिया गया। सत्रहवीं लोक सभा के दौरान 4,663 तारांकित प्रश्न सूचीगत किये गये, जिनमें से 1,116 प्रश्नों के मौखिक उत्तर दिये गए। इसी अवधि में 55 हजार 879 अतारांकित प्रश्न भी पूछे गए, जिनके लिखित उत्तर सदन में दिए गए।

(1750/SJN/PS)

इसी लोक सभा में दो अवसर ऐसे भी आए, जब सूचीबद्ध सभी 20 प्रश्नों के उत्तर दिए गए।

माननीय सदस्यगण, इस लोक सभा में 729 गैर-सरकारी विधेयक सदन में प्रस्तुत किए गए। 17वीं लोक सभा के दौरान संबंधित मंत्रियों ने 26,750 पत्र सभा पटल पर रखे। इस लोक सभा के दौरान शून्य काल के अंतर्गत 5,568 मामले उठाए गए, जबकि नियम 377 के अंतर्गत माननीय सदस्यों द्वारा 4,869 विषय उठाए गए। दिनांक 18 जुलाई, 2019 को शून्य काल के अंतर्गत 161 विषय उठाए गए और माननीय सदस्यों ने देर रात्रि तक भागीदारी निभाई। 17वीं लोक सभा के पहले सत्र में शून्य काल में 1,066 मामले उठाए गए, जिसका अपने आपमें कीर्तिमान है।

माननीय सदस्यगण, जैसा कि मैंने बताया कि पहली बार नियम 377 और शून्य काल के जवाब यहां पर सही समय पर कार्यपालिका के माध्यम से आए हैं। इसी लोक सभा में चन्द्रयान मिशन की सफलता और अंतरिक्ष के क्षेत्र में देश की उपलब्धियों पर भी चर्चा हुई। सभा द्वारा इस विषय पर संकल्प पारित किया गया। सभा द्वारा 'भारतीय अर्थव्यवस्था और भारत के लोगों के जीवन पर इसके प्रभाव' विषय पर भी नियम 342 के अंतर्गत चर्चा की गई।

माननीय सदस्यगण, इसी सदन में माननीय प्रधानमंत्री जी ने 5 फरवरी, 2020 को श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट की स्थापना की घोषणा की थी। यह देश के लिए गौरव का विषय है कि अब श्रीराम मंदिर का निर्माण कार्य पूरा हो चुका है। इस विषय पर आज सदन में चर्चा हुई। सभी माननीय सदस्यों ने सार्थक रूप से अपने विचार रखे और चर्चा के उपरांत वर्ष 2047 तक एक विकसित और समावेशी भारत के निर्माण का संकल्प भी हमने पारित किया।

माननीय मंत्रियों द्वारा विभिन्न विषयों पर 534 वक्तव्य दिए गए। इस लोक सभा के दौरान नियम 193 के अंतर्गत 12 चर्चाएं भी आयोजित की गईं। संसद की स्थायी समितियों ने इस लोक

सभा में उत्कृष्ट कार्य करते हुए 691 प्रतिवेदन प्रस्तुत किए। संसदीय समितियों की 69 प्रतिशत से अधिक सिफारिशों को सरकार द्वारा स्वीकार किया गया।

माननीय सदस्यगण, माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में जी-20 शिखर सम्मेलन का सफल आयोजन किया गया। इससे भारत की नेतृत्व क्षमता प्रदर्शित हुई और उसके बाद जी-20 देशों तथा उनकी संसदों के अध्यक्ष पी-20 का शिखर सम्मेलन भी आयोजित हुआ। इससे विश्व में हमारा लोकतंत्र, हमारे लोकतंत्र की यात्रा सभी अध्यक्षों ने अनुभव की।

माननीय प्रधानमंत्री जी ने पी-20 सम्मेलन में संबोधित करते हुए हमारे देश की लोकतंत्र की यात्रा का विजन रखा। उन्होंने लोकतंत्र के साथ हमारी चुनाव प्रणाली और किस तरीके से इस देश में एक निष्पक्ष चुनाव प्रणाली है, उन्होंने आग्रह किया कि सभी लोकतांत्रिक देश यहां के लोकतंत्र के इस पर्व, उत्सव को देखने आएं। किसी लोकतांत्रिक देश की तो उतनी आबादी नहीं होगी, उससे ज्यादा हमारे यहां मतदाता मतदान करते हैं। वे भी अपने आपमें एक प्रेरणा है।

माननीय प्रधानमंत्री जी की प्रेरणा से ही पी-20 सम्मेलन में मिशन लाइफ पर्यावरण के लिए जीवनशैली पर भी संसदीय मंच पर चर्चा हुई, जिसमें प्रकृति के साथ सद्भावना में एक हरित भविष्य के लिए संकल्प लिया गया। इस कार्यक्रम में सभी प्रतिभागी देशों ने समर्थन किया और सभी संसदों के अध्यक्षों ने संकल्प लिया कि हम अपने-अपने देशों के अंदर भी इसी तरीके का संकल्प लेंगे, प्रस्ताव करेंगे और चर्चा करेंगे।

(1755/SPS/SMN)

इस लोक सभा में संविधान दिवस कार्यक्रम वर्ष 2019 और 2021 में संसद भवन में आयोजित किया गया। संसद की लोक लेखा समिति (PAC) की स्थापना के 100 वर्ष पूरे होने के अवसर पर केन्द्रीय कक्ष में एक विशेष कार्यक्रम 4 दिसंबर, 2021 को आयोजित किया गया। दिनांक 19 सितंबर, 2023 को संविधान सदन के केन्द्रीय कक्ष में 'संविधान सभा से अब तक 75 वर्षों की संसदीय यात्रा, उपलब्धियां, अनुभव, स्मृतियाँ और सीख' विषय पर एक विशेष चर्चा आयोजित की गई।

मैं विशेष रूप से माननीय प्रधान मंत्री जी के विज़न के कुछ विषय उठाना चाहता हूं। लोक सभा टीवी चैनल और राज्य सभा टीवी चैनल अलग-अलग चलते थे। माननीय प्रधान मंत्री जी के मार्गदर्शन से संसद टीवी एक चैनल हुआ, जिससे करोड़ों रुपये की वित्तीय बचत भी हुई। इसी तरीके से सब्सिडी का विषय हमेशा हम पर उठता रहता था। अब पूर्ण रूप से सब्सिडी समाप्त कर दी गई, जिससे 15 करोड़ रुपये की वार्षिक बचत हुई। मैं आपको एक उदाहरण पेश करना चाहता हूं। संसद भवन में राष्ट्रीय पर्वों पर लाइट पर लाखों रुपये खर्च होते थे। माननीय प्रधान मंत्री जी का विज़न और मार्गदर्शन था और उन्होंने कहा कि यहां एक फसाड लाइट की तरह परमानेंट लाइट लगनी चाहिए। यहां पर फसाड लाइट लगी और कम समय में लगी तथा इस संसद के लाखों करोड़ रुपये की बचत हुई, जो 75वें वर्ष से अभी तक लग रही हैं। इन सभी व्यवस्थाओं से इन पांच वर्षों के अंदर लगभग 875 करोड़ रुपये की बचत की गई, जो बजट का 23 प्रतिशत हिस्सा है।

कोरोना के समय माननीय सांसदों ने पीएम केयर्स फण्ड में अपने फण्ड को दिया और अपनी सांसद निधि को भी छोड़ा। मैं उसके लिए भी सांसदों को धन्यवाद देता हूं। यहां पर इस पूरे परिसर को हरा-भरा बनाने के लिए सभी माननीय सदस्यों ने अपने-अपने नाम का वृक्षारोपण किया, जो हमेशा उनकी जिंदगी में स्मृति रहेगी। वे जब भी आएंगे, अपने पेड़ को बड़ा होते देखेंगे तो याद करेंगे।

माननीय सदस्यगण, सभी विधेयकों पर सार्थक वाद विवाद और चर्चा हुई और सभी ने इन पर ठीक से अपने विचार रखे। हमने कुछ नए प्रयास किए कि विधेयक से पहले माननीय सदस्यों को ब्रीफिंग सेशन के माध्यम से विधेयकों की जानकारी, उद्देश्य और विधेयकों के प्रभाव के बारे में लगातार कार्यक्रम आयोजित किए गए। कई माननीय सदस्यों को जानकारी होगी कि यहां पर किसी भी विधेयक या किसी भी विषय पर माननीय सदस्यों को 24 घण्टे शोध सहायता उपलब्ध रहती है। हमने इसी के साथ-साथ नई व्यवस्था शुरू की कि लाइब्रेरी की सामग्री होम डिलीवरी हो और सारी लाइब्रेरी के डिजिटाइजेशन का काम किया। अभी तक संसद की जितनी भी डिबेट्स हैं, उन सारी डिबेट्स के डिजिटाइजेशन का काम किया गया। मेटा डेटा, सब्जेक्ट, नाम और विषय से आप पूरी डिबेट को देख सकते हैं। यह भी नवाचार इस संसद ने किया। समृद्ध लाइब्रेरी को जनता के लिए सुलभ कर दिया है।

आप सबके प्रयासों के सहयोग से यह सदन पेपरलैस हो चुका है। अभी 97 प्रतिशत से अधिक प्रश्न इलेक्ट्रॉनिक रूप से माननीय सदस्यों के द्वारा लगाए जाते हैं। इसी के साथ संसद के नए भवन में हिन्दी, अंग्रेजी के अलावा दस अन्य भारतीय भाषाओं में भाषांतरण सेवा उपलब्ध कराने का भी प्रयास किया गया है। इसी के साथ-साथ हमने डिजिटल एप, डिजिटल संसद और आप जो अपनी बात कहते हैं, उसको आधे घण्टे में वाट्स ऐप पर आपके मोबाइल पर उपलब्ध कराने का भी प्रयास किया गया है।

(1800/MM/SM)

माननीय सदस्यगण, आवास बहुत पुराने हो गए थे। माननीय प्रधान मंत्री जी ने एक मार्गदर्शन दिया और अभी 112 नये आवास बनकर तैयार हो गए हैं और 184 आवासों का निर्माण कार्य चल रहा है ताकि जब हमारे माननीय सदस्य आएं तो उनको नये आवास मिलें, इसका भी एक प्रयास किया गया।

माननीय सदस्यगण, लोकतंत्र में युवाओं की भागीदारी रहे और हमारी आने वाली पीढ़ी हमारे देश की आजादी, आजादी के बाद जिन नेताओं का योगदान रहा, उनके बारे में जानें, उनके जीवन के बारे में जानें, इसके लिए माननीय प्रधान मंत्री जी के मार्गदर्शन में एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। हर महान विभूति और स्वतंत्रता सेनानी की जयंती पर कार्यक्रम आयोजित किया जाता है। संविधान सदन में देश भर के अलग-अलग राज्यों के लोग अपने-अपने राज्यों में पहले उन महापुरुषों पर चर्चा करते हैं और जब उसमें उत्तीर्ण होते हैं, तब वे संसद भवन में आकर अपनी बात को रखते हैं, ताकि हमारी आने वाली पीढ़ी हमारे महापुरुषों के बारे में जानें। उनके राष्ट्र और देश के प्रति कर्तव्य के बारे में जाने ताकि उन्हें भी नई प्रेरणा मिले।

माननीय सदस्यगण, लोक सभा का पीठासीन अधिकारी होने के नाते छह पीठासीन अधिकारियों के सम्मेलन हुए और हमने प्रयास किया कि देश की सभी लोकतांत्रिक संस्थाओं में चाहे विधान सभा हो या लोक सभा हो, उनमें शब्दों की प्रतिष्ठा बने, गरिमा बने और हमारे सदस्यों का आचरण, व्यवहार ऐसा हो, ताकि लोगों का लोकतंत्र में और लोकतांत्रिक संस्थाओं में ज्यादा विश्वास और भरोसा बढ़े। इसके लिए सबने एक मत से इस बात पर विचार किया कि सदन की गरिमा और प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए हम सभी सदस्यों को इस तरह का व्यवहार करना चाहिए कि जनता का विश्वास हमारी संस्थाओं पर ज्यादा बने और हम ज्यादा मर्यादित तरीके से संस्थाओं के माध्यम से लोगों का कल्याण कर सकें। माननीय प्रधान मंत्री जी ने एक नया विजनरी मार्गदर्शन उस समय दिया - 'वन नेशन, वन लेजिस्लेशन प्लेटफार्म।' आज हम यह कह सकते हैं कि पूरे देश की विधान सभाओं की जो भी डिबेट, चर्चा, बजट और लोक सभा तथा राज्य सभा की जितनी भी कार्यवाहियां हैं, आने वाले समय में एक प्लेटफार्म पर आप देख पाएंगे, यह भी एक नया प्रयास किया गया है।

माननीय सदस्यगण, इस लोक सभा के दौरान भारत में 16 देशों के संसदीय शिष्ट मंडल का आना हुआ और 42 शिष्ट मंडल भारत से अन्य कई देशों की यात्रा पर गए। इससे अंतरराष्ट्रीय मंचों पर हमारी भागीदारी बढ़ी है। अंतरराष्ट्रीय मंचों पर कई संस्थाओं के अंदर हमारी भागीदारी भी बढ़ी है और माननीय सदस्यगण कई कमेटियों में सदस्य के रूप में निर्वाचित भी हुए और मनोनीत भी हुए। इससे वैश्विक स्तर पर भारत की शक्ति और प्रतिष्ठा बढ़ी है।

माननीय सदस्यगण, आप सबका मुझे बहुत सहयोग मिला, सकारात्मक सहयोग मिला। माननीय प्रधान मंत्री जी का मिला। सभी दल के नेताओं का मिला और मैंने कोशिश की कि इस सदन की गरिमा और प्रतिष्ठा बनी रहे। सदन की गरिमा और प्रतिष्ठा को बनाने में मुझे कुछ कठोर निर्णय भी करने पड़े। लेकिन कठोर निर्णय करते समय मैं कभी इस मत का नहीं था कि मुझे किसी सदस्य पर कार्रवाई करनी पड़े। भविष्य में हम नये सदन के साथ इस सदन की गरिमा और प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए और प्रयास करेंगे। हमारी प्रोडक्टिविटी 97 प्रतिशत नहीं, बल्कि हमारी प्रोडक्टिविटी हमेशा सौ प्रतिशत से ऊपर हो। हमारा आचरण और व्यवहार सही हो। असहमति और सहमति हमारे लोकतंत्र की ताकत है। यह होना भी चाहिए। अलग-अलग विचार वाले दलों से लोग चुनकर आते हैं, लेकिन सदन की गरिमा बनी रहे, यह हमारी सामूहिक जिम्मेदारी भी है और मैं आशा करता हूं कि आने वाले समय में हम इसके लिए प्रयास करेंगे।

(1805/YSH/RP)

यहां पर सभी सदस्य अलग-अलग दलों से, अलग-अलग विचारधारा से तथा अलग-अलग क्षेत्रों से आते हैं, लेकिन इन पांच सालों में मुझे सब एक परिवार जैसे लगे। मुझे एक ऐसा परिवार लगा, जो हमेशा मेरे जीवन में अविस्मरणीय रहेगा। मेरे सभी सदस्यों से एक परिवार जैसे संबंध रहे। मुझे आत्मिक भाव मिला। न पक्ष, न विपक्ष, सब मेरे लिए सदस्य हैं। मैंने सभी सदस्यों का मान-सम्मान बनाने का प्रयास किया है। मुझे कुछ कटुता के निर्णय भी लेने पड़े, लेकिन वे सदन की गरिमा और सदन की प्रतिष्ठा के लिए लेने पड़े।

आज जब हम लोक सभा की समाप्ति पर जा रहे हैं तो हम अपने-अपने लोक सभा क्षेत्र में जाएंगे और हमने अपने सार्वजनिक जीवन में संसद के अंदर जिन अनुभवों को प्राप्त किया है, भारत के लोकतंत्र की समृद्धि और प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए जो सहयोग किया है, उसकी जानकारी हम जनता को देंगे। इसके अलावा हमने जो मुद्दे उठाए, उन मुद्दों को किस सकारात्मक रूप से सरकार ने लिया और किस सकारात्मक रूप से उन मुद्दों का हल निकाला, उसके लिए मैं सरकार को विशेष रूप से धन्यवाद देता हूँ।

मैं माननीय उपराष्ट्रपति जी को धन्यवाद देता हूँ, जिनका मुझे हमेशा सकारात्मक सहयोग मिलता रहा है। मैं माननीय प्रधान मंत्री जी को विशेष रूप से धन्यवाद देता हूँ, जिनका मुझे हमेशा मार्गदर्शन मिलता रहा और उन्होंने हमेशा एक कोशिश की कि सदन की गरिमा और प्रतिष्ठा बनी रहे। लोकतंत्र के अंदर भारत की जो प्रतिष्ठा है, वह दुनिया के लिए मार्गदर्शन है और उन्होंने हमेशा यही मार्गदर्शन किया कि संसद की प्रतिष्ठा बनी रहनी चाहिए, मर्यादा बनी रहनी चाहिए। व्यक्ति आएंगे, चले जाएंगे, लेकिन सदन और सदन की पीठ की मर्यादा बनाने के लिए उनका मार्गदर्शन मुझे हमेशा मिलता रहा, इसके लिए मैं प्रधान मंत्री जी को धन्यवाद देता हूँ।

मैं सभी चेयरपर्सन्स को बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने यहां पर बहुत देर तक बैठकर सदन की कार्यवाही को चलाया। मैं संसदीय कार्य मंत्री, संसदीय राज्य मंत्री, मंत्री परिषद् के सभी माननीय सदस्यों को भी धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने सदन चलाने में सकारात्मक सहयोग दिया।

मैं प्रेस और मीडिया के मित्रों को भी धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने सदन की बात को जनता तक पहुंचाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। मैं सभा को प्रदान की गई समर्पित त्वरित सेवा के लिए हमारे ऊर्जावान लोक सभा के महासचिव, अधिकारियों और कर्मचारियों की भी सराहना करता हूँ, जिन्होंने देर रात्रि तक बैठकर सदन के संचालन में सहयोग किया।

मैं परिसर में हमारे सिक्योरिटी से लेकर तमाम लोगों को, छोटे से छोटे श्रमवीरों को, जो देर रात्रि तक यहां पर रुकते थे और हमारे माननीय सदस्यों का सहयोग करते थे, उन सबका भी मैं आभार व्यक्त करता हूँ। मैं सभा की कार्यवाही के संचालन में समस्त एजेंसियों को, उनके द्वारा प्रदान की गई सेवाओं के लिए भी धन्यवाद देता हूँ।

अलग-अलग दल के नेताओं ने इस संसदीय पीठ के लिए और मेरे लिए जो विचार व्यक्त किए हैं, इसके लिए भी मैं आपको धन्यवाद देता हूँ। मुझे आशा है कि हम सबका भावी जीवन समृद्ध हो, स्वस्थ रहे, कुशल रहे और हम इसी तरीके से लोकतंत्र के मूल्यों का संवर्द्धन करने में अपना जीवन समर्पित करें और हमने यहां पर जो अनुभव प्राप्त किया है, उस अनुभव का लाभ देश की जनता को मिले। हमारे प्रयासों से हम समाज के अंतिम व्यक्ति के जीवन को बदलने के लिए हमारी जिंदगी को लगातार इसी तरीके से समर्पित करते रहे और सेवा देते रहे।

मैं आप सबको पुन: बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूँ। अब मैं वंदे मातरम् के लिए आग्रह करता हूँ।

(इति)

(राष्ट्रीय गीत की धुन बजाई गई)

(1810/RAJ/NKL)

**माननीय अध्यक्ष :** सभा की कार्यवाही अनिश्चित काल के लिए स्थगित की जाती है।

1810 बजे

तत्पश्चात् लोक सभा अनिश्चित काल के लिए स्थगित हुई।